HINDI BENGALI SHIKSHA.

(Second Part)

By

PANDIT HARIDASS,

AN EXPERIENCED TEACHER,

Formerly Head Master T. A. V. School, Pokaran (JODHPUR)

AND AUTHOR OF

Swasthya Raksha, Angrezi Shiksha Series, Aqlamandi-ka-Khazana, Kalgyan & Translator of Gulistan, Bhagavada Gita, Rajsingh or Chanchal Kumari etc.

SECOND EDITION.

1916.

Printed by BABU RAMPRATAP BHARGAVA,

at the "Narsingh Press"

201, Harrison Road,

CALCUTTA.

दूसरी बार १०००] [मूल्य ॥)

NOTICE.

Registered under Section XVIII of act XXV of 1867.

आवश्यक सूचना ।

इस किताबकी रजिष्ट्री सन् १८६७ के ऐक्ट २५ सैक्शन १८ के मुताबिक़ सरकारमें हो गई है। कोई शख्स इसके फिरसे छापने, छपवाने या इसको उलट पुलटकर काम निकालनेका अधिकारी नहीं है। यदि, कोई शख्स लोभ के वशीभूत होकर, ऐसा काम करेगा तो राज-दण्डसे दण्डित होगा।

हमारा वक्तव्य ।

जिस जगदाधारकी असीम कृपासे संसारके सम्पूर्ण कार्य सुचारु रूपसे सम्पन्न होते हैं; उसी जगन्नायककी विशेष अनुकम्पा तथा साहित्यसेवी, उदारहृदय और विद्याव्यसनी ग्राहकोंकी अशेष कृपाका यह फल है कि आज हम "हिन्दी-बँगला शिक्षा" का यह दूसरा भाग लेकर सर्वसाधारणके सम्मुख उपस्थित हो सके हैं। इसके प्रथम भागकी हिन्दी-सेवियोंने जैसी कदर की, उसीसे मालूम होता है कि हमारी थोड़ी सी तुच्छ सेवाने कुछ विशेष फल दिखाया है और यही एक प्रधान कारण है कि हमारे हृदयमें वसन्तागमनके समान यह दूसरा भाग भी लिखकर ग्राहकोंकी सेवामें अर्पण करनेका विशेष उत्साह और अवसर प्राप्त हुआ।

यद्यपि हमारी "बँगला-शिक्षा" के प्रथम भागने बँगला सीखनेमें बहुत कुछ सहायता प्रदान की है; यद्यपि अधिकांश नाम, शब्द, वाक्य और मुहावरोंका उसीसे पता मिल जाता है; यद्यपि बँगला सरीखे अथाह रत्नभाण्डारका आनन्द उपभोग करनेकी शक्ति उसी प्रथम भागसे हो आ जाती है; तथापि व्याकरणसे अमूल्य विषयका, जो भाषाको शुद्ध करनेका एक मात्र ही अस्त्र है, भीषण अभाव रह जाता है। बिना व्याकरण जाने किसी भाषाको पढ़ लेनेकी शक्ति

आ जाने पर भी उसी भाषाको शुद्ध बोलने, लिखने और उस भाषाका पण्डित होनेमें एक बड़ा ही विषम घाटा रह जाता है ; जिससे मनुष्य न उस भाषाका लेखक ही हो सकता है और न वक्ता हो। यही एक प्रधान तुटि दूर करनेके लिये, ग्राहकोंसे उपरोक्त अथाह उत्साह मिलता हुआ देखकर, मुझे इस 'हिन्दी बँगला शिक्षा का' यह दूसरा भाग भी लिखना ही पड़ा।

इस भागमें व्याकरणका आरम्भ करके जो कुछ विषय बँगला सीखने वालोंके लिये उपयोगी दिखाई दिये, लगभग सभी लिख दिये गये हैं। व्याकरणसे कड़े चनेको समझाकर मुलायम कर देनेका बहुत कुछ उद्योग भी कर दिया गया है और साथ ही बँगलाके वे घराऊ शब्द जो प्रचलित भाषा में कम आते हैं इसलिये अधिक करके दे दिये गये हैं, जिससे बोलचालमें, वक्तृता देते समय अथवा लेख लिखते समय भद्दापन न आ जाय। यह भाग कैसा हुआ, हम अपनी मनोभिलाषा पूरी कर सके या नहीं, अथवा इससे कुछ लाभ होगा या नहीं, यह सरलहृदय समालोचक और साहित्यसेवी तथा बँगला सीखनेवाले हमारे ग्राहकगण ही जानें।

प्रेमी ग्राहकगण और उदारहृदय समालोचकोंके लिये एक बात और भी कहनी है:—लोभ मनमें आते ही मनुष्य भले बुरेका ज्ञान छोड़, असत्पथपर चलनेके लिये तय्यार हो जाते हैं। ठीक यही दशा 'अँगरेज़ी हिन्दी शिक्षा' और

'हिन्दी बँगला शिक्षा' के सम्बन्धमें भी हो रही है। हमारी सफलता, सम्पादकोंकी विशेष कृपा, ग्राहकों और अँगरेज़ी बँगला सीखनेवालोंकी विशेष क़दरदानीने एक विषम हलचल मचा दी है। हम नहीं जानते—साहित्यसेवी कहलाकर, बहुत दिनोंतक हिन्दी-माताकी सेवा भी करनेपर, हिन्दीके विद्वानों और सुलेखकोंमें अपनी गणना कराकर तथा ऊँची गद्दीपर बैठकर भी केवल अपने उदरपालनार्थ ऐसे काम करनेके लिये लोग क्यों तय्यार हो जाते हैं जिनसे केवल उनकी नेकनामी, कीर्त्ति और विद्वत्तामें ही बट्टा नहीं लगता बल्कि ख़ास उस साहित्यमाताका भी अपकार होता है जिसके भरोसे उनका उदरपोषण होता है। हम जानते हैं कि उनकी गणना अच्छोंमें है—परन्तु दुःखकीबात है कि जिस कार्यमें ऐसे लोगोंने अब हाथ डाला है, उसमें उनका अनुभव नहीं है, उतनी विद्वत्ता भी नहीं है और न उस शैलीसे ही वे परिचित हैं जिसकी ऐसी ग्रन्थ-रचनामें विशेष आवश्यकता है। फिर ऐसे कार्य करके, हंस कहलानेका वृथा दावा कर साहित्य-माताका अपकार करना क्या उचित है? क्या एकबार साहित्यसेवी होकर फिर साहित्यकी जड़ काटनी उन्हें उचित है? चाहे जो हो, चाहे केवल उदर-पालनके लिये ही वे ऐसे कार्य क्यों न करते हों; पर हमारी तुच्छ बुद्धिमें योग्य कहलाकर—अयोग्यताका परिचय कदापि न देना चाहिये। कीर्त्तिको स्थायी रखना ही मनुष्यत्व और

बुद्धिमत्ता है; न कि थोड़े से लोभमें अपनी कीर्त्ति को जलाञ्जलि देना ही कर्त्तव्य है। दुःख का विषय है कि—नकल के भरोसे पर, परन्तु क़ानूनी झगड़ों से बचते हुए, ऐसा काम भी ऐसेही साहित्य सेवियोंने करना आरम्भ किया है; जिससे हृदयमें दुःख और क्षोभ होता है। साहित्यकी उन्नति, देशमें विद्याका प्रचार तथा भारत-वासियोंका उपकार न होकर साहित्यकी अवनति, विद्या के प्रचारमें बाधा और भारत के नवजीवनोंका अपकार होना सम्भव दिखाई देता है तथा ग्राहक ठगे जाते हैं। एक तो हिन्दीके ग्रन्थोंकी क्या दशा है; यह सभोंको मालूम ही है। फिर जिनकी शिक्षाकी ओर रुचि हुई, उनकी रुचि बिगाड़कर हिन्दी-ग्रन्थ-प्रसारमें बाधा डालना कदापि उचित नहीं है ऐसा करनेसे सर्वसाधारणको शिक्षासे अरुचि हो सकती है बस, यही कारण है कि सावधान करनेके लिये इतना लिखना पड़ा—बात क्या है, हम नहीं लिख सकते; साहित्यकी बिना कारण अवनति होती देख दुःख हुआ; इससे इतना भी लिख दिया—हमारी बातें सत्य हैं या नहीं, निष्पक्ष और उदार-हृदय समालोचकगण ग्रन्थ हाथमें ले ध्यानसे पढ़कर तुलना करते हुए स्वयं विचार लें।

भवदीय—

हरिदास।

हिन्दी-बँगला शिक्षा ।

दूसरा भाग ।

प्रथम खण्ड ।

बँगला व्याकरण ।

जिस पुस्तकके पढ़नेसे बँगला भाषाका ठीक ठीक लिखना और बोलना आता है, उसका नाम "बँगला व्याकरण" है ।

वर्ण-ज्ञान ।

१ । पदके प्रत्येक छोटेसे छोटे टुकड़े या भागको वर्ण या अक्षर कहते हैं ।

"রবি পড়িতেছে" । यहाँ "রবি" और "পড়িতেছে" ये दो

पद मिलकर एक वाक्य बना है। इसमें "হরি" इस पदमें হ, রি ये दो छोटे टुकड़े या भाग हैं और হ+অ, র+ই ये चार छोटेसे छोटे (यानी जिनसे छोटा टुकड़ा नहीं हो सकता ऐसे) टुकड़े या भाग हैं। इसीसे इन चारों में से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं। इसी तरह "পড়িতেছে" इस पदमें প, ড়ি, তে, ছে ये चार छोटे भाग और প+অ, ড়+ই, ত+এ, ছ+এ ये आठ छोटेसे छोटे भाग हैं; इसलिये इनमें से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं।

२। बँगला भाषामें सब लेकर उन्चास वर्ण या अक्षर हैं। उन्हीं अक्षरोंके समुदाय को वर्णमाला कहते हैं।

३। वर्ण दो भागोंमें बँटे हैं:—स्वर और व्यञ्जन। उनमें १२ स्वर और ३६ व्यञ्जन वर्ण हैं।

स्वर वर्ण।

४। जो वर्ण बिना किसी दूसरे वर्णकी सहायता लिये ही (अपने आप) उच्चारित होते हैं, उनका नाम स्वरवर्ण है। स्वर वर्ण ये हैं,—অ, আ, ই, ঈ, উ, ঊ, ঋ, ৯, এ, ঐ, ও, ঔ। *

---

* ঋ का प्रायः व्यवहार नहीं होता। केवल কৢ, তৢ, দৢ इत्यादि कुछ थोड़ीसी धातुओंके लिखनेमें उनकी ज़रूरत होती है, इसीसे कोई कोई लोग, ঋ को छोड़कर, स्वर वर्णकी संख्या बारह ही मानते हैं। बँगला भाषामें दीर्घ ঋ नहीं है, किन्तु संस्कृत भाषामें उसका चलन है।

इन्हीं तीन वर्णों के रूपान्तर हैं। ये वर्ण जब पदके बीचमें या अन्तमें रहते हैं तब ये हो ड़, ঢ়, য়, माने जाते हैं। जैसे—জড়, দৃঢ়, নয়ন इत्यादि।

जिस व्यञ्जन वर्णमें कोई स्वर नहीं रहता, उसके नीचे (্) ऐसा चिन्ह देना पड़ता है; इस चिन्ह या निशानका नाम 'हसन्त चिन्ह' है *। जैसे—সম্রাট্ इत्यादि।

७। क से म तक, पचीस वर्णों को स्पर्शवर्ण कहते हैं। स्पर्श वर्ण पाँच वर्गों में विभक्त हैं; आदि के या पहले वर्णको लेकर वर्गका नाम होता है। जैसे—ক वर्ग, চ वर्ग, ট वर्ग, ত वर्ग, প वर्ग।

८। য, র, ল, ব, इन चारोंका नाम अन्तःस्थ वर्ण है,

---

* व्यञ्जन वर्णके वाद, स्वर वर्ण रहनेसे वह स्वर वर्ण व्यञ्जन वर्णमें मिल जाता है। जैसे—জল = জ্ + অ + ল্ + অ। দিন = দ্ + ই + ন্ + অ। বালিকা = ব্ + আ + ল্ + ই + ক্ + আ। চন্দ্র = চ্ + অ + ন্ + দ্ + র্ + অ।

हर एक पदमें दो या उससे अधिक वर्ण रहते हैं; इसी प्रकार वर्ण-विन्यास द्वारा यह साफ़ साफ़ मालूम हो जाता है कि कौन वर्ण पहिले और कौन वर्ण पीछे है।

= इसका नाम समान चिन्ह है। + इसका नाम युक्त चिन्ह है अर्थात् इसके द्वारा दो वर्णों का योग या जोड़ समझा जाता है।

শ, ষ, স, হ, इन चारों का नाम उष्म वर्ण है; (ং) और (ঁ) का नाम अनुनासिक वर्ण है और (ঃ) विसर्गका नाम अयोगवाह वर्ण है।*

८। उच्चारण-स्थानके भेदोंसे वर्णोंके नामोंमें भी भेद होता है। जैसे—

অ আ হ ক খ গ ঘ ঙ इनका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; इसलिये इन्हें कण्ठ्य वर्ण कहते हैं।

ই ঈ চ ছ জ ঝ ঞ শ য় इनका उच्चारण-स्थान तालू है; इसलिये इन्हें तालव्य वर्ण कहते हैं।†

ঋ ৠ ট ঠ ড ঢ ণ র ষ ড় ঢ় इनका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है; इसलिये इन्हें मूर्द्धन्य वर्ण कहते हैं।‡

ঌ ত থ দ ধ ন ল স इनका उच्चारण-स्थान दन्त है; इसलिये इन्हें दन्त्यवर्ण कहते हैं।

উ ঊ প ফ ব ভ ম इनका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है; इसीसे इन्हें ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं।

---

* कोई कोई अनुस्वार और विसर्ग इन दोनोंको ही अयोगवाह कहते हैं।

† য়, यह वर्ण पदके बीचमें या अन्तमें लगाया जाता है। जैसे; অয়ন, শয়ন, জয়।

‡ ড় और ঢ় इन दोनों वर्णोंका प्रयोग भी पदके बीचमें या अन्तमें होता है। जैसे—ঝাড়, জড়তা, মূঢ়, দৃঢ়তা।

ए ऐ, इन दो वर्णों का उच्चारण-स्थान कण्ठ और तालू है; इसलिये ये कण्ठ्य-तालव्य वर्ण हैं।

ओ औ इन दो वर्णों का उच्चारण-स्थान कण्ठ और ओष्ठ है; इसवास्ते ये कण्ठ्योष्ठ वर्ण हैं।

अन्तःस्थ 'व' का उच्चारण-स्थान दन्त और ओष्ठ है; इस लिये यह दन्त्योष्ठ वर्ण है।

अनुस्वार और चन्द्रविन्दु नाकसे उच्चारित होते हैं; इस लिये ये अनुनासिक वर्ण हैं।

विसर्ग 'आश्रय स्थान' भागी है, अर्थात् जब जिस स्वरवर्ण के बाद रहता है, तब उसी स्वर वर्णका उच्चारण-स्थान विसर्गका उच्चारण-स्थान होता है। विसर्गका उच्चारण स्वर वर्णके बिना, 'ह' के उच्चारणकी तरह होता है। जैसे पुनः = पुनह्।

विसर्ग जिस स्वर वर्णके बाद होता है वह दीर्घकी तरह उच्चारित होता है। जैसे—प्रातःकाल।

संयुक्त वर्ण।

१०। यदि एक व्यञ्जन वर्णके बाद एक या उससे ज़ियादा व्यञ्जन वर्ण हों और बीचमें स्वर वर्ण न हो, तो वे सब व्यञ्जन वर्ण एक साथ मिल जाते हैं। इस तरह मिलकर, व्यञ्जन वर्ण जो रूप धारण करते हैं उसको युक्ताक्षर कहते हैं।

संयुक्त या मिले हुए वर्णके पहलेका वर्ण (पूर्व्व वर्ण) ऊपर और पीछेका वर्ण (परवर्ण) प्रायः नीचे लिखा जाता है। जैसे —ব্+দ্=ব্দ; প্+ন্=প্ন; ন্+দ্+র্=ন্দ্র।

थोड़ेसे संयुक्त वर्णोंका रूप बदल जाता है। वे नीचे दिखाये गये हैं। जैसे—ঙ+গ=ঙ্গ, জ+ঞ=জ্ঞ, ক্+ষ=ক্ষ, চ+ঞ=ঞ্চ, দ+ধ=দ্ধ, ত+র=ত্র, ক+ত=ক্ত, ষ+ণ=ষ্ণ, হ+ন=হ্ন, ন্+থ=ন্থ, হ+ম=হ্ম, ত্+ত=ত্ত, প+র=প্র, গ+র=গ্র इत्यादि।

র্ किसी व्यञ्जन वर्णके पहिले रहनेसे, बादके वर्णके माथे पर जाकर (´) ऐसा आकार धारण करता है। इसका नाम रेफ है। रेफ युक्त कोई कोई वर्णका द्वित्व हो जाता है अर्थात् वे वर्ण दो हो जाते हैं। जैसे—র+দ=র্দ্দ। और आর্ত্ত, চর্চ্চা, নির্জ্জর इत्यादि।

'ছ' द्वित्व होनेसे 'চ্ছ', 'থ' द्वित्व होनेसे 'ত্থ', 'ধ' द्वित्व होनेसे 'দ্ধ', और ভ द्वित्व होनेसे 'ব্ভ', ऐसा रूप धारण करता है। ম, র और ন युक्त होनेसे 'শ' कार और 'স' कार का उच्चारण 'ছ' कार के समान होता है; जैसे—শ্রাদ্ধ, স্পষ্ট, স্নান इत्यादि। 'স' कारके साथ 'ত' या থ युक्त होनेसे वह 'স' कार 'চ' कार की तरह उच्चारित होता है। जैसे—প্রস্তাব, অবস্থিতি। जब 'হ' के नीचे कोई वर्ण लगता है तब वह 'হ' नीचेवाले वर्णके बाद उच्चारित होता है; जैसे আহ্লাদ =আল্+হাদ, মধ্যাহ্ন=মধ্যান্+হ, সহ্য=সয্+হ इत्यादि।

जब 'য' किसी वर्ण में संयुक्त होता है तो उसका उच्चारण 'इअ' और अन्तःस्थ 'ব' किसी वर्ण में युक्त होनेसे उच्चारण 'উঅ' ऐसा होता है; जैसे—দিব্য=দিব্+ইঅ, বিল্ব= বিল্+উঅ इत्यादि।

सन्धि प्रकरण।

११। दो वर्ण पास पास होनेसे आपसमें एक दूसरेसे मिल जाते हैं, उस मिलनको सन्धि कहते हैं।

१२। सन्धि दो प्रकार की है;—स्वर सन्धि और व्यञ्जन सन्धि।

१३। एक स्वर वर्ण के साथ दूसरे स्वर वर्ण के मिलनको स्वर-सन्धि कहते हैं।

१४। व्यञ्जन वर्ण के साथ व्यञ्जन वर्ण या व्यञ्जनवर्ण के साथ स्वरवर्ण के मिलनको व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं।

स्वर-सन्धि।

१५। অ के बाद অ या আ रहनेसे, और दोनोंके मिलनेसे আ होता है और वह আ पूर्व्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे শীত+অংশু=শীতাংশু। यहाँपर शीत शब्द के अन्तमें অ है और पीछे অংশু शब्दका অ है; इसलिये उन दोनोंके मिलनसे आकार हुआ और वह आकार तकार में मिलकर "शीतांशु"

पद हुआ। इसी तरह পীত + অম্বর = পীতাম্বর, কুশ + আসন = কুশাসন।

१६। আ के बाद অ अथवा আ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे আ होता है, और वह আ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—বিদ্যা + অভ্যাস = বিদ্যাভ্যাস। यहाँपर विद्या शब्द के अन्तमें आ है और उस आ के बाद अभ्यास शब्दका अ है ; इसलिये आ में अ मिलकर आ हुआ और वह आ पूर्व-वर्ण 'द्य' में मिलकर "विद्याभ्यास" पद हुआ। उसी तरह তারা + আকার = তারাকার, মহা + আশয় = মহাশয় इत्यादि।

१७। ই के बाद ই या ঈ रहने से, और दोनोंके मिलनेसे ঈ होती है, वह ঈ पूर्व वर्ण में मिल जाती है। जैसे—অতি + ইত = অতীত। यहाँ पर अति के इकार के बाद इत शब्द का इकार है ; इसलिये दोनों इकारों के मिलनेसे ईकार हुआ और वही ईकार पूर्व वर्ण तकार में मिलकर "अतीत" पद हुआ। इसीतरह গিরি + ইন্দ্র = গিরীন্দ্র, গিরি + ঈশ = গিরীশ इत्यादि।

१८। ঈ के बाद ই या ঈ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ঈ होती है वह ঈ पूर्व वर्ण में मिल जाती है। जैसे—অতী + ইব = অতীব। यहाँपर ईकार के बाद इ है ; इसलिये दोनों के मिलनेसे ईकार हुआ और वही ईकार पूर्व वर्ण तकार में मिल गया ; जिससे अती + इव = अतीव के हुआ : इसी तरह পৃথ্বী + ঈশ্বর = পৃথ্বীশ্বর, काली + ঈश = कालीश इत्यादि।

१९। উ के बाद উ या ঊ रहनेसे और दोनों के मिलनेसे ঊ होता है, यह ঊ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—বিধু + উদয় = বিধূদয়। इसी तरह সাধু + উক্তি = সাধূক্তি। তনু + ঊর্দ্ধ = তনূর্দ্ধ। বিধু + উদয় = বিধূদয়। यहांपर विधु शब्दके ह्रस्वके बाद उदयका उ है; इसलिये ह्रस्व उ के बाद ह्रस्व उ रहनेकेकारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ। अब इसी दीर्घऊके पूर्ववर्ण ध में मिलनेसे विधूदय पद बन गया। সাধূক্তি—সাধু + উক্তি = সাধূক্তি। यहां पर साधु इस शब्दके ह्रस्व उकारके बाद उक्ति शब्दका ह्रस्व उ है; इसीसे ह्रस्व उकार के बाद ह्रस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह ऊ पूर्व वर्ण ध कारमें मिलकर "साधूक्ति" पद बना। তনূর্দ্ধ—তনু + ঊর্দ্ধ = তনূর্দ্ধ। यहां पर तनु शब्दके ह्रस्व उकारके बाद ऊर्द्ध शब्दका दीर्घ ऊ है; इसलिये ह्रस्व उकारके बाद दीर्घ ऊ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह दीर्घ ऊ पूर्व वर्ण न में मिलकर "तनूर्द्ध" पद बना।

२०। ঊ के बाद উ याঊ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ঊहोता है,और ঊ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे—তনূ + উদ্বেগ = তনূদ্বেগ। यहां पर तनूके ऊ के बाद उद्वेग का उ रहनेसे और दोनोंके मिल जानेसे ऊ होगया और पूर्व वर्ण न में युक्त हुआ। इसी तरह ভূ + ঊর্দ্ধ = ভূর্দ্ধ इत्यादि।

२१। অ या আ के बाद ই या ঈ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे এ होजाता है; और এ पूर्व वर्ण में मिलजाताहै। जैसे,—নগ + ইন্দ্র

= নগেন্দ্র, মত্ত + ইভ = মত্তেভ, রমা + ইশ = রমেশ, ধন + ঈশ্বর = ধনেশ্বর, উমা + ঈশ = উমেশ। नग + इन्द्र = नगेन्द्र ;—यहाँ पर नग शब्दके अ के बाद इन्द्रको इ है ; इसलिये अ के बाद इ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ और वह ए पूर्व वर्ण में मिलकर नगेन्द्र पद बना है। धन + ईश्वर = धनेश्वर ;—यहाँ पर अ के बाद ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है। रमा + ईश = रमेश ; यहाँ पर आ के बाद दीर्घ ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है।

२२। অ या আ के बाद উ या ঊ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ও होता है, और वह ও पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे ;—সূর্য্য + উদয় = সূর্য্যোদয়, নল + উদয় = নলোদয়, তরঙ্গ + ঊর্ম্মি = তরঙ্গোর্ম্মি, মহা + উদধি = মহোদধি, গঙ্গা + ঊর্ম্মি গঙ্গোর্ম্মি। सूर्य्य + उदय = सूर्योदय ;—यहाँ पर अकारके बाद ह्रस्व उ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ और ओकार पूर्ववर्णमें मिलकर सूर्योदय पद बना। महा + उदधि = महोदधि ;—यहाँपर आकारके बाद उकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ है। इसी तरह नलोदय, तरङ्गोर्म्मि, गङ्गोर्म्मि हैं।

२३। অ या আ के बाद ঋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे অর্ होता है। অর্ का অ पूर्व वर्ण में मिल जाता है और র্ पर वर्णके माथेपर चला जाता है। अर्थात् रेफ् हो जाता है, जैसे,—দেব + ঋষি = দেবর্ষি, উত্তম + ঋণ = উত্তমর্ণ, অধম +

ঋণ = অধমর্ণ, মহা + ঋষি = মহর্ষি। देव + ऋषि = देवर्षि;—
यहाँ पर अकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर्
हुआ; अकार पूर्व वर्णमें मिल गया और र् के पर वर्ण ष के
माथेपर चले जानेसे "देवर्षि" पद बना। महा + ऋषि = महर्षि;
यहाँ पर आकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर्
हुआ है। आकार पूर्व वर्णमें मिल गया और र् पर वर्णके माथेपर
चला गया है। इसी तरह उत्तमर्ण, अधमर्ण भी बने हैं।

२४। तृतीया तत्पुरुष समासमें অ या আ के बाद
ঋত शब्द रहनेसे पूर्ववर्त्ती অ या আ के साथ मिलकर ঋত
शब्द का আর্ होजाता है আর্ का আ पूर्ववर्णमें मिल जाता है
और র্ पर वर्णके मस्तक पर चला जाता है अर्थात् रेफ
हो जाता है। जैसे,—শোক + ঋত = শোকার্ত, তৃষ্ণা +
ঋত = তৃষ্ণার্ত। * शोक + ऋत = शोकार्त्त;—यहाँ पर शोक
शब्दके अ के बाद ऋत शब्दका ऋकार रहनेसे और दोनोंके
मिलनेसे आर् हुआ; आ पूर्व वर्ण क में मिल गया और र पर
वर्ण तकारमें जाकर "शोकार्त्त" पद बना।

२५। অ या আ के बाद এ या ঐ रहनेसे और दोनोंके
मिलनेसे ঐ होता है। ঐकार पूर्व वर्णमें मिल जाता है जैसे—
শত + এক = শতৈক, বার + এক = বারৈক, দিন + এক = দিনৈক,
জন + এক = জনৈক, এক + এক = একৈক, মত + ঐক্য =

* रेफ युक्त व्यञ्जन वर्णका विकल्पमें द्वित्व होता है, जैसे—
पूर्वक, पूर्व्वक; निर्दय, निर्द्दय इत्यादि।

মতৈক্য, বিপুল + ঐশ্বর্য্য = বিপুলৈশ্বর্য্য, মহা + ঐরাবত = মহৈরা-
বত, মহা + ঐশ্বর্য্য = মহৈশ্বর্য্য, অতুল + ঐশ্বর্য্য = অতুলৈশ্বর্য্য।
वार + एक = वारैक,—यहाँ पर वार शब्दके अकारके बाद
एक शब्दका एकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ
और ऐकार पूर्व वर्ण रकारमें मिलकर "वारैक" पद बना।
अतुल + ऐश्वर्य्य = अतुलैश्वर्य्य,—यहाँ पर अकारके बाद ऐकार
रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ है। महा + ऐरावत
= महैरावत ;—यहाँ पर आकारके बाद ऐकार रहनेसे और
दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ है। इसीतरह दिनैक, जनैक,
एकैक, मतैक्य, विपुलैश्वर्य्य, महैश्वर्य्य हैं।

२६। অ या আ के बाद ও या ঔ रहनेसे और दोनोंके
मिलनेसे ঔ हो जाता है। वही ঔ पूर्व वर्णमें मिल
जाता है। जैसे—জল + ওকাঃ = জলৌকাঃ, পত্র + ওঘ =
পত্রৌঘ, নব + ঔষধি = নবৌষধি, মহা + ঔষধি = মহৌষধি, গত +
ঔৎসুক্য = গতৌৎসুক্য इत्यादि। जल + ओकाः = जलौकाः ;—
यहाँ पर जल शब्दके अकारके बाद ओकाः शब्दका ओकार
रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे औकार हुआ और वही
औकार पूर्व वर्ण लकारमें मिलकर "जलौकाः" पद बन गया।
इसी तरह, पत्रौघ, नवौषधि इत्यादि भी बने हैं।

२७। ই और ঈ के अलावः और कोई स्वरवर्ण ই या ঈ के
बादमें रहनेसे ইবাঈ के स्थानमें य् हो जाता है, वह য্ पूर्व वर्णमें
मिल जाता है और बादका स्वर उसी यकारमें मिल जाता है।

जैसे—যদি + অপি = যদ্যপি, অতি + আহার = অত্যাহার, প্রতি + আশা = প্রত্যাশা, প্রতি + আদেশ = প্রত্যাদেশ, নদী + উত্থিত = নদ্যুত্থিত, কালী + আগার = কাল্যাগার इत्यादि। यदि + अपि = यद्यपि ;—यहाँ पर यदि शब्दके इकारके बाद अपि शब्दका अकार है ; इसीसे इ और ई के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे इकारके स्थानमें य हुआ और वही य परवर्त्ती स्वरवर्ण अपिके अकार और पूर्व वर्ण दकारमें संयुक्त होकर "यद्यपि" पद बना। इसी तरह अत्याहार, प्रत्याशा इत्यादि भी बने हैं।

२८। উ और ঊ के सिवाय और कोई स्वरवर्ण बादमें रहने से উ वा ঊ के स्थानमें ব होता है, वह ব पूर्ववर्णमें मिल जाता है और परवर्त्ती स्वर भी पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे—সু + আগত = স্বাগত, সাধু + ইচ্ছা = সাধ্বীচ্ছা, তনু + আচ্ছাদন = তন্বাচ্ছাদন, চক্ষু + আদি = চক্ষ্বাদি इत्यादि। सु + आगत = स्वागत :—यहाँ पर सु शब्दके उकारके बाद आगत शब्दका आकार है ; इसीसे उ ऊ के सिवाय अन्य स्वरवर्ण बादमें रहनेसे उकारके स्थानमें व हुआ। व और परवर्त्ती स्वर वर्ण आगतके आकारके पूर्व वर्ण सकारमें मिल जानेसे "स्वागत" पद बना ; इसी तरह साध्वीच्छा और तन्वाच्छादन बने हैं।

२८। ऋ के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे ऋके स्थानमें র् होता है ; वह র् पूर्व वर्णमें मिल जाता है और

परवर्त्ती स्वर उसी रकारमें मिल जाता है। जैसे—মাতৃ+আজ্ঞা=মাত্রাজ্ঞা, इत्यादि। मातृ+आज्ञा=मात्राज्ञा;—यहाँ पर मातृ शब्दके ऋकारके बाद आज्ञाका आकार है; इससे ऋ भिन्न स्वर वर्ण बादमें रहनेके कारण ऋकारके स्थानमें र हुआ और वह र और परवर्त्ती स्वर वर्ण आज्ञाका आकार पूर्व वर्ण तकारमें मिलकर "मात्राज्ञा" पद बना।

३०। स्वरवर्ण परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती এ, ঐ, ও, ঔ के स्थानमें क्रम क्रमसे অয়, আয়, অব, আব होता है यानी এ की जगह पर অয়, ঐ की जगह पर আয়, ও के स्थानमें অব, और ঔ के स्थानमें আব, होता है; অয়, আয়, অব, আব के অ और আ पूर्व वर्णमें मिल जाते हैं और परवर्त्ती स्वर এ, য় में और ও, ব में मिल जाता है।—जैसे—নে+অন=নয়ন, বিনৈ+অক=বিনায়ক, গৈ+অক=গায়ক, পো+অন=পবন, ভো+অন=ভবন, শো+অন=শবন, নৌ+ইক=নাবিক। ने+अन=नयन:—यहां पर एकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसे एकार की जगह अय हुआ और अय्का अकार पूर्व वर्ण नकार में मिलकर "नयन" पद बना। इसी तरह विनै+अक=विनायक;—यहाँपर ऐकारके बाद स्वरवर्ण है इसलिये ऐकारके स्थानमें आय हुआ और आयका आकार पूर्व वर्ण नकारमें मिलकर "विनायक" पद बना। इसी तरह गै+अक=गायक पो+अन=पवन;—यहाँ पर ओकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसे ओकारके स्थानमें अव हुआ और अवका अकार पूर्व वर्ण प-

कारमें मिलकर 'पवन' पद बना; इसीतरह 'भवन' 'शवन' भी बने हैं। नौ+इक=नाविक;—यहाँ पर औकारके बाद स्वर वर्ण रहनेके कारण औकारके स्थानमें आव हुआ और आव का आकार पूर्व वर्ण नकारमें मिलकर "नाविक" बना।

व्यञ्जन-सन्धि।

२१। स्वर वर्ण या वर्गका तीसरा चौथा वर्ण अथवा য, র, ল, ব, হ परे रहनेसे, वर्गके पहले वर्ण के स्थान में उस-वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—বাক্+আড়ম্বর =বাগাড়ম্বর, বাক্+ইন্দ্রিয়=বাগিন্দ্রিয়, দিক্+অন্ত=দিগন্ত, ত্বক+ইন্দ্রিয়=ত্বগিন্দ্রিয়, দিক্+গজ=দিগ্‌গজ, বাক্+জাল =বাগ্‌জাল, বাক্+দান=বাগ্‌দান, বাক্+দেবী=বাগ্‌দেবী, দিক্+বিদিক=দিগ্‌বিদিক, ষট্+দল=ষড়দল, উৎ+ঘাটন উদ্‌ঘাটন, সৎ+বিদ্যা=সদ্বিদ্যা, জগৎ+বল্লভ=জগদ্বল্লভ, অপ +জ=অব্জ इत्यादि।

२२। पञ्चम वर्ण परे रहनेसे वर्गके पहिले वर्णके स्थानमें पञ्चम वर्ण होता है; और अगर দ के बाद ন या ম रहे तो उस দ के स्थानमें ন हो जाता है। जैसे—দিক্+নাগ= দিঙনাগ, দিক্+মুখ=দিঙ্‌মুখ, অপ্+ময়=অম্ময়, ষদ্+মুখ= ষন্মুখ, উৎ+নয়ন=উন্নয়ন, তদ্+নীর=তন্নীর।

২৩। চ যা ছ পরে রহনেসে পূর্ববর্ত্তী ৎ যা দ্ কে স্থানমেঁ চ হোতা হৈ। জৈসে—শরৎ + চন্দ্র = শরচ্চন্দ্র, উৎ + চারণ = উচ্চারণ, উৎ + ছেদ = উচ্ছেদ, তদ্ + চরণ = তচ্চরণ, তদ্ + ছাত্র = তচ্ছাত্র।

২৪। জ অথবা ঝ পরে রহনে সে পূর্ববর্ত্তী ৎ যা দ্ কে স্থানমেঁ জ হোতা হৈ। জৈসে—উৎ + জ্বল = উজ্জ্বল, তৎ + ঝটিকা = তজ্ঝটিকা।

২৫। ট যা ঠ পরে রহনেসে পূর্ববর্ত্তী ৎ ঔর দ্ কে স্থানমেঁ ট হোতা হৈ। জৈসে—উৎ + টলন = উট্টলন, তদ + ঠকার = তট্-ঠকার।

২৬। ড যা ঢ পরে রহনেসে পূর্ববর্ত্তী ৎ যা দ্ কে স্থানমেঁ ড হোতা হৈ। জৈসে—উৎ + ডীন = উড্ডীন, তদ্ + ঢক্কা = তড্ঢক্কা, বৃহৎ + ঢক্কা = বৃহড্ঢক্কা।

২৭। যদি চ যা জ কে বাদ ন রহে তো ন কে স্থানমেঁ ঞ হোতা হৈ। জৈসে—যাচ্ + না = যাচ্ঞা, রাজ + নী = রাজ্ঞী।

২৮। যদি ল পরে হো তো পূর্ববর্ত্তী ৎ, দ্ ঔর ন্ কে স্থানমেঁ ল হোতা হৈ, ঔর ন কে পূর্ববর্ণমেঁ চন্দ্রবিন্দু লগ জাতা হৈ। জৈসে—উৎ + লাস = উল্লাস, ভবৎ + লেখা = ভবল্লেখা, উৎ + লেখ = উল্লেখ, উৎ + লঙ্ঘন = উল্লঙ্ঘন, তদ্ + লোভ = তল্লোভ, এতদ্ + লীন = এতল্লীন, বিদ্বান্ + লেখক = বিদ্বাঁল্লেখক।

২৯। যদি ৎ যা দ্ কে বাদ শ রহে তো ৎ ঔর দ্ কে

স্থানমেঁ চ্ ঔর শ্ কে স্থানমেঁ ছ হোতা হৈ। জৈসে—ভবৎ
শংখ=ভবচ্ছংখ, উত+শৃঙ্খল=উচ্ছৃঙ্খল, জগৎ+শরণ্য
জগচ্ছরণ্য, তদ্+শম্বুক=তচ্ছম্বুক।

৪০। ৎ যা দ কে বাদ হ রহনেসে ঔর দোনোঁকে
দ্ধ হোতা হৈ। জৈসে,—উৎ+হার=উদ্ধার, উৎ+হৃত=উ
তদ্+হরিণ=তদ্ধরিণ।

৪১। ষ কে বাদ ৎ যা থ রহনেসে ৎ কে স্থানমেঁ ট
থ কে স্থানমেঁ ঠ হোতা হৈ। জৈসে—আকৃষ্+ত=অ
ষষ্+থ=ষষ্ঠ।

৪২। স্পর্শ বর্ণ পরে রহনেসে পদকে অন্তস্থিত ম্ কে
মেঁ অনুস্বার হোতা হৈ অথবা জিস বর্গকা বর্ণ পরে রহ
ম্ কে স্থানমেঁ উসী বর্গকা পঞ্চম বর্ণ হোতা হৈ।
অন্তঃস্থ ঔর ঊষ্মবর্ণ পরে রহনেসে ম কে স্থানমেঁ কেবল
স্বার হোতা হৈ। জৈসে—সম্+কীর্ণ=সঙ্কীর্ণ যা সংকীর্ণ,
কর=কিঙ্কর যা কিংকর, সম্+গতি=সঙ্গতি যা সংগ
+চিত=কিঞ্চিৎ যা কিংচিৎ, সম্+পূজ্য=স
সংপূজ্য, সম্+ভৃতি=সম্ভৃতি যা সংভৃতি, সম্+
সম্+যোগ=সংযোগ, সম্+রক্ষণ=সংরক্ষণ, সম্+ল
সম্+বাদ=সংবাদ, সম+শয়=সংশয়, সম+হৃদ=

৪৩। ব্যঞ্জন বর্ণ পরে রহনেসে দিব্ শব্দ
দ্যু হোতা হৈ। জৈসে—দিব্+লোক=দ্যুলোক,
=দ্যুভবন।

৪৪। স্বর বর্ণকে বাদ ছ রহনেসে ছ কে স্থানমেঁ চ্ছ হোতা হৈ। জৈসে—পরি + ছেদ = পরিচ্ছেদ, অব + ছেদ = অবচ্ছেদ, স + ছিদ্র = সচ্ছিদ্র, বৃক্ষ + ছায়া = বৃক্ষচ্ছায়া, গৃহ + ছায়া = গৃহচ্ছায়া।

৪৫। উৎ শব্দকে বাদ স্থা ঔর স্তম্ভ ধাতুকে "স" কা লোপ হোতা হৈ। জৈসে—উৎ + স্থান = উত্থান, উৎ + স্তম্ভ = উত্তম্ভ।

৪৬। সম্ ঔর পরি কে বাদ কৃ ধাতুকা পদ রহনেসে বহ কৃ ধাতু নিষ্পন্ন পদকে পূর্ব্ব ক্রমশঃ স্ ঔর ষ্ হোতা হৈ অর্থাৎ সম্‌কে বাদ স ঔর পরি কে বাদ ষ হোতা হৈ। জৈসে—সম্ + করণ = সংস্করণ, সম্ + কৃত = সংস্কৃত, সম্ + কার = সংস্কার, পরি + কার = পরিষ্কার।

৪৭। চ যা ছ বাদমেঁ রহনেসে বিসর্গ কে স্থান মেঁ শ হোতা হৈ। জৈসে—মনঃ + চকোর = মনশ্চকোর, নিঃ + চয় = নিশ্চয়, শিরঃ + ছেদ = শিরশ্ছেদ, উরঃ + ছদ্ = উরশ্ছদ্।

৪৮। ট যা ঠ পরে রহনেসে বিসর্গ কে স্থানমেঁ ষ্ হোতা হৈ। জৈসে—ধনুঃ + টঙ্কার = ধনুষ্টঙ্কার।

৪৯। ত যা থ পরে রহনেসে বিসর্গ কে স্থানমেঁ স হোতা হৈ। জৈসে—নিঃ + তেজ = নিস্তেজ, দুঃ + তর = দুস্তর, ইতঃ + ততঃ = ইতস্ততঃ।

৫০। অকার বর্গকে তীসরে, চৌথে, পাঁচবে বর্ণ অথবা য, র, ল, ব, হ, কে পরে রহনেসে অকার ঔর অকারকে বাদ কে বিসর্গ দুন দোনোঁকে মিলনেসে "ও" হোতা হৈ। বহ পূর্ব্ব ওকার বর্ণমেঁ

মিল জাতা হৈ ঔর পরে অকার রহনেসে উসকা লোপ হোতা হৈ। জৈসে—ততঃ + অধিক = ততোধিক, মনঃ + গত = মনোগত, অধঃ + গমন = অধোগমন, সদ্যঃ + জাত = সদ্যোজাত, পয়ঃ + নিধি = পয়োনিধি, যশঃ + ধন = যশোধন, মনঃ + যোগ = মনোযোগ, মনঃ + বেগ = মনোবেগ, ইত্যাদি।

৫১। স্বরবর্ণ, বর্গকে তীসরে, চৌথে, পাঁচবেঁ বর্ণ অথবা য র ল ব হ কে পরে রহনেসে অকার কে বাদকে র জাত বিসর্গ কে স্থানমেঁ র্ হোতা হৈ। যদি স্বর বর্ণ যা গ, ঘ, ঙ, জ, ঝ, ঞ, ড, ঢ, ণ, দ, ধ, ন, ব, ভ, ম ঔর য র ল ব হ কে পরে রহতা হৈ তো অকারকে বাদকে র জাত বিসর্গকে স্থানমেঁ র হোতা হৈ। পূর্ব্ব লক্ষণ কে অনুসার ওকার নহীঁ হোতা। জৈসে—অহঃ + অহ = অহরহ, প্রাতঃ + আশ = প্রাতরাশ, পুনঃ + জন্ম = পুনর্জ্জন্ম, অন্তঃ + আত্মা = অন্তরাত্মা, অন্তঃ + দেশ = অন্তর্দ্দেশ, পুনঃ + উক্তি = পুনরোক্তি।

৫২। স্বরবর্ণ, বর্গকা তীসরা, চৌথা, পাঁচবা বর্ণ যা য র ল ব হ পরে রহনে সে অ আ ভিন্ন স্বরবর্ণকে বাদ কে বিসর্গ কী জগহ র্ হোতা হৈ। জৈসে—নিঃ + ভয়ঃ = নির্ভয়, বহিঃ + গত = বহির্গত, দুঃ + আত্মা = দুরাত্মা, দ্বিঃ + উক্তি = দ্বিরুক্তি, দুঃ + লভ = দুর্লভ।

৫৩। র পরে রহনে সে বিসর্গ কে স্থান মেঁ জো র্ হোতা হৈ, উস র্ কা লোপ হোতা হৈ ঔর পুর্ব্ব স্বর দীর্ঘ হো জাতা হৈ।

जैसे—নিঃ+রোগ=নীরোগ, নিঃ+রস=নীরস, নিঃ+রব=নীরব, চক্ষুঃ+রাগ=চক্ষুরাগ।

५४। স্থ परे रहने से, पूर्ववर्त्ती विसर्गका विकल्प में लोप होता है। जैसे—মনঃ+স্থ=মনস্থ या মনঃস্থ; দুঃ+স্থ=দুস্থ, इत्यादि।

५५। समास में ক খ প ফ परे रहनेसे विसर्ग के स्थान में विकल्प से স होता है; और वही স अगर অ আ भिन्न स्वरवर्ण के बाद का होता है तो ষ হो जाता है। जैसे—নিঃ+কর্ম্মা=নিষ্কর্ম্মা या নিঃকর্ম্মা; ভাঃ+কর=ভাস্কর,ভাঃকর; দুঃ+কর=দুষ্কর, দুঃকর; তেজঃ+কর=তেজস্কর, তেজঃকর; ভাঃ+পতি=ভাস্পতি, ভাঃপতি; নিঃ+ফল=নিষ্ফল, নিঃফল।

५६। अकार भिन्न स्वरवर्ण परे रहनेसे अकार के बाद के विसर्गका लोप होता है। लोप के बाद फिर सन्धि नहीं होती। जैसे—অতঃ+এব=অতএব, পয়ঃ+ওঘ=পয়ওঘ।

५७। बँगला भाषामें पदके अन्तस्थित विसर्गका विकल्पमें लोप होता है। যথা—ফলতঃ, ফলত; বিশেষতঃ, বিশেষত; বস্তুতঃ, বস্তুত; মনঃ, মন।

णत्वविधान।

"ण" के लगानेके स्थान।

५८। ঋ, র, ষ के बादका दन्त्य ন मूर्द्धन्य होता है। जैसे—ঋণ, বর্ণ, তৃণ, বিদীর্ণ, বিষ্ণু, উষ্ণ, সহিষ্ণু।

५९। ऋ, र्, ष के बाद स्वरवर्ण, कवर्ग, पवर्ग, ह य व या अनुस्वार व्यवधान रहने पर भी दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है। जैसे—কারণ, দর্পণ, পাষাণ, নির্ব্বাণ, রুক্মিণী, বৃংহণ, বিস্মরণ।

६०। उल्लिखित वर्णके सिवा और कोई वर्ण व्यवधान में नहीं होता। जैसे—অর্চ্চনা, কীর্ত্তন, রসনা।

६१। पदके अन्तमें या दूसरे पदमें न रहनेसे वह मूर्द्धन्य नहीं होता जैसे—দুরপনেয়, দুর্নাম, দুর্নয়।

६२। क्रियाके अखीरका दन्त्य न मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे—করেন, ধরেন, মারেন।

६३। त, थ, द, ध, संयुक्त न "ण" नहीं होता। जैसे—প্রান্ত, ভ্রান্ত, রন্ধ্র।

थोड़ेसे स्वाभाविक मूर्द्धन्य ণ विशिष्ट पद है। जैसे—বাণি, মণি, বেণী, গুণ, কঙ্কণ, গণ, বিপণি, পণ, আপণ, বীণা, স্থাণ, নিপুণ, লবণ, কণিকা, বাণ, মৎকুণা, শোণ, কোণ, কল্যাণ, কণা, অণু, কাণ, ধূণ, বণিক इत्यादि।

६४। অ আ भिन्न स्वरवर्ण अथवा क और र भिन्न वर्णोंके किसी भी परिस्थित पदके बीचका दन्त्य স मूर्द्धन्य होता है। विसर्ग व्यवधान रहने पर भी षत्व होता है। लेकिन সাৎ प्रत्ययका স मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे—মুমুর্ষু, বক্ষ্যমান, জিগীর্ষা, চিকীর্ষা, পরিষ্কার, নিষেধ, অধিষ্ঠান, আবিষ্কার इत्यादि।

कुछ शब्दोंका ष स्वाभाविक ही मूर्द्धन्य होता है। जैसे

ভাষা, পাষাণ, কল্মষ আষাঢ়, কল্মাষ, কষায়, কষ্ট, কুষ্মাণ্ড ह्त्यादि।

पद।

सारे पद पाँच भागोंमें बाँटे गये हैं। यथा ; (१) विशेष्य (२) विशेषण, (३) सर्व्वनाम, (४) अव्यय (५) क्रिया।

विशेष्य।

कोई चीज़, व्यक्ति, जाति, गुण और क्रिया वाचक शब्दको বিশেষ্য कहते हैं। जैसे;—বস্ত্র, মৃত্তিকা ; রাম, যদু ; গায়, মনুষ্য ; ভদ্রতা, মহত্ত্ব ; গমন, ভোজন इत्यादि।

विशेष्य पदमें লিঙ্গ, বচন, পুরুষ और কারক होते हैं। इनके जाननेसे वाक्यार्थ जाननेमें सुभीता होता है।

लिंग।

जिसके द्वारा पुरुष, स्त्री आदि जातिका ज्ञान होता है उसे लिङ्ग कहते हैं।

लिङ्ग तीन प्रकारके होते हैं। पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग।

बँगला भाषामें क्लीवलिङ्ग का कोई विशेष रूप नहीं

হোতা। ফল, জল, অরণ্য প্রভৃতি ক্লীবলিঙ্গ শব্দোঁকা রূপ পুংলিঙ্গ জৈসা হোতা হৈ।

জিন শব্দোঁসে পুরুষ জাতিকা জ্ঞান হোতা হৈ, বে পুংলিঙ্গ কহে জাতে হৈঁ। জৈসে;—মনুষ্য, বালক, সিংহ, অশ্ব ইত্যাদি।

জিন শব্দোঁসে স্ত্রী জাতিকা বোধ হোতা হৈ উন্হেঁ স্ত্রীলিঙ্গ কহতে হৈঁ। জৈসে;—স্ত্রী, কন্যা, হরিণী, নারী, মহিষী, হস্তিনী, ঘোটকী, কুক্কুরী ইত্যাদি।

বিদ্যুত, রাত্রি, লতা, বুদ্ধি, পৃথিবী, নদী, লজ্জা, শোভা, এবং জ্যোৎস্না, ইনকে অর্থমেঁ জিন শব্দোঁকা প্রয়োগ হোতা হৈ বে স্ত্রীলিঙ্গ হোতে হৈঁ। জৈসে—সৌদামিনী, বসুমতী, যামিনী, ইত্যাদি।

যাদ রখনা চাহিয়ে কি বিদ্যুৎ, তৃষ্ণা, বীণা, সভা, রুচি, নাড়ী বনিতা, তারা, শ্রেণী, শোভা, ধূলি, নদী, নীতি, সরিৎ, বেণী, সৌদামিনী, লতা, লজ্জা, কথা, নৌকা, নাসিকা, গ্রীবা, বিভা, ভাষা, হরিদ্রা, জিহ্বা, পুষ্করিণী ইত্যাদি থোড়েসে শব্দ সদা স্ত্রীলিঙ্গ হোতে হৈঁ।

সামান্য স্ত্রীলিংগ প্রত্যয়।

(ক) জিন শব্দোঁকে অন্তমেঁ "অ" (অকার) হোতা হৈ, স্ত্রীলিঙ্গ মেঁ "অ" কে স্থানমেঁ "আ" (আকার) হো জাতা হৈ। জৈসে;—ক্ষীণ, ক্ষীণা; সর্ব্ব, সর্ব্বা; সবল, সবলা; দুর্ব্বল,

দুর্ব্বলা ; রাম, রামা ; মনোহর, মনোহরা ; কোকিল, কোকিলা ; কৃষ্ণ, কৃষ্ণা ; দীর্ঘ, দীর্ঘা ইত্যাদি।

(খ) জিন জাতিবাচক শব্দোঁকে অন্তমেঁ "অ" হোতা হৈ, স্ত্রীলিঙ্গমেঁ "অ" কে স্থানমেঁ "ঈ" হো জাতী হৈ। জৈসে;—ব্রাহ্মণ, ব্রাহ্মণী ; মৃগ, মৃগী ; রাক্ষস, রাক্ষসী ; অশ্ব, অশ্বী ; গোপ, গোপী ; সারস, সারসী ; পিশাচ, পিশাচী ; দানব, দানবী ; হংস, হংসী ; মানুষ, মানুষী ; কুরঙ্গ, কুরঙ্গী ; সর্প, সর্পী ; ব্যাঘ্র, ব্যাঘ্রী ; রজক, রজকী ; সিংহ, সিংহী ; মৎস্য, মৎসী ইত্যাদি।

(গ) জিন শব্দোঁকে অন্তমেঁ ময়, দৃশ, চর ঔর কর শব্দ হোতে হৈঁ উনকা স্ত্রীলিঙ্গ প্রায়: ইকারান্ত হোতা হৈ যানী উনকে অন্তমেঁ "ঈ" লগা দী জাতী হৈ। জৈসে;—প্রস্তরময়,প্রস্তরময়ী ; মৃণ্ময়, মৃণ্ময়ী ; যাদৃশ, যাদৃশী ; এতাদৃশ, এতাদৃশী ; খেচর, খেচরী ; সুখকর, সুখকরী ; জলচর, জলচরী ; শুভকর, শুভকরী ; স্বর্ণময়, স্বর্ণময়ী ; হিতকর, হিতকরী ; কিঙ্কর ; কিঙ্করী ; সহচর, সহচরী ; ইত্যাদি।

(ঘ) জিন শব্দোঁকে অন্তমেঁ "ইন্" হোতা হৈ, উনকে স্ত্রীলিঙ্গকে রূপমেঁ উনকে অন্তমেঁ "ঈ" হো জাতী হৈ। জৈসে;—দায়িন্, দায়িনী ; বিধায়িন্, বিধায়িনী ; মানিন্, মানিনী ; জ্ঞানিন্, জ্ঞানিনী ইত্যাদি।

(ঙ) জিন শব্দোঁকে অন্তমেঁ "বান্" হোতা হৈ, উনকে স্ত্রীলিঙ্গমেঁ "বান্" কে স্থানমেঁ "বতী" হো জাতী হৈ। জৈসে;—গুণবান্, গুণবতী ; রূপবান্, রূপবতী ; ইত্যাদি।

(च) जिन शब्दोंकि अन्तमें "অক" होता है उनके स्त्री-लिङ्गमें "অক" के स्थानमें "ইকা" हो जाता है। जैसे;— পাচক, পাচিকা; নায়ক, নায়িকা; দায়ক, দায়িকা; বালক, বালিকা; গায়ক, গায়িকা इत्यादि।

(छ) अङ्गवाचक शब्द, स्त्रीलिङ्गके विशेषणमें, प्रायः "ঈ" कारान्त हो जाते हैं। जैसे;—সুকেশ, সুকেশী; সুমুখ, সুমুখী इत्यादि।

(ज) প্রথম, দ্বিতীয় और তৃতীয় शब्दोंके सिवा और सब पूरणवाचक शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें "ঈ" होती है; किन्तु প্রথম, দ্বিতীয় और তৃতীয় के बाद "আ" होता है। जैसे;— চতুর্থী, পঞ্চমী, ষষ্ঠী, সপ্তমী, অষ্টমী, নবমী, দশমী इत्यादि और প্রথমা, দ্বিতীয়া, তৃতীয়া।

(झ) गुणवाचक "উ" कारान्त शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें विकल्पसे "ঈ" होती है और पहले "উ" के स्थानमें "ব" होता है। जैसे;—গুরু, গুর্ব্বী; লঘু, লঘ্বী; মৃদু, মৃদ্বী; इत्यादि।

(ञ) जिन शब्दोंके अन्तमें "ঈয়স্" प्रत्यय होता है उनके स्त्रीलिङ्गके रूपमें, अन्तमें "ঈ" होजाती है। जैसे;—লঘীয়স, লঘীয়সী; গরীয়স, গরীয়সী; ভূয়স, ভূয়সী; প্রেয়স, প্রেয়সী इत्यादि।

(ट) जिन शब्दोंके अन्तमें "অৎ" होता है उनके स्त्री-लिङ्गमें प्रायः पीछे "ঈ" हो जाती है। जैसे—মহৎ, মহতী; সৎ, সতী; গুণবৎ, গুণবতী इत्यादि।

(ঠ) জিন শব্দোঁকে অন্তমেঁ "মৎ" ঔর "বৎ" হোতে হৈঁ উনকে স্ত্রীলিঙ্গকে রূপোঁমেঁ অন্তমেঁ "ঈ" হো জাতী হৈ । জৈসে;—

শব্দ	পুংলিঙ্গ	স্ত্রীলিঙ্গ
শ্রীমৎ	শ্রীমান্	শ্রীমতী
দয়াবৎ	দয়াবান্	দয়াবতী
জ্ঞানবৎ	জ্ঞানবান্	জ্ঞানবতী

(ড) জিন শব্দোঁকে অন্তমেঁ "তা" ঔর "তি" প্রত্যয় হোতে হৈঁ, বে শব্দ স্ত্রীলিঙ্গ হোতে হৈঁ । জৈসে;—গতি, মতি, ভক্তি, লঘুতা, ভদ্রতা ইত্যাদি ।

(ঢ) মাতৃ, দুহিতৃ, স্বসৃ, ননন্দৃ, যাতৃ আদি কুছ শব্দোঁকো ছোড়কর জিন শব্দোঁকে অন্তমেঁ "ঋ" হোতী হৈ উনকে স্ত্রীলিঙ্গকে রূপোঁমেঁ, শব্দকে অন্তমেঁ "ঈ" হো জাতী হৈ ঔর "ঋ" কে স্থানমেঁ "র" হোজাতা হৈ । জৈসে;—

শব্দ	পুংলিঙ্গ	স্ত্রীলিঙ্গ
দাতৃ	দাতা	দাত্রী
বিধাতৃ	বিধাতা	বিধাত্রী
কর্ত্তৃ	কর্ত্তা	কর্ত্রী

লেকিন মাতৃ কা মাতা ঔর দুহিতৃ কা দুহিতা ইত্যাদি হোতা হৈ ।

(ণ) কাল, গৌর, তরুণ, পুত্র প্রভৃতি শব্দোঁকে স্ত্রীলিঙ্গমেঁ দীর্ঘ "ঈ" হোজাতী হৈ । জৈসে;—

কাল, কালী ; গৌর, গৌরী ; তরুণ, তরুণী; কুমার, কুমারী; পুত্র, পুত্রী ; মণ্ডল, মণ্ডলী ; নগর, নগরী ; সুন্দর, সুন্দরী ;

চণ্ড, চণ্ডী ; পিতামহ, পিতামহী ; নর্ত্তক, নর্ত্তকী ; নট, নটী ; নদ, নদী ; ঘট, ঘটী ; কিশোর, কিশোরী ; নাগ, নাগী।

(ত) কুছ শব্দোঁকে রূপ স্ত্রীলিঙ্গ ঔর পুংলিঙ্গমেঁ একসে হোতে হৈঁ। জৈসে—সম্রাট্, বিরাট, কবি ইত্যাদি।

(থ) কুছ শব্দ স্ত্রী জাতিকা বোধ ন করানে পর ভী সদা স্ত্রীজাতিকে রূপমেঁ গিনে জাতে হৈঁ। জৈসে—আমলকী, হরীতকী, বদরী, কাশী, কাঞ্চী, কাবেরী, কদলী, মথুরা ইত্যাদি।

(দ) কুছ হ্রস্ব "ই" কারান্ত স্ত্রীলিঙ্গ শব্দ বিকল্পসে "ঈ" কারান্ত হো জাতে হৈঁ। জৈসে,—রজনি, রজনী ; রাত্রি, রাত্রী ; শ্রেণি, শ্রেণী ; ভূমি, ভূমী ; সূচি, সূচী; ইত্যাদি।

(ধ) জনক প্রভৃতি কুছ শব্দোঁকা স্ত্রীলিঙ্গকে রূপমেঁ ভেদ হোতা হৈ। জৈসে—

জনক, জননী ; পিতা, মাতা বর, কন্যা ; ভ্রাতা, ভগিনী ; নর, নারী ; পুরুষ, স্ত্রী ; হিম, হিমানী ; মামা, মামী ; বুড়া, বুড়ী ; ঠাকুর, ঠাকুরাণী ; চণ্ডাল, চণ্ডালিনী ; শুক, সারী ইত্যাদি।

(ন) কুছ পুংলিঙ্গ শব্দোঁকে স্ত্রীলিঙ্গকে রূপ নীচে ঔর দিখায়ে জাতে হৈঁ। জৈসে :—

পুংলিঙ্গ	স্ত্রীলিঙ্গ	পুংলিঙ্গ	স্ত্রীলিঙ্গ
রাজা	রাজ্ঞী	বিদ্বান্	বিদুষী
রুদ্র	রুদ্রাণী	মাতুল	মাতুলানী*

* মাতুল শব্দকে স্ত্রীলিঙ্গ মেঁ তীন রূপ হোতে হৈঁ :— মাতুলানী, মাতুলী, মাতুলা।

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
ইন্দ্র	ইন্দ্রাণী	ব্রহ্মা	ব্রহ্মাণী
যুবা	যুবতী	ভব	ভবানী
বরুণ	বরুণানী	পাপীয়ান্	পাপীয়সী
বৈশ্য	বৈশ্যা	দাস	দাসী
শূদ্র	শূদ্রা	পৌত্র	পৌত্রী
দৌহিত্র	দৌহিত্রী	খুড়া	খুড়ী

बचन।

जिसके द्वारा वस्तुकी संख्या जानी जाती है उसे "बचन" कहते हैं।

बचन दो प्रकारके होते हैं :—

(১) एकबचन।

(২) बहुबचन।

एक बचन के विभक्ति युक्त पदके द्वारा केवल एक पदार्थ जाना जाता है। जैसे; বালক।

बहुबचन के विभक्ति पदके द्वारा, एक भिन्न, अनेक वस्तुओं का ज्ञान होता है। जैसे; বালকেরা।

"बालक" कहनेसे केवल एक बालक और "बालकेरा" कहनेसे एकसे अधिक बालक समझे जाते हैं।

बहुबचन में शब्दके पीछे রা, এরা, দিগ, গণ, গুলা, গুলি,

इत्यादि शब्द लगाये जाते हैं। जैसे—মনুষ্যেরা, লোকগুলা, পুস্তকগুলী।*

पुरुष।

कारकके आश्रय को ही पुरुष कहते हैं। जैसे;—

যদু পড়িতেছে = यदु पढ़ता है।

রামকে পড়াও = रामको पढ़ाओ।

यहाँ "यदु" कर्त्ताकारक है और "राम" कर्मकारक है। अतएव "यदु" और "राम" में से प्रत्येक कारक के आश्रय है। इसीसे इन में से प्रत्येक "पुरुष" कहा जाता है।

पुरुष तीन प्रकारके होते हैं:—

(१) उत्तम पुरुष। जैसे; আমি (मैं)

(२) मध्यम पुरुष। जैसे; তুমি (तुम)

(३) प्रथम पुरुष। जैसे; তিনি (वह)

---

* अप्राणिवाचक शब्दोंके बहुबचनमें রা, এরা, चिन्ह नहीं लगाये जाते। ऐसे शब्दोंके साथ গুলি, গুলা, সকল, সমূহ इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं। नीचे दर्जके प्राणि-वाचक शब्दोंके अन्तमें भी রা, এরা का प्रयोग नहीं होता। उनके अन्तमें भी গুলা, গুলি, इत्यादि प्रयोग किये जाते हैं। जैसे; পত্রগুলি, জলবিন্দু সকল, পতঙ্গগুলি, কীটগুলা इत्यादि। ऐसा कभी नहीं होता—পত্রেরা, জলবিন্দুরা, পতঙ্গেরা, কীটেরা इत्यादि।

इन सब पुरुषोंके बाद के, ए, ये, ते, द्वारा, दिया, हइते, थेके, र, ए, एर, वगैरः शब्द जो इस्तेमाल होते हैं इन्हें विभक्ति अथवा चिन्ह कहते हैं। विभक्ति द्वारा ही बचन और कारक जाने जाते हैं।

कारक।

क्रियाके साथ जिस पदका किसी तरहका सम्बन्ध रहता है उसे कारक कहते हैं। जैसे বালক খেলিতেছে, আমি বৃক্ষ দেখিতেছি, তুমি অস্ত্র দ্বারা শাখা কর্ত্তন কর।

यहाँ खेलितेछे, देखितेछि और कर्त्तन, ये तीनों क्रिया हैं। खेलनेका काम बालक करता है; इससे खेलितेछे क्रिया का सम्बन्ध बालकसे है; अतएव बालक एक कारक है। आमि वृक्ष देखितेछि, इस जगह मेरे देखनेका काम वृक्ष पर सम्पन्न होता है सुतरां देखितेछि इस क्रियाका आमि और वृक्षसे सम्पर्क है। अतएव आमि और वृक्ष दोनों ही कारक हैं।

कारक छै प्रकारके होते हैं। जैसे;—(१) कर्त्ता, (२) कर्म, (३) करण (४) सम्प्रदान, (५) अपादान, (६) अधिकरण।

कर्त्ता।

जो करता है, जो होता है अर्थात् जिससे कर्त्तृक क्रिया सम्पन्न होती है उसे कर्त्ता कहते हैं। कर्त्तामें प्रथमा विभक्ति

होती है। जैसे; রাম পুস্তক পড়িতেছে, শিশু চাঁদ দেখিতেছে, রাজা আসিতেছেন इत्यादि।

यहाँ पर पड़ितेछे क्रियाका "कर्त्ता" राम है; क्योंकि जो करता है उसीको कर्त्ता कहते हैं। राम पुस्तक पड़ितेछे, यहाँ पर कौन पुस्तक पढ़ता है? राम। इसलिये "राम" कर्त्ता है। शिशु चाँद देखितेछे, यहाँ पर चाँद कौन देखता है? शिशु; इसलिये "शिशु" कर्त्ता है। राजा आसितेछेन, यहाँ पर आता है कौन? राजा; इसलिये 'राजा' कर्त्ता है।

कर्म्म।

जो किया जाता है, जो सुना जाता है, जो देखा जाता है, जो लाया जाता है, जो दिया जाता है, जो लिया जाता है, जो रक्खा जाता है, जो पकड़ा जाता है, जो मारा जाता है, उसे कर्म्म कहते हैं। कर्ममें द्वितीया विभक्ति होती है। कर्मकी विभक्तियोंके चिन्ह ये हैं কে, রে, এরে अथवा য়। जैसे; শ্যাম হরিকে ধরিতেছে, সিংহ মাংস খায়, রাম পুস্তক পড়িতেছে इत्यादि।

क्रियामें क्या या किसको यह प्रश्न करनेसे जो पद मिलता है उसी को उस क्रियाका कर्म जानना। क्रिया में "कौन" प्रश्न करनेसे कर्त्ता मिलता है।

श्याम हरिके धरितेछे ; 'धरितेछे' क्रिया है, कौन धरितेछे? इस प्रश्नके उत्तरमें श्याम मिलता है ; इस लिये 'श्याम' कर्त्ता है। श्याम क्या वा किसको पकड़ता है ? इस प्रश्नसे हरि मिलता है ; इसलिये "हरि" कर्म्म है। इसी तरह और उदाहरण समझ लो।

कुछ क्रियाओंके दो दो कर्म्म रहते हैं, अर्थात् জিজ্ঞাসা, দেওয়া इत्यादि कतिपय धातुओं तथा कथनार्थ और णिजन्त धातुओंके दो दो कर्म रहते हैं। इन धातुओंका नाम द्विकर्म्मक है। जैसे—মাতা শিশুকে চন্দ্র দেখাইতেছেন, গুরু শিষ্যকে কাব্য পড়াইতেছেন, আমি তারককে টাকা দিয়াছি, ধীরেন্দ্র সতীশকে ইহা বলিল इत्यादि।

माता शिशुके चन्द्र देखाइतेछेन. यहाँ पर 'देखाइतेछेन" क्रिया है। कि देखाइतेछेन ? चन्द्र ; इसलिये "चन्द्र" एक कर्म्म है। और काहाके देखाइतेछेन ? शिशुके ; इसलिये "शिशुके" और एक कर्म्म हुआ ; अतएव देखाइतेछेन इस क्रियाके दो कर्म्म हुए। गुरु शिष्यके काव्य पड़ाइतेछेन, यहाँ पर "पड़ाइतेछेन" क्रिया है। कि पड़ाइतेछेन ? काव्य ; इस लिये "काव्य" एक कर्म्म हुआ। काहाके पड़ाइतेछेन ? शिष्यके। इसलिये "शिष्यके" और एक कर्म्म हुआ ; अतएव पड़ाइतेछेन क्रिया द्विकर्म्मक हुई। इसी तरह आमि तारककेे टाका दियाछि, यहाँ पर 'दियाछि' क्रिया हुई ; कि

दियाछि ? टाका ; इसलिये "टाका" कर्म्म है। काहाके दियाछि ? तारकके ; इसलिये "तारकके" और एक कर्म हुआ ; अतएव दियाछि इस क्रियाके दो कर्म हुए। धीरेन्द्र सतीशके इहा बलिल, यहाँपर "बलिल" क्रिया है। कि बलिल ? इहा ; इसलिये "इहा" एक कर्म हुआ। काहाके बलिल ? सतीशके ; इसलिये "सतीशके" यह पद भी एक कर्म हुआ। अतएव बलिल क्रियाके दो कर्म हुए।

करण कारक ।

जिसके द्वारा काम पूरा किया जाता है, उसको करण कारक कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे ;—দায় দ্বারা কাষ্ঠ কাটিতেছে ; চক্ষু দ্বারা চন্দ্র দেখিতেছে, জল দ্বারা ভূমি আর্দ্র হইয়াছে इत्यादि।

दाय द्वारा काष्ठ काटितेछे ; यहाँ पर दाय (कुल्हाड़ी) द्वारा काटनेका काम पूरा होता है, इसलिये "दाय" करण कारक हुआ। चक्षु द्वारा चन्द्र देखितेछे ; यहाँ पर चक्षु द्वारा देखनेकी क्रिया सम्पन्न होती है ; इसलिये "चक्षु" करण कारक हुआ। जल द्वारा भूमि आर्द्र हइयाछे ; यहाँ पर जल द्वारा आर्द्र होनेका काम पूरा होता है ; इसलिये "जल" करण कारक हुआ।

দ্বারা, দিয়া, করিয়া, তে इत्यादि विभक्ति चिन्हों के द्वारा करण कारक का निर्णय होता है; इस लिये ये करण कारक की विभक्तियाँ हैं। क्रियामें किसके द्वारा प्रश्न करनेसे जो मिलता है वही करण कारक होता है। जैसे—দন্ত দ্বারা চর্ব্বণ করে, নেত্র দিয়া দেখে, যষ্টি করিয়া, লাঠিতে इत्यादि।

यहाँपर 'दन्त', 'नेत्र', 'यष्टि' और 'लाठि' करण कारक हैं। द्वारा, दिया, करिया और ते इन चारों विभक्तियों द्वारा करणकारक का निर्णय होता है।

सम्प्रदान कारक।

अपना अधिकार नष्ट करके जिसको कोई चीज़ दी जाती है उसको सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसकी विभक्ति के चिन्ह के और रे हैं। जैसे—দরিদ্রকে অন্ন দাও, यहाँ पर "दरिद्रके" यह पद सम्प्रदान कारक हुआ। जिस दान में अधिकार रहता है अर्थात् जब दी हुई चीज़ फिर ले लेनेकी इच्छासे दी जाती है तब वह सम्प्रदान न होकर कर्म्म होती है। जैसे—রজককে বস্ত্র দিতেছে; यहाँ पर रजक कर्म्म कारक है।

अपादान कारक।

जिससे कोई आदमी या चीज़, भीत, चलित,

रक्षित, गृहीत, उत्पन्न अन्तर्हित, निवारित, विरत, पराजित, आवद्ध या भेदित होता है, उसका नाम अपादान कारक है। अपादानमें पञ्चमी विभक्ति होती है। इस विभक्ति का चिन्ह है—হইতে। जैसे—ব্যাঘ্র হইতে ভীত হইতেছে ; বৃক্ষ হইতে পত্র পড়িতেছে, দস্যু হইতে ধন রক্ষা করিতেছে, মেঘ হইতে বৃষ্টি হইতেছে, পাপ হইতে বিরত হইবে, দুষ্ট লোক হইতে অন্তর্হিত হইতেছে, পুষ্প হইতে ফল উৎপন্ন হয় इत्यादि।

व्याघ्र हइते भीत हइतेछे, यहाँपर व्याघ्रसे भीत होने के कारण "व्याघ्र" अपादान कारक हुआ। वृक्ष हइते पत्र पड़ितेछे, वृक्षसे पत्रका गिराव होता है इसलिये "वृक्ष" अपादान कारक हुआ। दस्यु हइते धन रक्षा करितेछे, यहाँपर दस्युसे धन रक्षा करनेके कारण "दस्यु" अपादान कारक हुआ। मेघ हइते वृष्टि हइतेछे ; यहांपर मेघसे वृष्टि पैदा होती है, इसलिये 'मेघ' अपादान कारक हुआ। पाप हइते विरत हइबे, यहाँ पर पापसे विरत होनेके कारण "पाप" अपादान कारक हुआ। दुष्ट लोक हइते अन्तर्हित हइतेछे, यहाँपर दुष्टलोक से अन्तर्हित होनेके कारण "दुष्ट लोक" अपादान कारक हुआ। पुष्प हइते फल उत्पन्न हय, यहाँपर पुष्प से फल पैदा होता है ; इसलिये "पुष्प" अपादान कारक हुआ।

হইতে या থেকে इत्यादि अपादान कारक की विभक्तियाँ हैं। जैसे—पाँच थेके तीन वियोग कर। भक्त क

হইতে ভয় পাইতেছি। बाड़ी थेके जान, इत्यादि। यहाँपर "पाँच", "भल्लूक" और "बाड़ी" अपादान कारक हैं। हइते और थेके इन दो विभक्तियों द्वारा अपादान कारक जाना जाता है।

अधिकरण।

वस्तु या क्रिया के आधारको अधिकरण कहते हैं जैसे—वायु সর্ব্ব স্থানে আছে, বৃক্ষে ফল আছে, দেহে বল আছে, দুগ্ধে মাখন আছে इत्यादि।

वायु सर्व्व स्थाने आछे, यहाँ पर "सर्व्व स्थाने" यह पद 'आछे' क्रिया का आधार है इसलिये "सर्व्व स्थाने" अधिकरण कारक हुआ। वृक्षे फल आछे, यहाँपर 'आछे' क्रिया है; कोथाय आछे? वृक्षे; इस लिये "वृक्षे" अधिकरण कारक हुआ। देहे बल आछे, यहाँ पर 'आछे' क्रिया है; कोथाय आछे? देहे; इसलिये "देहे" अधिकरण कारक हुआ। दुग्धे माखन आछे, यहाँ पर दुग्ध माखनका आधार है; इसलिये "दुग्धे" अधिकरण कारक हुआ।

তে, এতে, এ, য়া, য়,—ये सब अधिकरणकी विभक्तियाँ हैं। जैसे;—জলে মৎস্য বাস করে, শাখায় কিংবা শাখাতে বসিয়া কাক ডাকিতেছে इत्यादि।

यहाँपर "जले, शाखाय या शाखाते" अधिकरण कारक हैं।

अधिकरण तीन प्रकारके होते हैं—आधाराधिकरण, कालाधिकरण और भावाधिकरण।

वस्तु या क्रिया का आधार होने ही से उसको आधाराधिकरण कहते हैं। आधाराधिकरण चार प्रकार के हैं; विषयाधार, व्याप्ताधार, सामीप्याधार और एक देशाधार।

कोई वस्तु, अधिकरण होने से अगर "तद्विषये' (उसमें) ऐसा अर्थ समझ पड़े; तो उसका नाम "विषया अधिकरण" होता है। जैसे—শিল্পকারের শিল্পকর্ম্মে নৈ দেখায়, अर्थात् शिल्पकार्य्य में निपुणता है; শাস্ত্রে পা দর্শিতা আছে, यहाँपर "शिल्पकर्मे" और शास्त्रे" ये दो विषयाधार अधिकरण हैं।

जो सब आधार में व्याप्त होकर रहता है उ नाम "व्याप्ताधार" है। जैसे—ইক্ষুতে রস আছে, ऊख में रस है। দুগ্ধে মাখন আছে, अर्थात् दूध में म है, इसलिये यहाँ पर "इक्षुते" और "दुग्धे" ये दोन व्याप्ताधार अधिकरण हुए।

समीपे (नज़दीक, पास) यह अर्थ प्रकट होने "सामीप्याधार" कहते हैं। जैसे—গঙ্গায় বাস করে, गङ्गा के निकट रहता है ऐसा अर्थ प्रकट होता है; "गङ्गाय" पद सामीप्याधार अधिकरण है।

यदि एकाधार हो; तो उसे "एक देशाधिकरण" क जैसे—বনে ব্যাঘ্র আছে। यहाँपर यह नहीं समझ

कि सारे बन में बाघ हैं; बल्कि यह समझना होगा कि बन के किसी एक स्थान में बाघ है; इसलिये 'बने' यह एक देशाधार अधिकरण हुआ ।

कालवाचक शब्द अधिकरण होने से उसको "कालाधिकरण" कहते हैं; अर्थात् दिन, रात्रि, मास, पक्ष, यखन, तखन, इत्यादि समय-वाचक शब्द अगर अधिकरण हो तो उसको कालाधिकरण कहते हैं। जैसे—প্রত্যুষে গাত্রোত্থান করা উচিত, মধ্যাহ্নে সূর্য্যের কিরণ খরতর হয়, তিনি তখন ছিলেন না, যখন যাইবে আমিও যাইব, বর্ষায় বৃষ্টি হয় इत्यादि ।

प्रत्यूषे गात्रोत्थान करा उचित, यहाँपर प्रत्यूषे अर्थात् प्रभात काले (सवेरे) समझा जाता है; इस लिये 'प्रत्यूषे' यह पद कालाधिकरण है। मध्यान्हे सूर्य्येर किरण खरतर हय, यहाँ पर मध्यान्हे कहनेसे मध्यान्हकाल समझा जाता है; तिनि तखन छिलेन ना, यहाँ पर तखन कहने से वही समय समझा जाता है। यहाँपर "तखन" पद कालाधिकरण है। जखन जाइबे आमिओ जाइब, यहाँपर जखन शब्दद्वारा समय समझा जाता है; इसलिये 'जखन' पद कालाधिकरण हुआ। वर्षाय वृष्टि हय, यहाँ वर्षा शब्द द्वारा वर्षा काल समझा जाता है इसलिये "वर्षा" पद कालाधिकरण है।

गमन, दर्शन, भोजन, श्रवण इत्यादि जितने भाव-

करुणा

सम्बन्ध पद।

क्रियाके साथ अन्वित नहीं होता, इसीसे सम्बन्धको कारक नहीं कहते। विशेष्य पद के साथ विशेष्य पदके सम्पर्कको ही "सम्बन्ध पद" कहते हैं। सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। उसका रूप র या এর है। जैसे—রামের বাড়ী, শ্যামের কাপড়, আমের গাছ, চন্দ্রের কিরণ, সাধুর ভদ্রতা, সাগরের জল इत्यादि।

रामेर बाड़ी, यहाँ पर राम और बाड़ी दोनों विशेष्य पद हैं। बाड़ीके साथ रामका सम्बन्ध है; क्योंकि रामको छोड़ कर बाड़ी में दूसरे का अधिकार नहीं है; इसलिये "रामेर," यह पद सम्बन्ध पद हुआ और राम पद के आगे एर विभक्ति जोड़नेसे रामेर पद बना। इसी तरह श्यामेर, आमेर, चन्द्रेर, साधुर, सागरेर ये सब भी "सम्बन्ध पद" हैं।

सम्बोधन।

आह्वान करनेको सम्बोधन कहते हैं। सम्बोधन के समय जो पद प्रयोग किया जाता है उसे "सम्बोधन पद" कहते हैं। जैसे;—

ভ্রাতঃ চল = भाई चलो।

রাম তুমি যাও = राम तुम जाओ।

माधव भाल आछ ?= माधव अच्छे हो ?

ওহে হরি = ओ हरि ।

ওরে চন্দ্র = अरे चन्द्र ।

ऊपरके उदाहरणोंमें "भ्रातः", "राम", "माधव", "और "चन्द्र" सम्बोधन पद हैं ।

नोट—सम्बोधन पदोंके आगे হে, ও, অয়ি, হা, অরে, प्रभृति कितने ही अव्यय शब्द प्रायः लगाये जाते हैं । ले किसी किसी जगह सम्बोधन पद के पहले सम्बोधन-अव्यय शब्द नहीं लगाये जाते ।

संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार अकारान्त को कार और तरह के शब्दों के सम्बोधन पद के एक वच रूपान्तर होता है ; बहुवचन में नहीं होता ।

जैसे ;—

शब्द	सम्बोधन पद
शकुन्तला	अयि शकुन्तले
दुर्म्मति	रे दुर्म्मते
सखि	हे सखे
प्रेयसी	हा प्रेयसि
शिशु	हे शिशो
वधू	हा वधु
मातृ	हा मातः
राजा	हे राजन्

शब्द	सम्बोधन पद
भगवान्	हे भगवन्
ज्ञानी	हे ज्ञानिन्
मतिमान्	हे मतिमन्

ऊपर जो सम्बोधन के रूप दिखाये गये हैं, वह सब संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार हैं और प्राय: बँगला भाषामें संस्कृत के क़ायदे से ही रूपान्तर होकर सम्बोधन व्यवहार किये जाते हैं; लेकिन बहुत से बँगला व्याकरणाचार्य्यों का मत है कि बँगला में सम्बोधन पद के रूप ठीक कर्त्ताकारक की तरह होते हैं। जैसे; हे पिता, रे दुर्म्मति, हे शिशु, ओ सखा, हा भगवान् इत्यादि; लेकिन अधिकाँश लोगोंने संस्कृत का क़ायदा ही ठीक माना है।

"शकुन्तला" शब्द आकारान्त है यानी शकुन्तला का अन्तिम अक्षर "आ" है। आकारान्त सभी शब्दों का रूप सम्बोधन में शकुन्तला के समान होगा। जैसे;—अयि शकुन्तले, दुर्गे इत्यादि।

"दुर्म्मति" शब्द इकारान्त है यानी दुर्म्मति शब्दका अन्तिम अक्षर "इ" है। इकारान्त शब्दों के रूप सम्बोधन में "दुर्म्मतिके" समान होंगे। जैसे;—रे दुर्म्मते, हे कवे।

इसी तरह सम्बोधनमें ईकारान्त शब्दोंके रूप "प्रेयसि"; उकारान्त शब्दोंके रूप "शिशो"; ऊकारान्त शब्दोंके रूप

"वधु" ; ऋकारान्त शब्दोंके रूप "मातः" ; नकारान्त रूप "राजन्" की तरह होंगे ।

अर्थ विशेषमें विभक्ति निर्णय ।

जहाँ বিনা, ব্যতিরেকে, ব্যতীত, ঐ, ভিন্ন इत्यादि इस्तेमाल किये जाते हैं, वहाँ इनके पहिले का पद के अनुरूप होता है । जैसे ;—

ধন বিনা সুখ হয় না ।

धन बिना सुख नहीं होता ।

তাঁহাকে ভিন্ন কাজ হইবে না ।

उसके सिवाय और से काम न होगा ।

धिक् और नमस्कारार्थ शब्दोंका योग होने से, प शब्द में कर्म की विभक्ति लगती है—यानी शब्द के "কে" लगाना होता है । जैसे ;—

মূর্খকে ধিক् तोমাকে নমস্কার
মূর্খকে ধিক্ — তোমাকে নমস্কার

मूर्खको धिक्कार । — तुमको नमस्कार

जिन शब्दों के साथ সহিত, প্রতি, সমান, তুল্য, সমান, इत्यादि शब्दोंका योग होता है अथवा जिन श साथ ये शब्द लगाये जाते हैं, उन शब्दों में सम्बन्ध विभक्तियाँ लगती हैं । जैसे ;—

তোমার সহিত । — বাক্যের উপরি ।

তাহার সঙ্গে। রামের তুল্য।

আমার প্রতি। তোমার সমান।

प्राधान्य-वाचक शब्दों का योग होने से भी "सम्बन्ध" की विभक्ति लगती है। जैसे ;—

পর্ব্বতের প্রধান হিমালয়।

কবির শ্রেষ্ঠ কালিদাস।

ধার্ম্মিকের শিরোমণি নল।

अपेक्षार्थ शब्द के परे होने से, पहले के पदको "निर्द्धार" कहते हैं। जैसे ;—

রাম অপেক্ষা শ্যাম সুশীল।

তৈল অপেক্ষা ঘৃত ভাল।

इन दोनों वाक्योंमें "राम" और "तैल" निर्द्धार पद हैं।

शब्दरूप।

विशेष्य पद के लिङ्ग, पुरुष, वचन प्रभृति निरूपित हो चुके हैं। अब शिक्षार्थियोंके जानने के लिये शब्दरूप दिखा देते हैं।

पुंलिंग 'मानव' शब्द।

कारक	एकबचन	बहुबचन
कर्त्ता	মানব	মানবেরা
	मनुष्य, मनुष्यने	मनुष्य, मनुष्योंने

কারক	একবচন	বহুবচন
কর্ম	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको	मनुष्योंको
করণ	মানব দ্বারা	মানবদিগের দ্বারা
	मनुष्यसे	मनुष्योंसे
সম্প্রদান	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको, के, लिये	मनुष्योंको, के, लि
অপাদান	মানব হইতে	মানব সকল হইতে
	मनुष्य से	मनुष्यों से
অধিকরণ	মানবে	মানব সকলে
	मनुष्यमें, पर	मनुष्योंमें, पर
সম্বন্ধ	মানবের	মানবদিগের
	मनुष्यका, के, की	मनुष्यों का,के,
সম্বোধন	হে মানব	হে মানবেরা
	हे मनुष्य	हे मनुष्यो

ফল শব্দ।

কারক	একবচন	বহুবচন
কর্ত্তা	ফল	ফল সকল
কর্ম	ফল	ফল সকল
করণ	ফল দ্বারা	ফল সকল

দ্বারা

पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप प्रायः ऊपर की तरह ही होते हैं। जिन शब्दों के कारक विशेष में विभक्तियों के भिन्न भिन्न रूप निरूपित किये गये हैं केवल उन्हीं शब्दोंमें कुछ भेद होता है। अर्थात् अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त प्रभृति शब्दोंके किसी किसी कारक में भिन्न रूप होते हैं।

जो शब्द संस्कृत शब्दों से कुछ रूपान्तर होकर बँगला में बरते जाते हैं, उनमें से कुछ शब्द उदाहरण के तौर पर नीचे दिये जाते हैं;—

संस्कृत	बँगला	संस्कृत	बँगला
সখি	সখা	ধনিন্	ধনী
পিতৃ	পিতা	তেজস্	তেজ
ত্বচ	ত্বক্	ফলতস্	ফলত
বণিজ্	বণিক্	বিদ্বস্	বিদ্বান্
মহৎ	মহান্	রাজন্	রাজা
পাপীয়স্	পাপীয়ান্	দিশ্	দিক্
মনস্	মন	যশস্	যশ
গুণবৎ	গুণবান্	বুদ্ধিমৎ	বুদ্ধিমান্
উপানহ	উপানৎ	জ্যোতিস্	জ্যোতি
প্রেমন্	প্রেম	পথিন্	পথ
বেধস্	বেধাঃ		

विशेषण।

जिस शब्द के प्रयोग करने से किसी का गुण व प्रकाशित हो, उसे "विशेषण" या गुणवाचक शब्द कहते

जैसे—

শীতল জল = ठण्ढा पानी।

মিষ্ট ফল = मीठा फल।

উত্তম বালক = अच्छा बालक।

বৃদ্ধ অশ্ব = बूढ़ा घोड़ा।

মনোহর পুষ্প = मनोहर फूल।

পুরাতন বৃক্ষ = पुराना पेड़।

লোহিত বসন = लाल कपड़ा।

সৎ লোক = भला आदमी।

বড় গাছ = बड़ा पेड़।

ছোট ছেলে = छोटा लड़का।

অলস বালক = सुस्त बालक।

পাকা আম = पक्का आम।

শুষ্ক ভূমি = सूखी धरती।

গরম দুগ্ধ = गरम दूध।

কাল পাথর = काला पत्थर।

বিশুদ্ধ বায়ু = शुद्ध हवा।

इस जगह "शीतल" शब्द विशेषण है। क्योंकि इस शब्द से ही जल की शीतलता प्रकाशित होती है। इसी भाँति मिष्ट, वृद्ध प्रभृति शब्द भी विशेषण हैं। जिन शब्दों के नीचे काली काली रेखाएँ खींची हैं, वे सब विशेषण हैं।

कारक, बचन और पुरुष के भेद से विशेषण के रूपमें भेद नहीं होता। क्योंकि उसमें कारक आदि नहीं होते। केवल स्त्रीलिङ्ग में रूप-भेद होता है। जैसे; नवीना रमणी, গুণবতী ভার্য্যাকে, বিদ্যাবতী বালিকার।

कुछ विशेषण पद, कभी कभी, विशेषण के विशेषण होते हैं। जैसे; অত্যন্ত কঠিন, বড় মন্দ, অতি সুস্বাদু इत्यादि।

कितने ही विशेषण पद क्रिया के विशेषण हो जाते हैं। जैसे; শীঘ্র শিখিয়াছে, মন্দ মন্দ বহিতেছে।

सर्व्वनाम।

प्रसङ्ग क्रमसे एक व्यक्ति या एक वस्तुका ज़िक्र बारम्बार करना होता है; लेकिन बार बार एक ही व्यक्ति और एक ही वस्तुका ज़िक्र न करके उनके स्थानोंमें और बहुतसे पद इस्तेमाल करनेका क़ायदा है। इस तरह किसी पदकी जगह में जो पद आता है उसको "सर्व्वनाम" कहते हैं।

রাম বনে গেলেন, তাঁহার শোকে রাজা মরিলেন।

रामके वन जाने पर, उनके शोकमें राजा मर गये।

इस जगह "राम" इस पदकी जगह 'ताँहार' पद य
है; अतएव "ताँहार" पद सर्व्वनाम है।

जिस पदकी जगह सर्व्वनाम इस्तेमाल किया जात
उस पदका जो लिङ्ग और बचन होता है, सर्व्वनामका भी
लिङ्ग और बचन होता है; किन्तु स्त्रीलिङ्ग और पु
के भेदसे सर्व्वनाम में भेद नहीं होता। जैसे;

সীতা অত্যন্ত পতিব্রতা, তিনি পতিকে পরম দেবতা
মানিতেন।

सीता अत्यन्त पतिव्रता (थी), वह पतिको पर
कह कर मानती थी।

[२) অশ্বগণ বলিষ্ঠ জন্তু, তাহারা ভারী ভারী ব
দ্রুতবেগে চলিয়া যায়।

घोड़े बलवान् जानवर होते हैं, वे भारी भारी
तेज़ीसे चले जाते हैं।

यहाँ "सीता" स्त्रीलिङ्ग एक बचनान्त पद है
"तिनि" यह सर्व्वनाम भी स्त्रीलिङ्ग और एक
है। "अश्वगण" पुंलिङ्ग और बहुबचनान्त पद
लिये "ताहारा" यह सर्व्वनाम भी पुंलिङ्ग और
पद है।

विशेष्य पद की भाँति सर्व्वनाम पद के भी

और कारक होते हैं। विशेष्य पदका अर्थ देखकर ही वचन, पुरुष और कारक निर्णय किया जाता है।

सर्व्वनाम ये हैं—আমি, মুই, তুমি, তুই, আপনি, তিনি, সে, তাহা, তা, যিনি,যে, যাহা, ইনি, এ, ইহা, এই, উনি, ও, উহা, কে, সর্ব্ব, সব, উভয়, অন্য, ইতর, পর, অপর इत्यादि।

युष्मद्, अस्मद्, यद्, तद्, एतद्, इदम्, किम् इत्यादि; ये सब संस्कृत सर्व्वनाम हैं। इन सब के असल रूप भाषा में काम नहीं आते। इन सब के स्थानमें आमि, तुमि, से प्रभृति शब्द और उनके रूप भाषामें व्यवहार किये जाते हैं। संस्कृत सर्व्वनाम शब्द कृत, तद्धित् और समास में व्यवहार होते हैं।

कितने ही सर्व्वनाम शब्द विभक्तियोंके लगाने से और ही तरह के हो जाते हैं। जैसे;

मूलशब्द	चलित शब्द सम्भ्रान्तको	असम्भ्रान्तको
অস্মদ্	আমি	
ভবৎ	আপনি	
যুস্মদ্	তুমি	তুই
যদ্	যাহা, যা, তিনি,	যে
তদ্	তাহা, তা, তিনি	সে
ইদম্ } এতদ্ }	এহ, ইহা, ইনি	এ

अदस्	ঐ, উহা, উনি	ও
किम्	কে, কি, কোন্	
सर्व्व	সব	

विभक्ति-योग के समय अन्य, पर, उभय, इतर प्रभृ कितने ही शब्दों में कुछ रद्द बदल नहीं होता अर्थात् ये के ऐसे ही रहते हैं।

सर्व्वनाम शब्दके रूप ।

अस्मद् शब्द ।

	एकबचन	बहुबचन
कर्त्ता	আমি	আমরা
	मैं, मैंने	**हम, हमने**
कर्म्म	আমাকে	আমাদিগকে
	मुझे, मुझको	**हमें, हमको**
करण	আমা দ্বারা	আমাদিগের দ্বারা
	मुझ से	**हम से**
सम्प्रदान	আমাকে	আমাদিগকে
	मुझे, मुझको	**हमें, हमको**
अपादान	আমা হইতে	আমাদিগের হ
	मुझसे	**हम से**

अधिकरण	আমাতে	আমাদিগের মধ্যে
	मुझमें, मुझपर	हममें, हम पर
सम्बन्ध	আমার	আমাদিগের
	मेरा	हमारा

"যে" शब्द पुं॰ व स्त्री॰

	एकवचन	वहुवचन
कर्त्ता	যে	যাহারা
	जिसने	जिन्होंने
कर्म	যাহাকে	যাহাদিগকে
	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको

इत्यादि।

"সে" शब्द पुं॰ व स्त्री॰

कर्त्ता	সে	তাহারা
	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	তাহাকে	তাহাদিগকে
	उसको	उनको

आदर प्रकाशनार्थ "যে" के स्थानमें "যিনি"; "যাহারা" के स्थानमें যাঁহারা; সে के स्थानमें "তিনি"; "তাহারা" के स्थानमें "তাঁহারা" इत्यादि इस्तेमाल किये जाते हैं।

और सब सर्व्वनामों के रूप भी ऐसे ही होते हैं। सर्व्वनाममें "सम्बोधन" नहीं होता केवल सात कारक होते हैं।

অব্যয়।

জিস শব্দকে বাদ কোই বিভক্তি ন হো, কারক-ভেদ জিসকে রূপমেঁ ভেদ ন হো, এবং জিসকা লিঙ্গ ঔর বচন ন উসকো "অব্যয়" কহতে হৈঁ।

সংযোজক, বিয়োজক আদি ভেদোঁসে অব্যয় অনেক প্রকা হোতে হৈঁ। সংযোজক অব্যয় যে হৈঁ—এবং, ও, আর, অ. অপিচ, কিন্তু, অথচ, যদি, যদ্যপি, যেহেতু, যেন, বরং, সুত কেননা, কাজে, কাজের ইত্যাদি।

বিয়োজক অব্যয় যে হৈঁ—বা, কিংবা, অথবা, নতুবা, তথাপি, তথাচ,না হয়, নয় ত, নহিলে, নচেৎ, অন্যথা ইত্যা

শোক ঔর বিস্ময় আদি সূচক অব্যয় যে হৈঁ—আঃ, হায়, হা, উহু, ছিছি, রাম রাম, হরি হরি ইত্যাদি।

প্র, পরা, অপ, সম্, অব, অনু, নির, দুর্, বি, উত্, পরি, প্রতি,অভি, অতি, অপি, উপ, আ, এই, ই, ইন্হেঁ সর্গ" কহতে হৈঁ।

উপরোক্ত উপসর্গ জব ক্রিয়া-বাচক পদকে পহলে লগ হৈঁ তব বহ ক্রিয়া-বাচক পদ ভিন্ন ভিন্ন অর্থ প্রকাশ হৈ। জৈসে;

দান = দেনা	আদান = লেনা
গমন = জানা	আগমন = আনা
অপকার = বুরাই	উপকার = ভ

क्रिया प्रकरण।

होना, करना प्रभृतिको "क्रिया" कहते हैं। जिन शब्दोंसे यह क्रिया समझी जाती है, उनको "क्रिया पद" कहते हैं। जैसे; হইতেছে, করিতেছে इत्यादि।

भू, कृ, दृश्, गम प्रभृतिको धातु कहते हैं। ये ही क्रिया की मूल होती हैं।

क्रिया दो तरह की होती हैं:—

(१) सकर्म्मक।

(२) अकर्म्मक।

जिन क्रियाओं के कर्म नहीं होते, वह सब क्रियाएँ, अर्थात् হওয়া, যাওয়া, বসা, থাকা, পড়া, জাগা, মরা, বাঁচা, হাসা, নাচা, খেলা, কাঁদা, কাঁপা प्रभृति धातुओंकी क्रियाएँ अकर्म्मक होती हैं; क्योंकि इन सब क्रियाओं के कर्म नहीं होते। जैसे; বৃষ্টি হইতেছে, বৃক্ষটি মরিয়াছে इत्यादि। यहाँ हइतेछे, मरियाछे, ये दो क्रिया हैं लेकिन इनके कर्म नहीं हैं; इसवास्ते ये अकर्म्मक हैं।

जिन क्रियाओं के कर्म होते हैं, वह सब क्रियाएँ अर्थात् খাওয়া, দেখা, পাঠ করা प्रभृति धातुओंको क्रिया सकर्म्मक होती हैं; क्योंकि इन सब क्रियाओं के कर्म होते हैं। जैसे;

ঈশ্বর সকল করিতেছেন।

ईश्वर सब करता है।

সে পুস্তক পড়িতেছে।

वह पुस्तक पढ़ता है।

রাম অন্ন ভক্ষণ করিল।

रामने अन्न खाया।

द्विकर्म्मक क्रिया।

বলা, লেখা, জিজ্ঞাসা, দেখান, বুঝান प्रभृति क्रियाओंके दो कर्म्म होते हैं। इसी कारणसे इनको द्विकर्म्मक क्रिया कहते हैं। जैसे;

রাম ব্রজকে তোমার কথা বলিয়াছে।

रामने ब्रजको तुम्हारी बात बोल दी है।

আমি আজ তাঁহাকে সে বিষয় জিজ্ঞাসা করিব।

मैं आज उनसे इस विषयमें पूछूँगा।

ললিত শরৎকে পাখী দেখাইতেছেন।

ललित् शरत्को पक्षी दिखाता है।

पहिले उदाहरणमें "ब्रजके" और "कथा" ये दो कर्म "बलियाछे" क्रियाके हैं। दूसरे में "ताँहाके" और "विषय" ये दो क "जिज्ञासा" क्रियाके हैं। तीसरे में "शरत्के" और "पाखी" दो कर्म "देखाइतेछेन" क्रिया के हैं।

क्रियाके जिस अङ्ग से काम के होनेका समय पाया जाय उसे "काल" कहते हैं।

काल तीन प्रकार के होते हैं :—

(१) वर्त्तमान।
(२) अतीत।
(३) भविष्यत्।

वर्त्तमान काल से यह पाया जाता है कि क्रिया का कार्य्य अभी हो रहा है। जैसे ; শিশু খেলিতেছে। यहाँ खेलनेका काम आरम्भ हुआ है लेकिन समाप्त नहीं हुआ है। ऐसी दशामें 'खेलितेछे' इसी तरह के रूप प्रयोग किये जाते हैं। यही प्रकृत वर्त्तमान काल है।

अतीत काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका काम हो चुका है। अतीतकाल को भूतकाल भी कहते हैं। अपेक्षाकृत पूर्व्व पूर्व्व कालकी अतीत क्रियाको क्रमश: "अद्यतन" "अनद्यतन" और "परोक्ष" कहते हैं। जैसे ; শিশু খেলিল, শিশু খেলিত, শিশু খেলিয়াছিল।

भविष्यत् काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका कार्य्य आगे चलकर आरम्भ होनेवाला है। जैसे ; শিশু খেলিবে।

विधि, अनुज्ञा, सम्भावना प्रभृति क्रियाएँ और भी होती हैं।

किसी विषय के नियम बाँधनेको जो क्रिया इस्तेमाल

की जाती है उसे "विधि" कहते हैं। ऐसी क्रिया से किसी काल का बोध नहीं होता। जैसे;

গুরুজনকে ভক্তি করিও।

गुरु जन में भक्ति रक्खो।

किसी विषय की आज्ञा या अनुमति देनेको "अनुज्ञा" कहते हैं। जैसे;

সে দেখুক = उसे देखने दो।

তুমি যাও = तुम जाओ।

বাড়ী যাও = घर जाओ।

চুরি করিও না = चोरी मत करना।

কার্য্যে ন্যায় ব্যবহার করিও।

काम में न्याय से काम लो।

প্রতিবাসীকে আত্মবৎ প্রীতি কর।

पड़ोसी से अपने समान प्रीति कर।

অনুগ্রহ করিয়া আমাকে একখানি পুস্তক পড়িতে দিন।

कृपया मुझे एक पुस्तक पढ़ने को दीजिये।

यह होनेसे यह हो सकेगा, इस तरह के ज्ञान को "सम्भावना" कहते हैं। जैसे;

সে পাইতে পারে = वह पा सकता है।

তিনি যাইতে পারেন = वह जा सकते हैं।

আমি দিতে পারি = मैं दे सकता हूँ।

किस धातुका, कौन पुरुष, कौन कालमें, कैसा रूप होगा; ऐसे पद विन्यास को "धातुरूप" कहते हैं।

वर्त्तमान काल।

হওয়া ধাতু।

উত্তম পুরুষ	মধ্যম পুরুষ	প্রথম পুরুষ
হইতেছি	হইতেছ	হইতেছে

अतीत काल।

উত্তম পুরুষ	মধ্যম পুরুষ	প্রথম পুরুষ
হইলাম	হইলে	হইল
হইয়াছি	হইয়াছ	হইয়াছে
হইয়াছিলাম	হইয়াছিলে	হইয়াছিল

भविष्यत् काल।

উত্তম পুরুষ	মধ্যম পুরুষ	প্রথম পুরুষ
হইব	হইবে	হইবে

वर्त्तमान काल।

করা ধাতু।

উত্তম পুরুষ	মধ্যম পুরুষ	প্রথম পুরুষ
করিতেছি	করিতেছ	করিতেছে

अतीत काल।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
করিলাম	করিলে	করিল
করিয়াছি	করিয়াছ	করিয়াছে
করিয়াছিলাম	করিয়াছিলে	করিয়াছিল

क्रियाओंके रूप समझने में कुछ कठिनता पड़ती है इस लिये हम नीचे कुछ उदाहरण और भी दे देते हैं।

सामान्य भूतकाल।

(Past Indefinite Tense.)

	एक बचन	बहुबचन
उ० पु०	আমি গিয়াছিলাম	আমরা গিয়াছিলাম
	मैं गया	हम गये
म० पु०	তুমি গিয়াছিলে	তোমরা গিয়াছিলে
	तुम गये	तुम लोग गये
प्र० पु०	সে গিয়াছিল	তাহারা গিয়াছিল
	वह गया	वे गये

आसन्न भूतकाल ।

(Present Perfect Tense.)

	एक बचन	बहुबचन
उ० पु०	আমি গিয়াছি	আমরা গিয়াছি
	मैं गया हूँ	हम गये हैं
म० पु०	তুমি গিয়াছ	তোমরা গিয়াছ
	तुम गये हो	तुम लोग गये हो
प्र० पु०	সে গিয়াছে	তাহারা গিয়াছে
	वह गया है	वे गये हैं

भविष्यत् काल ।

(Future Indefinite.)

	एक बचन	बहुबचन
उ० पु०	আমি যাইব	আমরা যাইব
	मैं जाऊँगा	हम जायँगे
म० पु०	তুমি যাইবে	তোমরা যাইবে
	तुम जाओगे	तुम लोग जाओगे
प्र० पु०	সে যাইবে	তাহারা যাইবে
	वह जायगा	वे जायँगे

कभी कभी सकर्म्मक क्रिया के कर्मपद नहीं होता। उस समय सकर्म्मक क्रिया अकर्म्मक की तरह काम करती है। जैसे ;

আমি দেখিলাম = मैंने देखा।

তিনি লয়েন নাই = उन्होंने नहीं लिया।

यहाँ "দেখা" और "লওয়া" क्रियाओं के सकर्मक होने पर भी, कर्म पद के न होनेसे, वे अकर्म्मक के समान हो गयी हैं।

बचन-भेद से क्रियाके रूप में फर्क नहीं होता। जैसे ;

আমি করিতেছি = मैं करता हूँ।

আমরা করিতেছি = हम लोग करते हैं।

इस जगह दोनों बचनों में ही एक ही प्रकार की क्रिया का प्रयोग हुआ है। लेकिन हिन्दीमें ऐसा नहीं है। हिन्दीमें बचनके अनुसार क्रियामें भेद हो जाता है। जैसे ; मैं करता हूँ और हम करते हैं। बँगला में "आमि" एक बचनके लिये "करितेछि" और "आमरा" बहुबचनके लिये भी "करितेछि" एक ही प्रकार की क्रिया इस्तेमाल की गयी है। लेकिन हिन्दीमें "मैं" के लिये "करता हूँ" और "हम" के लिये "करते हैं" भिन्न भिन्न रूप की क्रियाओंका प्रयोग किया गया है।

पुरुष और काल भेद से क्रिया का रूपान्तर हो जाता है। "आमि" इस पद की क्रिया को उत्तम पुरुष की क्रिया कहते

हैं। "तुम" इस पद की क्रियाको मध्यम पुरुष की क्रिया कहते हैं। इन के सिवाय और पद की क्रिया को प्रथम पुरुष की क्रिया कहते हैं। जैसे ;—

আমি করিতেছি = मैं करता हूँ।

তুমি করিতেছ = तुम करते हो।

সে করিতেছে = वह करता है।

"आमि" उत्तम पुरुष है, उसकी क्रिया भी उत्तम पुरुष है। "तुमि" मध्यम पुरुष है, उस की क्रिया भी मध्यम पुरुष है। "से" प्रथम पुरुष है, उस की क्रिया भी प्रथम पुरुष है।

प्रथम पुरुष (3rd Person) के सम्भ्रान्त या माननीय होने से क्रियाके अन्तमें "न" और लगा दिया जाता है। जैसे ;—

(१) তিনি করিয়াছেন = उन्होंने किया।

(२) সে করিয়াছে = उसने किया।

पहले उदाहरण में "तिनि" प्रथमपुरुष और आदरणीय है इसी से उसकी क्रिया "करियाछे" में "न" जोड़ दिया गया है ; किन्तु "से" प्रथम पुरुष और साधारण मनुष्य है इससे उसकी क्रियामें "न" नहीं जोड़ा गया है।

कृदन्त।

जिस क्रियाके द्वारा वाक्य की समाप्ति न हो, वाक्य को

समाप्ति करनेके लिये एक और क्रिया को दरकार पड़े, उसको "असमापिका क्रिया" कहते हैं। जैसे ; বলিয়া, করিতে, যাইতে इत्यादि।

जिस जगह एक क्रिया करने पर और एक क्रिया करने की बात कहनी पड़े, उस जगह पहली क्रिया के अन्तमें "লে" जोड़ना पड़ता है। जैसे—

তিনি বলিলে আমি যাইব।

उनके बोलनेसे जाऊँगा।

इसी तरह করিলে, দিলে इत्यादि समझो।

निमित्त अर्थमें क्रियाके पीछे "তে" जोड़ा जाता है। जैसे ;

দিতে=দিবার নিমিত্ত=देनेके लिये।

যাইতে=যাইবার নিমিত্ত=जानेके वास्ते।

अनन्तरके अर्थमें धातुके बाद "য়া" जोड़ा जाता है। जैसे ;

যাইয়া=গমনানন্তর=जाकर।

দিয়া=দানানন্তর=देकर।

শুইয়া=শয়নানন্তর=सोकर इत्यादि।

जब क्रिया को विशेष्य पद करना होता है तब उसके बाद "অ", "ওয়া" इनमें से एकको जोड़ना होता है। जैसे ;

বলা বা বলিবা=बोलना।

করা বা করিবা=करना।

যাওয়া বা যাইবা=जाना।

धातुके उत्तर कुछ प्रत्यय लगाकर शब्द बना सकते हैं।

ऐसे प्रत्ययोंका नाम "कृत" और निष्पन्न पदोंका नाम "कृदन्त" है।

धातुके उत्तर "अन" और "ति" प्रत्यय होते हैं। "अन" और "ति" प्रत्ययान्त पद प्राय: ही क्रिया-वाचक विशेष्य होते हैं। जिन पदोंके अन्तमें "ति" होती है ये स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
স্তু	অন, তি	স্তবন, স্তুতি	স্তবন করা
स्तु	अन, ति	स्तवन, स्तुति	स्तवन करनेका काम
কৃ	অন, তি	করণ, কৃতি	করা
कृ	अन, ति	करण, कृति	करना, काम
গম	অন, তি	গমন, গতি	যাওয়া
गम	अन, ति	गमन, गति	जानेका काम
মন	অন, তি	মনন, মতি	মানা
मन	अन, ति	मनना, मति	मानना, मति
দৃশ	অন, তি	দর্শন, দৃষ্টি	—দেখা
दृश	अन, ति	दर्शन, दृष्टि	देखनेका काम
সৃজ	অন, তি	সর্জ্জন, সৃষ্টি	প্রস্তুত করা
सृज	अन, ति	सर्ज्जन, सृष्टि	प्रस्तुत करनेका काम
বচ	অন, তি	বচন, উক্তি	বলা
बच	अन, ति	बचन, उक्ति	बोलनेका काम

धातुके उत्तर कर्म वाच्य और अतीत कालमें "त" प्रत्यय

होता है। जिनके अन्तमें "त" प्रत्यय होता है वे पद प्रायः ही कर्मके विशेषण होते हैं। जैसे ;

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
কৃ	ত (ক্ত)	কৃত	जो किया गया है।
শ্রু	ত	শ্রুত	जो सुना गया है।
বি+স্তৃ	ত	বিস্তীর্ণ	जो व्याप्त है।
ভক্ষ	ত	ভক্ষিত	जो खाया गया है।
বচ	ত	উক্ত	जो कहा गया है।
যুজ	ত	যুক্ত	जो जोड़ा गया है।
দ	ত	দত্ত	जो दिया गया है।
গৈ	ত	গীত	जो गाया गया है।
জ্ঞা	ত	জ্ঞাত	जो जाना गया है।
বন্ধ	ত	বদ্ধ	जो बाँधा गया है।
ভজ	ত	ভক্ত	जो भजा गया है।
পা	ত	পাত	जो पिया गया है।
বি+ধ	ত	বিহিত	जो किया गया है।
ভুজ	ত	ভুক্ত	जो खाया गया है।
ছিদ	ত	ছিন্ন	जो काटा गया है।

धातुके उत्तर "ता" (तृन्), "ई" (णिन्) "अक" (णक), "अन" प्रभृति प्रत्यय लगाये जाते हैं। जिनके अन्तमें ये प्रत्यय होते हैं वे कर्त्ताके विशेषण होते हैं।

अकर्मक धातुके कर्त्तृवाच्य अतीत कालमें "त" (क्त) लगाया जाता है। जैसे ;

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
দা	তা (তৃণ)	দাতা	जो दे।
শ্রু	তা	শ্রোতা	जो सुने।
জি	তা	জেতা	जो जय करे।
কৃ	তা	কর্ত্তা	जो करे।
বচ	তা	বক্তা	जो बोले।
ভুজ	তা	ভোক্তা	जो खाय।
গ্রহ	তা	গ্রহীতা	जो ग्रहण करे।
সৃজ	তা	স্রষ্টা	जो रचे।
স্থা	ঈ (ণিন)	স্থায়ী	जो स्थिर रहे।
ভূ	ঈ	ভাবী	जो हो।
দা	ঈ	দায়ী	जो दान करे।
যুজ	ঈ	যোগী	जो योग करे।
জি	ঈ	জয়ী	जो जय करे।
কৃ	অক	কারক	जो करे।
ভজ	অক	ভাজক	जो भाग करे।
যুজ	অক	যোজক	जो योग करे।
নিন্দ	অক	নিন্দক	जो निन्दा करे।
পঠ	অক	পাঠক	जो पढ़े।
পচ	অক	পাচক	जो पाक करे।

धातु	प्रत्यय	शब्द	अर्थ
গ্রহ	অক	গ্রাহক	जो ग्रहण करे।
গৈ	অক	গায়ক	जो गान करे।
হন	অক	ঘাতক	जो मारे।
দৃশ	অক	দর্শক	जो देखे।
নৃত	অক	নর্ত্তক	जो नाचे।
দা	অক	দায়ক	जो दान करे।
শী	অক	শায়ক	जो सोवे।
রুধ্	অক	রোধক	जो रोध करे।
স্তু	অক	স্তাবক	जो स्तव करे।
ভূ	অক	ভাবক	जो हो।
হৃ	অক	হারক	जो हरण करे।
ছিদ্	অক	ছেদক	जो काटे।
গম	ত (ক্ত)	গত	जो बीत गया।
শ্রম	ত	শ্রান্ত	थका हुआ।
জন	ত	জাত	पैदा हुआ।
ভূ	ত	ভূত	जो हुआ है।
ভিদ	ত	ভিন্ন	छोड़ा हुआ।
মদ	ত	মত্ত	मतवाला।
মৃ	ত	মৃত	जो मर गया।

धातुके उत्तर "तव्य", "अनीय" और "य" प्रत्यय है। जिन धातुओंके बाद ये प्रत्यय लगते हैं वे सब ध कर्म कारक के विशेषण होते हैं और भविष्यत् का अर्थ प्रकाश करते हैं। जैसे:

ধাতু	প্রত্যয়	পদ	অর্থ
শ্রু	তব্য, অনীয়, য়	শ্রোতব্য, শ্রবণীয়, শ্রব্য	যাহা শুনা যায়।
श्रु	तव्य, अनीय, य	श्रोतव्य, श्रवणीय, श्रव्य	जो सुना जाय।
গ্রহ	তব্য, অনীয়, য	গ্রহীতব্য, গ্রহণীয়, গ্রাহ্য	যাহা লওয়া যায়।
ग्रह	तव्य, अनीय, य	ग्रहीतव्य, ग्रहणीय, ग्राह्य	जो लिया जाय।
গম	তব্য, অনীয়, য়	গন্তব্য, গমনীয়, গম্য	যেখানে যাওয়া যায়।
गम	तव्य, अनीय, य	गन्तव्य, गमनीय, गम्य	जाने योग्य, जहाँ जाया जाय।
ভুজ	তব্য, অনীয়, য়	ভোক্তব্য, ভোজনীয়, ভোজ্য	যাহা খাওয়া যায়।
भुज	तव्य, अनीय, य	भोक्तव्य, भोजनीय, भोज्य	जो खाया जाय, खाने योग्य।
কৃ	তব্য, অনীয়, য়	কর্ত্তব্য, করণীয়, কার্য্য	যাহা করা যায়।
कृ	तव्य, अनीय, य	कर्त्तव्य, करणीय, कार्य्य	जो करा जाय, करने योग्य।
পা	তব্য, অনীয়, য়	পাতব্য, পানীয়, পেয়	যাহা পান করা যায়।
पा	तव्य, अनीय, य	पातव्य, पानीय, पेय	जो पिया जाय, पीने योग्य।

पूर्णार्थ प्रत्यय युक्त पद :—

দ্বিতীয়	दूसरा	উনবিংশতিতম	उन्नीसवाँ
তৃতীয়	तीसरा	বিংশ	बीसवाँ
চতুর্থ	चौथा	একবিংশ	इक्कीसवाँ
পঞ্চম	पाँचवाँ	একবিংশতিতম	इक्कीसवाँ
ষষ্ঠ	छठा	ষষ্টিতম	साठवाँ
সপ্তম	सातवाँ	সপ্ততিতম	सत्तरवाँ
অষ্টম	आठवाँ	অশীতিতম	अस्सीवाँ
নবম	नवाँ	নবতিতম	नब्बेवाँ
দশম	दशवाँ	শততম	सौवाँ
একাদশ	ग्यारहवाँ	পঞ্চষষ্টিতম	पैंसठवाँ
দ্বাদশ	बारहवाँ		
ত্রয়োদশ	तेरहवाँ		

गुणवाचक शब्दके उत्तर आधिक्य के अर्थके लिये "तर" "तम" "इष्ठ" और "ईयस्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ;

शब्द	तर	तम	इष्ठ	ईयस्
গুরু	গুরুতর	গুরুতম	গরিষ্ঠ	গরীয়ান্
অল্প	অল্পতব	অল্পতম	অল্পিষ্ঠ	অল্পীয়ান্
প্রশস্ত	প্রশস্ততর	প্রশস্ততম	শ্রেষ্ঠ	শ্রেয়ান্
বৃদ্ধ	বৃদ্ধতর	বৃদ্ধতম	বর্ষিষ্ঠ	বর্ষিয়ান্

शब्दके बाद <u>तुल्यार्थ</u> प्रगट करनेके लिये "वत्" और "कल्प" लगाते हैं। जैसे;

জলবৎ	जलके समान
গুরুবৎ	गुरुके समान
অধ্যাপককল্প	अध्यापकके समान

संख्यावाचक शब्दके बाद प्रकार अर्थ में "धा" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे, দ্বিধা, তৃধা, শতধা, इत्यादि।

स्वरूपके अर्थमें शब्दके पीछे "मय" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे; স্বর্ণময়, মৃণ্ময়, কাষ্ঠময়, इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद कालके अर्थ में "दा" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे; সর্ববদা, একদা, इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद आधार अर्थ में "त्र" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे; সর্ববত্র, অন্যত্র, একত্র इत्यादि।

कालवाचक शब्दके बाद उत्पन्न अर्थमें "তন" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे; পূর্ববতন, অধুনাতন इत्यादि।

किम् शब्द निष्पन्नपदके पीछे अनिश्चय अर्थ में "চিৎ" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे; কিঞ্চিৎ, কদাচিৎ इत्यादि।

समास।

जब दो तीन अथवा अधिक पद अपने कारकों के चिन्हों को त्याग कर आपस में मिल जाते हैं तब उनके योग को "समास" कहते हैं और उन के योग से जो शब्द बनता है उसे "सामासिक" शब्द कहते हैं। जैसे; ফল ও মূল—इन

दो पृथक पदोंको "फल मूल" इस तरह एक पद बना कर भी काम में ला सकते हैं। अग्नि, জল ও বায়ু—इन तीनोंको एक पद बना कर "অগ্নি জল বায়ু" इस तरह प्रयोग कर सकते हैं। 'রাজার বাটী' इन दोनों पदों को "রাজবাটি" इस भाँति एक पद करके प्रयोग कर सकते हैं। कई शब्दोंको मिला कर इस भाँति एक पद करने को ही समास कहते हैं।

समास पाँच प्रकार को होती हैं—द्वन्द, तत्पुरुष, कर्म्मधारय, बहुव्रीहि, और अव्ययीभाव।

हिन्दीमें समास छः प्रकार को मानी हैं। उसमें इन सिवाय "द्विगु" समास और मानी है।

द्वन्द।

द्वन्द वह है जिसमें कई पदोंके बीच "और" (ও) लोप करके एक पद बना लिया जाय। जैसे;

ফল ও ফুল = ফলফুল রাজা ও রাণী = রাজারাণী

মাতা ও পিতা = মাতাপিতা রাম ও লক্ষ্মণ = রামলক্ষ্ম

तत्पुरुष।

तत्पुरुष समास उसे कहते हैं जिस में पहला पद क कारक को छोड़ दूसरे किसी भी कारक के चिन्ह सहित और इसी पदका अर्थ प्रधान हो।

कर्मपद के साथ जो समास होती है उसे द्वितीया तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे;

বিস্ময়কে আপন্ন = বিস্ময়াপন্ন।

পরলোককে প্রাপ্ত = পরলোক প্রাপ্ত।

करण पदके साथ जो समास होती है उसे तृतीया तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे;

শোক দ্বারা আকুল = শোকাকুল।

মোহ দ্বাবা অন্ধ = মোহান্ধ।

আত্মা দ্বারা কৃত = আত্মকৃত।

अपादान पदके साथ जो समास होती है उसे पञ्चमी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे;

পাপ হইতে মুক্ত = পাপমুক্ত।

বৃক্ষ হইতে উৎপন্ন = বৃক্ষোৎপন্ন।

सम्बन्ध पद के साथ जो समास होती है उसे षष्ठी तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे;

বিশ্বের পিতা = বিশ্বপিতা।

চন্দ্রের দর্শন = চন্দ্রদর্শন।

রাজাব পুত্র = রাজপুত্র।

अधिकरण पद के साथ जो समास होती है उसको सप्तमी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे;

গৃহে বাস = গৃহবাস।

হস্তে স্থিত = হস্তস্থিত।

স্বর্গে গত = স্বর্গগত ।

हीन, जन प्रभृति कितने ही शब्दों के योग से होती तत्पुरुष समास होती है । जैसे ;

জ্ঞান দ্বারা হীন = জ্ঞানহীন ।

বিদ্যা দ্বারা শূন্য = বিদ্যাশূন্য ।

कर्म्मधारय ।

जिसमें विशेषण का विशेष्य के साथ सम्बन्ध हो उसे क धारय समास कहते हैं ।

इस समास में विशेषण (Adjective) पद पहले विशेष्यपद (Noun) पीछे रहता है और विशेष्यपद (Noun का अर्थ ही प्रधान रूप से प्रकाशित होता है । जैसे ;

পরম + আত্মা = পরমাত্মা । মহা + রাজ = মহারাজ ।

পরম + ঈশ্বর = পরমেশ্বর । সৎ + কর্ম্ম = সৎকর্ম্ম ।

यहाँ परम और आत्मा इन दो पदों में समास हुई है परम पद विशेषण और आत्मा पद विशेष्य है । विशेषण प पहिले और विशेष्य पद पीछे है और उसके ही अर्थ ने रूपसे प्रकाश पाया है ; बस, इसी कारण से इसे "कर्मधारय" समास कहते हैं ।

बहुव्रीहि।

बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन या अधिक पदोंका योग होकर जो शब्द बने उसका सम्बन्ध और किसी पद से हो। इस की परिभाषा इस भाँति भी हो सकती है—विशेष्य विशेषण अथवा दो या उससे अधिक विशेष्य-पदों में समास करने पर यदि उन शब्दोंका अर्थ प्रकाशित न होकर किसी और ही वस्तु या व्यक्ति का अर्थ प्रकाशित हो तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

बहुव्रीहि समास करने पर सारे पद प्रायः विशेषण होते हैं; कभी कभी विशेष्य भी होते हैं। जैसे; क्षीण-काय, यहाँ क्षीण और काय इन दो पदों में समास हुई, है। क्षीण विशेषण और काय विशेष्य है; किन्तु इन दोनों पदोंका अर्थ पृथक पृथक भाव से बोध नहीं होता, क्षीण-काय विशिष्ट कोई व्यक्ति बोध होता है; अतएव यहाँ बहुव्रीहि समास हुई।

क्षीणकाय, इस पदसे यदि कृश शरीर यही अर्थ समझा जाय और उससे कुछ व्याघात न हो, तो कर्मधारय समास हुई समझनी होगी; क्योंकि इस जगह विशेष्य पद का अर्थ ही प्रधान रूपसे प्रकाश पाता है।

चक्रपाणि, यहाँ भी चक्र पद विशेष्य है। उसका अर्थ

চাকা যা পহিয়া হৈ; পাণি পদ भी বিশেষ্য हैं उसका अर्थ हाथ है। इन दोनों को समास होने से চক্রপাণি यह एक पद हुआ। इस से चक्र और हाथ, इन दोनों का कुछ अर्थ न निकलने के कारण नारायण रूप अर्थ का बोध होता है। अतएव यह बहुव्रीहि समास है और चक्रपाणि पद विशेष्य पद है।

इस समास में যার, যাতে, যা, দ্বারা इत्यादि पद व्यवहार किये जाते हैं। যে या যাহা प्रायः व्यवहृत नहीं होते। जैसे;

পীত অম্বর যার, সে পীতাম্বর অর্থাৎ কৃষ্ণ।
বৃহৎ কায় যার, সে বৃহৎকায়।
জিত ইন্দ্রিয় যাহা কর্ত্তৃক, সে জিতেন্দ্রিয়।
স্বচ্ছ তোয় আছে যাতে, সে স্বচ্ছতোয়।
পাণিতে চক্র যার, সে চক্রপাণি।
নষ্ট মতি যার, সে নষ্টমতি।
মহৎ আশয় যার, সে মহাশয়।
ন অন্ত যার, সে অনন্ত।
ন আদি যার, সে অনাদি।

नोट (१) बहुव्रीहि और कर्मधारय समासमें महत् शब्द पहिले होनेसे "महत्" की जगह "महा" हो जाता है। जैसे;

মহৎ বল যার, সে মহাবল।

(२) बहुव्रीहि और कर्मधारय समास का पहला पद स्त्रीलिंग का विशेषण हो तो वह पुंलिङ्ग की भाँति हो जाता है। जैसे;

দীর্ঘা যষ্টি = দীর্ঘ যষ্টি।

স্থিরা মতি = স্থির মতি।

यहाँ "यष्टि" शब्द स्त्रीलिङ्ग है और "दीर्घा" उसका विशेषण भी स्त्रीलिङ्ग है; किन्तु समास होने से विशेषण दीर्घा स्त्रीलिंग होनेपर भी पुंलिङ्ग की भाँति "दीर्घ" हो गया। इसी भाँति "स्थिरा" का "स्थिर" हो गया।

(३) समास में "न" इस अव्यय के बाद स्वरवर्ण होने से "न" के स्थान में "अन" हो जाता है लेकिन "न" के बाद व्यञ्जन वर्ण होनेसे "न" के स्थानमें "अ" हो जाता है। जैसे;

ন + অন্ত = অনন্ত।

ন + আদি = অনাদি।

ন + জ্ঞান = অজ্ঞান।

ন + সংস্থান = অসংস্থান।

यहाँ "न" के बाद "अ" स्वर आ गया; इससे "न" के स्थान में "अन" लगाया गया; इसी भाँति तीसरे उदाहरण में "न" के बाद "ज्ञ" व्यञ्जन आ गया; इस लिये "न" के स्थानमें "अ" लगाया गया।

(४) बहुव्रीहि समासमें परस्थित आकारान्त शब्द अकारान्त हो जाता है। जैसे;

वाक्य-रचना।

जिस पद समूह के द्वारा सम्पूर्ण अभिप्राय प्रकाश होता है, उसे "वाक्य" कहते हैं। जैसे;

(১) ঈশ্বর সকল করিতেছেন।

(২) বায়ু বহিতেছে।

(৩) হরি পুস্তক পড়িতেছে।

(৪) বৃষ্টি হইতেছে।

वाक्य के अन्तर्गत जो शब्द होते हैं, उनको रीतिमत यथास्थान स्थापित करनेको "वाक्यरचना" कहते हैं।

वाक्य-रचना के समय पहले कर्त्ता और उसके बाद क्रिया पद रखा जाता है। जैसे;

বৃষ্টি পড়িতেছে।

প্রভাত হইল।

সূর্য্য উদয় হইয়াছে।

नोट (१) कर्त्ता जिस पुरुष का होता है, क्रिया पद भी उसी पुरुष का होता है, बचन-भेद से क्रिया के रूप में भे नहीं होता। जैसे;

(১) { আমি যাইতেছি
আমরা যাইতেছি

(২) { তুমি যাইতেছ
তোমরা যাইতেছ }

(৩) { সে যাইতেছে
তাহারা যাইতেছে }

पहले उदाहरणमें "आमि" एकवचन और "आमरा" बहुवचन है; किन्तु दोनोंकी क्रिया एक ही है। दूसरे में "तुमि" एकवचन और "तोमरा" बहुवचन है; लेकिन दोनोकी क्रिया एक ही है। "आमि" और "आमरा" उत्तम पुरुष है। इनकी क्रिया "जाइतेछि" है और "तुमि" और "तोमरा" मध्यम पुरुष हैं। इनकी क्रिया "जाइतेछ" है। पुरुषके और होनेसे क्रिया भी बदल गयी।

नोट (२) जिस वाक्यमें उत्तम और मध्यम पुरुष किंवा प्रथम और उत्तम पुरुष अथवा प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष एक क्रिया के कर्त्ता हों, उस वाक्यमें उत्तम पुरुष की क्रिया ही व्यवहृत होगी। जैसे ;

আমি ও তুমি দেখিতেছিলাম।
তোমাতে ও আমাতে বসিব।
হরি ও আমি সেখানে যাইব।
আমি, তুমি ও হরি ইহা পড়িয়াছিলাম।

नोट (३) जहाँ प्रथम और मध्यम पुरुष एक क्रिया के कर्त्ता हों, वहाँ मध्यम पुरुष की ही क्रिया प्रयोग करनी होगी। जैसे ;

তুমি ও হরি সেখানে ছিলে।
তাহারা ও তোমরা ইহা দেখিয়াছিলে।
তাহাতে ও তোমাতে একত্র খাইয়াছ।

नोट (४) ऐसे वाक्योंमें सब का कर्त्ता पद एक ही प्रकार के वचन का व्यवहार करना चाहिये। আমি ও তোমরা যাইব, আমি ও তাহারা দেখিতেছি, इस भाँति के वाक्य नहीं हो सकते। अगर ऐसा होगा तो अलग अलग क्रिया व्यवहार की जायगी।

क्रिया के सकर्म्मक या द्विकर्म्मक होनेसे क्रिया के ठीक पहले कर्म्मपद बैठेगा। जैसे;

আমি হরিকে দেখিলাম।
তাহারা পুস্তক পড়িতেছে।
যদু তাহাকে পুস্তক দান করিয়াছে।

पहले उदाहरणमें "हरिके" यह कर्म पद है और वह अपनी क्रिया "देखिलाम" के पहिले बैठा है। दूसरेमें पुस्तक कर्मपद है और वह क्रिया पड़ितेछे के पहिले बैठा है। इसी तरह तीसरेमें "ताहाके" और "पुस्तक" ये दो कर्मपद हैं और वे दोनों ही अपनी क्रिया "दान करियाछे" के पहले बैठे हैं।

असमापिका क्रिया समापिका क्रिया के पहले बैठेगी; असमापिका और समापिका क्रियाका कर्त्ता एक होगा और इन दोनों क्रियाओंके कर्म करण विशेषण प्रभृति पद इन दोनों क्रियाओं के पहले बैठेंगे। जैसे;

হরি পুস্তক লইয়া পড়িতে লাগিল।
শশী এখানে বেদ পড়িতে আসিতেছে।
তিনি গৃহ হইতে বহির্গত হইয়া হৃষ্টমনে বিদ্যালয়ে প্রবেশ করিলেন।

विशेषण पद विशेष्य के पहले बैठता है। जैसे ;

স্থশীলা বালিকা।

বুদ্ধিমান বালক।

বহুদর্শী বৃদ্ধ।

पहले उदाहरण में "सुशीला" विशेषण पद है और वह अपने विशेष्य "बालिका" के पहले बैठा है। इसी भाँति और उदाहरण समझ लो।

नोट—अगर दो या दो से ज़ियादा विशेषण पद व्यवहार करने हों तो उन सब विशेषण पदोंके बीचमें संयोजक (जोड़ने-वाला) अव्यय नहीं व्यवहार करना चाहिये। जैसे ;

মহামান্য ঋষিশ্রেষ্ঠ ব্যাস।

সত্যবাদী ধর্ম্মাত্মা রাজা যুধিষ্ঠির।

यहाँ "व्यास" शब्दके "महामान्य और "ऋषिश्रेष्ठ" दो विशेषण हैं। लेकिन दोनों विशेषणों के बीच में "और" या "व" इत्यादि संयोजक अव्यय नहीं रखे गये। उसी तरह दूसरे उदाहरण में भी समझ लो।

क्रिया का विशेषण क्रिया के पहले ही बठता है ; किन्तु क्रिया सकर्मक होने से प्रायः कर्म पद के पहले बैठता है। जैसे ;

তিনি অত্যন্ত বেগে গমন করিলেন।

রাম উচ্চৈঃস্বরে হরিকে ডাকিল।

पहले उदाहरण में "गमन करिलेन" क्रिया है और "अत्यन्त वेगे" उसका विशेषण है और वह क़ायदे के माफ़िक़ अपनी क्रिया के पहले बैठा है। दूसरे में

"ডাকিল" সকর্মক ক্রিয়া হৈ ঔর "উচ্চৈঃস্বরে" উসকা বিশেষণ হৈ। "হরিকে" কর্মপদ হৈ। ক্রিয়া বিশেষণ যহাঁ "হরিকে" কর্মপদ কে পহলে বৈঠা হৈ।

দো যা দো সে অধিক পদ, বাক্যাংশ অথবা বাক্যোঁ কে এক সংগ প্রযোগ করনে পর ইন কে বীচ মেং সংযোজক অব্যয়, অর্থাৎ এবং, ও, কিংবা, আর বৈঠানে চাহিয়ে। জৈসে;

হরি এবং রাম পড়িতেছে।

হস্তী, অশ্ব, গো ও ছাগ চরিতেছে।

রাম সর্ব্বদা লেখে এবং পড়ে।

ঊপর কে নিয়মানুসার হী অথবা, কিংবা, বা, বিযোজক অব্যয় ভী ব্যবহার কিয়ে জাতে হৈং। জৈসে;

রাম অথবা হরি আসিবে।

সে পড়িবে কিংবা লিখিবে।

তুমি বা আমি করিব।

বাক্য কে পহলে হী সম্বোধন পদ বৈঠতা হৈ; উস সম্বোধন পদ কে ঠীক পহলে সম্বোধন চিন্হ হে, অহে, অরে প্রভৃ অব্যয় বৈঠাযে জাতে হৈং। কভী কভী ইনকে ন বৈঠানেসে ভ কাম চল জাতা হৈ। জৈসে;

হে জগদীশ, তুমিই সকলের কর্ত্তা।

ওহে মহেশ, এখানে এস।

অরে! তুই এখন যা।

রাম, তুমি আজ খেলা করিওনা।

सम्बन्ध पद के बाद ही सम्बन्धी पद (जिसके साथ सम्बन्ध हो) बैठाया जाता है। जैसे ;

ঈশ্বরের মহিমা।

দুঃখীর ভগ্ন কুটীর।

यहाँ "ईश्वरेर" यह सम्बन्धीपद है ; क्योंकि ईश्वर के साथ महिमा का सम्बन्ध है।

करण पद कर्त्तृपदके बाद और कर्म प्रभृति पदों के पहले बैठता है। जैसे ;

তিনি অস্ত্র দ্বারা এই বৃক্ষটি ছেদন করিলেন।

হরি যষ্টি দ্বারা বৃক্ষ হইতে ফল পাড়িল।

यहाँ "अस्त्र द्वारा" यह करण पद है, यह "तिनि" कर्त्तृपद के बाद और "वृक्षटि" कर्मपद के पहले बैठा है इसीतरह दूसरे उदाहरण को समझ लो।

जिन सब अर्थों में अपादान कारक होता है उन सब अर्थ-बोधक पदोंके पहले अपादान पद बैठता है। जैसे ;

তিনি কুকর্ম্ম হইতে বিরত হইয়াছেন।

जो जिसका अधिकरण पद होता है, वह उसके पहले बैठता है ; कभी कभी बाद भी बैठता है। जैसे ;

তাহার হস্তে পুস্তক আছে।

গাত্রে কোন শীতবস্ত্র নাই।

वक्तव्य।
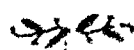
हमने यहाँ तक बँगला व्याकरण में प्रवेश मात्र करने राह दिखाई है। इससे हिन्दी जाननेवालों को बँगला सीखने में सुगमता होगी। जिन्हें बँगला व्याकरण अन्यान्य विषय जानने हों, वे वृहत् बँगला व्याकरण देखें।

हिन्दी बँगला शिक्षा।

द्वितीय खण्ड।

अनुवाद विषय।

पहिला पाठ।

ছিল = था
সেখানকার = वहाँका
রাজার = राजाका
তাঁর = उनका
তত = उतना
গৌরব = प्रतिष्ठा, महिमा
অথচ = और
করিতেন = करते थे
এত = इतना
হওয়া = होनेका
সেই = उसी
যত = जितने
ছিলেন = थे
সকলের চেয়ে = सबकीअपेक्षा
পণ্ডিতদের = पण्डितोंके
মধ্যে = बीचमें
হইলে = होनेपर
মীমাংসা = फैसिला
কেও = कोई

সীতা।

(১)

মিথিলা নামে এক রাজ্য ছিল। সেখানকার রাজার ছিল জনক। তাঁর রাজ্য তত বড় ছিল না, বড় রাজা বলিয়া তাঁর তত গৌরব ছিল না। সকল বড় বড় রাজাই তাঁকে খুব মান্য করিতেন—খুব খাতির করিতেন। তাঁর এত হওয়ার অনেক কারণ ছিল।

সেই সময় যত বড় বড় রাজা ছিলেন, রাজা জনক সকলের চেয়ে বিদ্বান্ ছিলেন,—সকলের চেয়ে জ্ঞানী ছিলেন। সক শাস্ত্র তাঁর কণ্ঠস্থ ছিল। পণ্ডিতদের মধ্যে তর্ক হইলে, তার মীমাংসা করিতেন। তাঁর মীমাংসাই শেষ মীমাংসা,—তাঁর বাক্যই বেদ বাক্য—তাঁর উপর কথা বলিবার আর কেউ ছিল না।

সীতা।

(২)

মিথিলা নামক এক রাজ্য থা। বহাঁ কে রাজা কা নাম জনক থা। উনকা রাজ্য উতনা বড়া নহীঁ থা, বড়ে রাজা হোনেকে কারণহী উনকী উতনী প্রতিষ্ঠা নহীঁ থী। সব বড়ে বড়ে রাজা উনকা খুব মান করতে থে—খুব খাতির করতে থে। উনকা ইতনা মান হোনে কে অনেক কারণ থে।

উস সময় জিতনে বড়ে বড়ে রাজা থে, রাজা জনক সভোঁকী

अपेक्षा विद्वान् थे,—सबकी अपेक्षा ज्ञानी थे। सारे शास्त्र उनके कण्ठस्थ थे। पण्डित लोगोंके बीचमें वाद विवाद होनेपर, वे उसको मीमाँसा करते थे। उनकी मीमाँसा ही अन्तिम मीमाँसा थी,—उनका वाक्य ही वेदवाक्य था—उनके ऊपर बात कहने वाला और कोई नहीं था।

दूसरा पाठ।

তাই = वही
শুধু = केवल
কি = क्या
যেমন = जैसा
তেমন = वैसा
কোন = किसी
পড়িলে = पढ़नेसे
বড় বড় = बड़े बड़े
পরামর্শ = सलाह
নিতেন = लेते थे
বীরত্বও = वीरत्व भी
তাঁহার = उनकी
না = नहीं
করিয়া = करके
কোন = कोई
তাঁকে = उसको
হটাইতে = हटाते
পারেন = सकता
নাই = नहीं
নয় = नहीं
সেকালে = उस समय
মত = अनुसार, समान
যখন = जब
বসিতেন = बैठते थे
পরিতেন = पहिरते थे
আর = और
থাকিতেন = रहते थे

(२)

ईश्वरके उद्देश्य से काम करके उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती थी। वे राजा होकर भी ऋषि मुनिकी भाँति काम करते थे, इससे लोग उनको राजर्षि कहते थे। राजर्षि जनक घरके काममें गृहस्थ और धर्मके काममें संन्यासी थे। घरमें रह कर संन्यास असम्भव होनेपर भी उन्होंने उसको सम्भव किया था। वे सभी काम करते थे, परन्तु किसी काममें लिप्त न थे। वे खूब पक्के खिलाड़ी थे, इसीसे उन्होंने एक हाथसे धर्मकी और दूसरे हाथसे कर्मकी तलवार घुमाकर सभीको विस्मित किया था।

चौथा पाठ।

দয়ার = दयाकी
বাড়ীতে = घरमें
তের = तेरह
বার = बारह
মাসে = महीनेमें
পার্ব্বণ = पर्व
খোলা = खुला
অন্নসত্র = अन्नक्षेत्र
যে = जो
আসে = आवे
থাকিতে পারে = रह सकता है
এমন = ऐसे
সন্তান = लड़का बाला
জনপরিজন = अपने पराये
জন্য = वास्ते
আকুল = व्याकुल
পান = पाय
তাঁদের = उनका
কিছুতেই = किसीसे भी

সেই = वही
কে = कौन
কিছু = कुछ
হইল = हुआ

(৪)

জনকের দয়াব সীমা ছিল না। বাড়ীতে বার মাসে তের পার্ব্বণ, উৎসব, আমোদ, আহ্লাদ। আর দান দাতব্য রাতদিন খোলা অন্নসত্র—যে আসে, সেই খায়। তাঁর রাজ্যে আর দীন দুঃখী কে থাকিতে পারে ?

এমন যে রাজর্ষি জনক তাঁর সন্তান নাই। প্রজা, জন-পরিজন ও রাজকর্ম্মচারী সকলেরই মুখ মলিন। রাণী সন্তানের জন্য আকুল। সকলের এই ভাব দেখিয়া, রাজা কোথাও শান্তি পান না। কি করেন—তাঁদের অনুবোধে যাগ যজ্ঞ করিলেন ; কিন্তু কিছুতেই কিছু হইল না।

(৪)

जनकके दयाकी सीमा न थी। घरमें बारह महीनेमें तेरह पर्व, उत्सव, आमोद, आह्लाद (होता था) । और दान, दातव्य, रात दिन खुला अन्नक्षेत्र, जो आता वही खाता। उनके राज्यमें और दीन दुःखी कौन रह सकता (था) ?

ऐसे जो राजर्षि जनक (थे) उनके लड़का बाला नहीं (था)। प्रजा, अपने पराये और राजकर्म्मचारी सभोंका मुँह मलिन (रहता था)। रानी सन्तानके लिये व्याकुल (रहती थी)। सभोंका यह भाव देखकर, राजा कहीं भी शान्ति नहीं पाते थे। क्या करें—उनके अनुरोधसे होम यज्ञ किया ; परन्तु किसीसे भी कुछ न हुआ।

পাঁচঁবা পাঠ।

কবিবেন = করেঁগে
জায়গা = জগহ
ঠিক = ঠীক
হইল = হুই
জিনিষ-পত্র = চীজ় বস্তু
জোগাড় = জোগাড় জুটাব
হইতে লাগিল = হোনে লগা
পোহাইল = সবেরা হোনা, বীতনা
কাক = কৌআ
কোকিল = কোয়ল
ডাকিয়া উঠিল = পুকার উঠী, বোল উঠী
বাগানে = বাগমেঁ
ফুটিল = খিলে, ফুটে
অলি = ভৌঁরা
তুলিবার = তোড়নেকে লিয়ে, চুননেকে।
গেলেন = গয়ে
মাঝে = বীচমেঁ
সরোবর = তালাব
তিন = তীন
পাড়ে = ওর, কিনারেপর
মাঠ = মৈদান, চরাগাহ
আসিয়া পড়িলেন = আ পড়ে

(৫)

আবার সকলে সন্তান লাভের জন্য যজ্ঞ করিতে অনুরো করিল। রাজর্ষি জনক আবার যজ্ঞ করিবেন। যজ্ঞের জায় ঠিক হইল, জিনিষ-পত্র যোগাড় হইতে লাগিল।

একদিন রাত পোহাইল, কাক, কোকিল ডাকিয়া উঠি বাগানে ফুল ফুটিল, অলি গুন্ গুন্ গাইল। ক্রমে ফুল তু সময় হইল, রাজর্ষি বাগানে গেলেন। বাগানের মাঝে সরো তাতে স্ফটিকের মত জল। সূর্য্যদেবের সোণার কিরণ আক

খানি লাল করিয়া সরোবরের জলে খেলিতেছে। সরোবরের তিন পাড়ে ফুলের বাগান, এক পাড়ে খোলা মাঠ। রাজর্ষি ফুল তুলিতে তুলিতে মাঠে আসিয়া পড়িলেন।

(५)

फिर सभोंने सन्तान लाभके लिये यज्ञ करनेका अनुरोध किया। राजर्षि जनक फिर यज्ञ करेंगे। यज्ञकी जगह ठीक हुई, चीज़ वस्तु जोगाड़ होने लगी।

एक दिन रात बीती (सवेरा हुआ), कौवे, कोयल बोल उठे, बाग़में फूल खिले, भौंरे गुन् गुन् गाने लगे। धीरे धीरे फूल चुननेका समय हुआ, राजर्षि बाग़में गये। बाग़के बीचमें तालाब (है), उसमें स्फटिकके समान जल (है)। सूर्य्यदेवकी सुनहरी किरणें आकाश को लाल करके तालाबके पानीमें खेल रही हैं। तालाबके तीन ओर फूलका बाग़ है एक ओर जानवरोंके चरनेका मैदान (है)। राजर्षि फूल चुनते चुनते उसी मैदानमें आ पड़े।

छठा पाठ।

গাছ = पेड़
উঁচু = ऊँचा
নীচু = नीचा
সে = वह
চাষ করিয়া = हल चलाकर, जोतकर
সদ্যফোটা = तुरत फूटे हुए, तुरत खिले हुए
মেয়ে = लड़की
চাঁদ = चन्द्रमा
জ্যোৎস্নার = चाँदनीका
ননীর = मक्खनका

করা চাই = করনা চাহিয়ে
লাঙ্গল = হল
আসিল = আয়া
গরু = বৈল
যেন = জৈসে, মানোঁ
আলোকিত = দীপ্ত
উঠিল = উঠা
কালে = কালমেঁ
ছাড়িলেন = ছোড় দিয়া
তাড়াতাড়ি = জল্‌দীসে
ছুটিয়া গেলেন = দৌড়কর গয়ে
কোলে = গোদমেঁ
তুলিয়া নিলেন = উঠা লিয়া
সাড়া পড়িল = কোলাহল
অনায়াস = বিনা পরিশ্রম, যত্নায়ক

---

(৬)

ঐ খোলা মাঠেই যজ্ঞ হইবে। মাঠের মাঝে মাঝে পালা, উহার কোন জায়গা উচু কোন জায়গা নীচু। সে চাষ করিয়া সমান করা চাই। লাঙ্গল আসিল, গরু আসিল রাজা নিজেই চাষ কবিতে আরম্ভ করিলেন। চাষ করিতে করিতে মাঠ যেন আলোকিত হইয়া উঠিল। দেখেন লাঙ্গলে কালে সদ্যফোটা পদ্মফুলের মত এক মেয়ে! মেয়ে কি মে যেন আকাশের চাঁদ! জ্যোৎস্নার মত রঙ, ননীর মত শরী মেয়ে দেখিয়াই রাজা লাঙ্গল ছাড়িলেন, তাড়াতাড়ি গেলেন, মেয়ে কোলে তুলিয়া নিলেন। চারিদিক হইতে লে জন আসিল, জয় জয়কার পড়িয়া গেল। রাজপুরীতে আনন্দের সাড়া পড়িল। রাজা অনায়াসে সন্তান পাইয়া ভ বানের নিকট কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিলেন।

(६)

इस खुले मैदानमें ही यज्ञ होगा। मैदानके बीच बीचमें पेड़ पत्ते (हैं), उसकी ज़मीन कहीं ऊँची कहीं नीची है। यह सब हल चलाकर बराबर करनी चाहिये। हल आया, बैल आया, राजाने स्वयं हल चलाना आरम्भ किया। हल चलाते चलाते मैदान मानों आलोकित हो उठा। देखा कि हलके फालमें तुरत फूटे हुए कमलके फूलके समान एक लड़की (है)! लड़की कैसी लड़की (है) मानों आकाशका चन्द्रमा! चाँदनीसा रंग, मखन सा शरीर, लड़की देखकर राजाने हल छोड़ दिया, जल्दी से दौड़कर गये, लड़कीको गोदमें उठा लिया। चारों ओरसे मनुष्य आये, जयजयकार मच गई। राजपुरीमें महा आनन्द का कोलाहल मचा। राजाने अनायास ही सन्तान पाकर ईश्वरके आगे कृतज्ञता प्रकाश की।

सातवाँ पाठ।

सत्यि = सच ही, सचमुच
बड़ = बहुत
निये = ले जाकर
अन्दरे = भीतरमें
यत = जितना
तबू = तब भी
बूझि = मालूम होता है
साजान हइल = सजी गई
फटकेर = फाटकके
चूड़ाय चूड़ाय = सरपर
नक्कारखानेमें
राज्यमय = राज्यभरका
मातिल = मतवाले हुए
आपन आपन = अपना अपना

লতা পাতা = तोरन बन्दनवार সাজাইল = सजाया
ত্রুটি = कमी ভূষিত রহিল = भूषित रहा

(৭)

সত্যই রাজর্ষিব বড় আনন্দ হইল। আনন্দে নিয়ে রাজা অন্দরে গেলেন। "ভগবানের দান" এই বলি মেয়েটি রাণীর কোলে দিলেন। মেয়ে পাইয়া রা আহ্লাদের সীমা নাই; সে কি যত্ন! সে কি আদর! যত্ন করেন, যত আদর করেন, তবু মনে হয়, মেয়ের বুঝি ত্রুটি রহিল।

রাজপুরী লতা পাতা পুষ্প পতাকায় সাজান হইল। ফটে চূড়ায় চূড়ায় বাদ্য বাজিয়া উঠিল। রাজ্যময় উৎসবের ঘোষ হইল। দেবালয়ে পূজা অর্চ্চনার ধূম পড়িল। রাজপুরী আনন্দম হইয়া উঠিল। রাজার সুখে প্রজার সুখ। প্রজারাও আমো মাতিল। আপন আপন ঘর বাড়ী সাজাইল। সাত রাত পর্য্য নগর আলোকমালায় ভূষিত হইল।

(৩)

सचमुच राजर्षिको बड़ा आनन्द हुआ। आनन्द लड़कीको लेकर राजा अन्दरमें गये। "ईश्वरका दान" कह कर लड़की रानीकी गोदमें दे दी। लड़की पा रानीकी प्रसन्नताकी सीमा नहीं (रही); वह कैसा यत्न! कैसा आदर! जितना यत्न करती थीं, जितना ही करती थीं, तब भी मनमें होता था, लड़कीके यत्नमें मा होता है कमी हुई।

राजपुरी तोरन बन्दनवार फूल पताकाओं से सजाई गई। फाटकोंके ऊपर ऊपर (नक्कारखानोंमें) बाजे बज उठे। राज्य-भरके उत्सवकी घोषणा हुई। देवालयोंमें पूजा अर्चनाकी धूम पड़ी। राजपुरी आनन्दमयी हो उठी। राजा के सुख से प्रजाका सुख (है)। प्रजा भी आमोदमें मतवाली (हुई), अपने अपने घर द्वार सजाये। सात रात तक नगर रोशनीकी लड़ीसे भूषित हुआ।

आठवां पाठ।

জন্য = वास्ते
গাভী = गायें
অজস্র = बिना रुकावटके, लगातार
জোড়হাতে = हाथ जोड़कर
কামনা = इच्छा
চলিয়া গেল = चले गये
বিবরণ = हाल, समाचार, व्यौरा
চারিদিকে = चारों ओर
কথা = बात
রটনা হইল = रटी गई
দলে দলে = दल बाँधकर
আসিতে লাগিল = आने लगे
শিষ্যগণসহ = शिष्यगणोंके साथ
আসিলেন—आये
প্রাণ ভরিয়া = जी भरके
যাঁর যাঁর = जिसकी जिसकी
জিনিষ = चीज़

(৮)

রাজা মেয়ের মঙ্গলের জন্য বহু মণি মাণিক্য ও বৎস সহ শত শত গাভী দান করিলেন। নানা রাজ্যের দীন দুঃখীদিগকে আশাতীত ধন দিলেন। সাত রাত সাত দিন অজস্র দান চলিল।

রাজ্যে রাজ্যে লোকের অভাব ঘুচিয়া গেল। আশার অধিক দান পাইয়া সকলেই যোড়হাতে ভগবানের নিকট রাজকন্যার দীর্ঘজীবন কামনা করিতে করিতে আপন আপন দেশে চলিয়া গেল। রাজর্ষি জনকের কন্যালাভের বিবরণ চারিদিকে প্রচারিত হইল। মেয়ের অসামান্য রূপলাবণ্যের কথাও দেশ রটনা হইল। এই অপূর্ব্ব মেয়ে দেখিবার জন্য দেশ বিদেশে লোক দলে দলে আসিতে লাগিল। শিষ্যগণসহ মুনি ঋ আসিতে লাগিলেন. দলে দলে ব্রাহ্মণ পণ্ডিত আসিলেন, দেখিলেন, প্রাণ ভরিয়া আশীর্ব্বাদ করিয়া চলিয়া গেলেন। দলে রাজগণ আসিলেন—মেয়ে দেখিলেন, যাঁর যাঁর যা আদরে জিনিষ ছিল, মেয়েকে উপহার দিলেন, চলিয়া গেলেন।

(৮)

राजाने लड़कीके मंगलके लिये बहुतसे मणि और बछड़े सहित सैकड़ों गायें दान कीं। नाना दीन दुःखियोंको आशाके बाहर धन दिया। सातरात सात लगातार दान चलता रहा। राज्य राज्यमें लोगोंका अभ दूर हुआ। आशासे अधिक दान पाकर सभी हाथ ईश्वरके निकट राजकन्याके दीर्घजीवनकी कामना करते अपने अपने देशमें चले गये। राजर्षि जनकके का समाचार चारों ओर फैल गया। लड़कीके असामा रूपलावण्य की बातें देश विदेशमें रटी जाने लगीं। अपूर्व लड़कीको देखनेके लिये देश विदेशसे मनुष्य दल के द

आने लगे। शिष्योंके साथ ऋषिमुनि भी आने लगे। दलके दल ब्राह्मण पण्डित आये, लड़की देखी, जी भरकर आशीर्वाद करके चले गये। दलके दल राजा आये—लड़की देखी, जिसकी जिसकी जो प्यारी चीज़ थी, लड़कीको उपहार दे, चले गये।

नवाँ पाठ।

পর = बाद	পাওয়া যাইবে = पायी जायगी, पाया जायगा
চাইল = चाहा	কেন = क्यों
দিয়া = देकर	শোনে = सुने
ফোটা = खिला हुआ	আসে = आवे
চোখ = आँख	ফুরায় = पूरा होना
না জানি = नहीं जानता	হইতে = से
আরও = और भी	আসেন = आती थीं
কত = कितना (बहुत)	না হইলে = नहीं तो, न होनेपर
মানুষের = मनुष्यका	
ইনি = ये	

(৯)

তাহার পর প্রজারা। দলে দলে প্রজা আসিয়া মেয়ে দেখিল; যার প্রাণে যা চাইল, মেয়েকে দিয়া আপন ঘরে চলিয়া গেল। রাজসভা হইতে কন্যা অন্তঃপুরে রাণীর কোলে যান; সেখানে মুনিপত্নী, ঋষিপত্নী, মুনিকন্যা, ঋষিকন্যা আসেন, মেয়ে দেখেন, আশীর্ব্বাদ করেন, চলিয়া যান। রাজ্যের

মেয়েরা শতে শতে আসে—মেয়ে দেখে—রূপের কত সুখ্যাতি করে। আহা, রূপ কি রূপ—যেন ফোটাপদ্মফুল, চাঁদের মত মুখ পদ্মের মত চোখ, ননীর মত শরীর! আহা! এখনই এ রূপ,—বড় হইলে না জানি আরও কত সুন্দর হইবে। মা কি এত রূপ কখনও হয়? নিশ্চয়ই ইনি কোন দেব কন্যা না হইলে যজ্ঞক্ষেত্রেই বা পাওয়া যাইবে কেন? এত রূপে. কথা যে শোনে সেই একবার দেখিতে আসে। একদল আসে একদল যায়, রাজবাড়ীর লোক আর ফুরায় না।

(৫)

उसके बाद प्रजा। दलकी दल प्रजाने आकर लड़की देखी जिसके मनने जो चाहा (मनमें जो आया) लड़कीको देकर घर चला गया। राजसभासे लड़की भीतर रानीकी गोदमें गई वहाँ मुनियोंकी स्त्रियाँ, ऋषियोंकी स्त्रियाँ, मुनिकी कन्याएँ ऋषिकन्याएँ आईं (उन्होंने) लड़की देखी, आशीर्वाद किया, चली गईं। राज्यकी सैकड़ों स्त्रियाँ आईं—लड़की देखी रूपकी कितनी सुख्याति की। अहा! रूप कैसा रूप, खिला कमलका फूल। चन्द्रमाके समान मुँह, क आँखें, मखन सा शरीर। आहा! अभी ही इतना रूप(है)बड़ होने पर न जाने और भी कितनी सुन्दर होगी। म इतना रूप क्या कभी होता है? निश्चय ही ये कोई देवकन्या हैं नहीं तो यज्ञ-क्षेत्रमें ही क्यों पाई जातीं? इतने रूपकी बात सुनता था वही एकबार देखनेको आता था। एक दल आ

থা, এক দল জাতা থা, রাজ মহলকী লোগ কম নহী হোতি থী।

দসবাঁ পাঠ।

শেষ = সমাপ্ত　　ধরিয়া = পকড়কর
হইতে না হইতে = হোতি ন হোতি　　হাটি হাটি = ধীরে ধীরে
বলিয়া = বাস্তে, কারণসে　　পা পা = পৈর পৈর
রাখিলেন = রখ্খা　　হাটিতে = চলনা
কেহ কেহ = কোই কোই　　ছেলে মেয়েদের সহিত = লড়কে লড়কিয়োঁকে সাথ
ডাকিতেন = পুকারতে থে　　খেলায় = খেলমেঁ
হামাগুড়ি = খিসকনা ঘুটনেসে চলনা　　যোগ দিলেন = সাথ দিয়া।
আঙ্গুল = উঁগলী

---

(১০)

এই উৎসব আমোদ শেষ হইতে না হইতেই আবার রাজ-কন্যার নামকরণ উৎসব আরম্ভ হইল। লাঙ্গলের সীতিতে (ফালে) পাইয়াছেন বলিয়া কন্যার নাম রাখিলেন সীতা। জনকেব কন্যা বলিয়া কেহ কেহ তাঁহাকে জানকী বলিয়া ডাকিতেন। সীতা দিন দিন বড় হইতে লাগিলেন। মা বাপের কোল ছাড়িয়া, হামাগুড়ি দিলেন। হামাগুড়ি ছাড়িয়া মা বাপের আঙ্গুল ধরিয়া, হাটি হাচি, পা পা, করিতে করিতে হাটিতে শিখিলেন। ক্রমে ক্রমে পুরীর ছেলেমেয়েদের সহিত খেলায় যোগ দিলেন।

(१०)

यह उत्सव आमोद समाप्त होते न होते ही फिर राजकन्याके नामकरणका उत्सव आरम्भ हुआ। हलके फालमें पाई थी इसलिये लड़कीका नाम रक्खा सीता। जनककी कन्या रहनेके कारण कोई कोई उनको जानकी कह कर पुकारता था। सीता दिनों दिन बड़ी होने लगीं। मा बापकी गोद छोड़कर, घुटनों चलने लगीं। घुटअन चलना छोड़कर, माँ बापकी उँगली पकड़ धीरे धीरे पाँव पाँव (करते करते) चलना सीखा। धीरे धीरे नगरके लड़के लड़कियोंके साथ खेलनेमें भी योग देने लगीं।

ग्यारहवां पाठ।

বড় = बहुत, बड़ा	যাগ যজ্ঞ = होमयज्ञ
তিনি = वे	খেলা = खेल
নিয়েই = लेकर	কাজকর্ম্ম = काम धन्धा
কাছে = पास	কতই = कितनाही, बहुत कुछ
সঙ্গে = साथ	পান = पाती थी
কখনও = कभी	আদেশ = आज्ञा
লেখা পড়া = लिखना पढ़ना	প্রকার = तरह
সাংসারিক = संसारके	করিয়া = करके
সকল = सभी	

(১১)

রাজা আজকাল রাজকার্য্য বড় দেখেন না। তিনি মেয়ে নিয়েই ব্যস্ত। রাজা সভায় যান, মেয়েও তাঁর সঙ্গে যায়। যাগ যজ্ঞ করেন—মেয়ে তাঁর কাছে বসে। তিনি কখনও মেয়ে নিয়ে খেলা করেন, কখনও মেয়েকে লেখা পড়া শিখান। কখনও বা সাংসারিক কাজকর্ম্ম দেখান—কখনও বা ধর্ম্ম উপদেশ দেন। ঈশ্বরভক্তি ও সংযম শিক্ষার জন্য নানা প্রকারের ব্রত, নিয়ম পালনেব ব্যবস্থা করেন। সীতা আগ্রহের সহিত পিতার সকল আদেশ পালন করিয়া কতই যেন সুখ পান।

(११)

राजा आजकल राजके काम बहुत नहीं देखते थे। वह अपनी लड़की को लेकर ही व्यस्त रहते थे। राजा सभा में जाते (तो) उनकी लड़की भी उनके साथ जाती थी। होम यज्ञ करते (तो)—लड़की उनके पास ही बैठती। वे कभी लड़कीके साथ खेलते, कभी लड़कीको लिखना पढ़ना सिखाते। कभी संसारके काम धन्धे दिखाते और कभी धर्मका उपदेश देते थे। ईश्वरकी भक्ति और संयम शिक्षाके लिये कितनी ही तरहके व्रत, नियम पालन की व्यवस्था करते थे। सीता आग्रहसे पिताकी सभी आज्ञा पालन करके बहुत कुछ सुख पाती थीं।

बारहवां पाठ।

ক্লান্ত = श्रान्त, थका   শুনেন = सुनें

দেখিতে যাবেনই। জনক আর কি করেন—নিয়েই চলিলেন। আহা, সীতা তপোবন দেখিয়া কতই খুসী। ঋষিবালিকাদের সঙ্গে খেলা করিয়া তাঁর আমোদ ধরে না। হরিণশিশুগুলিকে ছু'গাছি কচি কচি ঘাস, পাখীগুলিকে ছোলা, ঋষিবালক বালিকা-দিগকে ফল মূল খাওয়াইয়া যে তাঁর আশা মিটে না। তপোবনই যেন তাঁর সুখের জায়গা। সেখানে গেলে তাঁর আর রাজবাড়ী আসিতে ইচ্ছা করে না। জনক এক দিনের কথা বলিয়া গেলে সীতার জন্য তিন দিনেও ফিরিতে পারেন না।

(১৪)

राजर्षि जनक तपोवन देखने चले—सीताने यों ही ज़िद पकड़ ली—"पिता! मैं जाऊँगी, चलूँ क्या?" उसी समय गहने कपड़े खोलकर, ऋषि बालिकाके वेशमें पिताके पीछे खड़ी हो गई। पिताने कितना ही मना किया—कुछ भी न सुना। सीता तपोवन देखने जायँगी ही। जनक अब क्या करें—ले चले। अहा! सीता तपोवन देखकर कितनी खुश (हुईं)। ऋषि बालिकाओंके साथ खेल करके उनका जी नहीं भरता था। हरिनके बच्चोंको दो दो नर्म नर्म घास, पछियोंको चना और बालक बालिकाओंको फल मूल खिला कर भी उनका जी न भरता था। तपोवन ही मानों उनके सुखकी जगह (थी)। वहाँ जानेपर उन्हें फिर राजमहल आने की इच्छा न होती थी। जनक एक दिनकी बात कह जानेपर सीताके कारण तीन दिनमें भी नहीं फिर सकते थे।

পন্দ্রহবাঁ পাঠ।

পাইবার = পানিকে	কেও = কোঈ ভী
পর = বাদ	কাকে = কিসকো
হয় = হুঈ	ফেলিয়া = ছোড়কর ফেঁককর
রাখেন = রক্খা, রক্খা থা	ছায়ায় = ছায়ামেঁ, সাথমেঁ
বড়টীর = বড়ীকা	আবদার = জ়িদ্দ
ছোটটীর = ছোটীকা	ভাব = প্রেম

(১৫)

সীতাকে পাইবার পর রাণীর একটি মেয়ে হয়, তাঁহার নাম রাখেন উর্ম্মিলা। কুশধ্বজ নামে জনকের এক ভাই ছিলেন, তাঁরও দুইটি মেয়ে—বড়টির নাম মাণ্ডবী, ছোটটির নাম শ্রুত-কীর্ত্তি। তাঁরাও সীতার সঙ্গে জনকের স্নেহের ভাগী। সীতার সঙ্গে তাঁদের বড়ই ভাব। কেও কাকে ফেলিয়া থাকিতে পারেন না। সীতার ছায়ায় থাকিয়া তাঁরাও সীতার মত হইয়া উঠিলেন।

সীতার শিশুকাল গিয়াছে, বাল্যকালও যায় যায়। তাঁর শরীরের কান্তি দিন দিন বাড়িতে লাগিল। এখন আর সে চঞ্চলতা নাই, সে আবদার নাই, সে বায়না নাই। মধুর লজ্জা আসিয়া যেন সব দূর করিয়া দিল।

(১৫)

সীতাকো পানে বাদ রানীকো এক লড়কী হুঈ, উসকা নাম রক্খা উর্ম্মিলা। কুশধ্বজ নামকে জনককে এক ভাঈ থে, উনকী ভী দো কন্যাএঁ (থীঁ)—বড়ীকা নাম মাণ্ডবী, ছোটীকা

नाम स्रुतकीर्त्ति (था)। वे भी सीताके साथ जनकके भगिनी (थीं), सीताके साथ उनका बड़ा ही प्रेम था। को किसीको छोड़कर नहीं रह सकती थीं। सीताकी छा रहकर वे भी सीताकी भाँति हो गईं।

सीताका बचपन गया है, लड़कपन भी जाने जानेपर है उसके शरीरकी कान्ति दिनों दिन बढ़ने लगी। अब और चंचलता नहीं है, वह ज़िद्द नहीं है, वह बहाना नहीं है मधुर लज्जा ने आकर मानों सब दूर कर दिया।

सोलहवां पाठ।

প্রাণপণে = प्राणभरके
মুহূর্ত্তও = मुहूर्त्तभर भी
বোনদিগকে = बहिनोंको
পাড়াপড়সীরা = अड़ोसी पड़ोसी स
ভালবাসেন = प्यार करती थीं
জনপরিজনে = अपने पराये पर
ঘিরিয়া থাকে = घेरे रहती थी
ভাবনা = चिन्ता, विचार
কারও = किसीका भी
ভাবেন = विचारे
চোখে = आँखमें
সখীরা = सखी सब
লুটিয়া = लोटकर
ছাড়িয়া = छोड़कर

(১৬)

সীতা এখন প্রাণপণে মা বাপের সেবা শুশ্রূষা করেন, বোন দিগকে প্রাণের সহিত ভালবাসেন, দাসদাসীদিগকে স্নেহ, জন পরিজনে দয়া করেন। সীতা যেন সকলের সুখ দুঃখের ভ ব

ভারেন। সখীরা সীতাকে ছাড়িয়া এক মুহূর্ত্তও থাকিতে পারেন না। পাড়াপড়সীরা সর্ব্বদা তাঁকে ঘিরিয়া থাকে। পশুপক্ষীদের পর্য্যন্ত সীতাই সব। সীতা যাকে পান, তাকেই প্রাণ দিয়া স্নেহ করেন, যত্ন করেন, আদর করেন। কারও কষ্ট দেখিলে সীতার চোখে জল ধরে না; সীতার আকুলতার সীমা থাকে না। সীতার ব্যবহার দেখিয়া জনক ভাবেন—এ কি? এ কি আমার সীতা? এ তো দেবী! তার শরীরে দেবতার মত জ্যোতিঃ, হৃদয়ে দেব ভাব। যে দেখে সেই যেন চরণে লুটিয়া পড়িতে চায়। আনন্দে রাজর্ষির প্রাণ মন ভরিয়া উঠে।

(১৬)

सीता इस समय जी भरके मा बापकी सेवा शुस्रुषा करती थीं, बहिनोंको जैसे प्यार करती थीं, नौकर मज़दूरिनों पर स्नेह, अपने पराये पर दया करती थीं। सीता मानों सभोंके सुख दुःखकी चिन्ता करती थीं। सखियाँ सीताको छोड़कर, एक क्षण भी नहीं रह सकती थीं, पड़ोसिनें सदा उनको घेरे रहती थीं। पशु पक्षियों तक को सीता ही सब कुछ थीं। सीता जिसको पाती थीं, उसको ही जी भरके प्यार करती थीं, यत्न करती थीं, आदर करती थीं। किसीका भी कष्ट देखनेसे सीताकी आँखोंका पानी नहीं रुकता था, सीताकी व्याकुलता की सीमा नहीं रहती थी। सीताका व्यवहार देखकर जनक बिचारते थे—यह क्या? यह क्या मेरी सीता(है)? यह तो देवी (है)! उसके शरीर पर देवताओंकी भाँति ज्योति(है)। हृदयमें देव

भाव (है), जो देखता (है), वही मानो पैरोंपर लोट चाहता है। आनन्दसे राजर्षिका प्राण मन भर उठता (है)।

सत्रहवाँ पाठ।

ছড়াইয়া পড়িল = फैल गई	দেই = दें
পথে = राहमें	বর = वर
হাটে মাঠে = हाटबाटमें	কাকে = किसको
জাগিয়া উঠিল = जाग उठी	যে = जो
পাইবার = पानेके	রত্নটী = यह रत्न
ভাট = भाट	করি = करें
ভাঙিল = टूटा	এইরূপ = इसी तरहको
দিব = दूंगा	ধনুতে = धनुषमें
কার = किसका	ছিলা = चाप
কাছে = पास	পরাইয়া = पहिनाकर

(১৭)

সীতার অসামান্য রূপ, অসামান্য গুণ; এই রূপ-গুণের কথা জগতে ছড়াইয়া পড়িল। যে রাজ্যেই যাও সীতার রূপ-গুণের কথা। পথে দু'জনে কথা বলিতেছে—সীতার রূপ গুণের কথা। রাজদরবারে রাস্তায় বাজারে, হাটে মাঠে, প্রজা [illegible] [illegible], পথে পথে, কি রাণী, কি গৃহস্থ, কি ভিখারিণী, সকলেই বলে—সেই সীতার রূপ-গুণের কথা।

এই অসাধারণ কন্যাকে লাভের আশা, সকল দেশের রাজ-

পুত্রের প্রাণেই জাগিয়া উঠিল। সকলেই সীতাকে পাইবার জন্য জনকের নিকট ভাট পাঠাইতে লাগিলেন। কোন কোন দুষ্ট রাজা বলপূর্ব্বক সীতা লাভের ভয়ও দেখাইলেন। রাজর্ষি জনকের চমক ভাঙ্গিল।

"এমন সোণার চাঁদ মেয়ে কাকে দিব? কে এর যথার্থ আদর করিতে পারিবে? কে এই রত্নের মূল্য বুঝিবে? সীতাকে ছাড়িয়া আমিই বা কেমন করিয়া থাকিব?" এই রূপ চিন্তা তাঁর মনে আসিল। কিন্তু চিন্তা করিয়া কি হইবে?—"মেয়ে তো বিয়ে দিতেই হইবে। এখন কার কাছে দেই? কে উপযুক্ত বর? কাকে দিলে মেয়ে সুখে থাকিবে? যে রত্নের জন্য পৃথিবী লালায়িত, কার এমন বল আছে যে নিজবলে রত্নটী রক্ষা করিতে পারিবে? সেই বলের পরীক্ষাই বা কেমন করিয়া করি?" এরূপ চিন্তা করিতে করিতে হরধনুর কথা তাঁর মনে পড়িল। এ পর্য্যন্ত কেহ সে ধনুতে ছিলা দিতে পারে নাই। তিনি প্রতিজ্ঞা করিলেন—"যিনি হরধনুতে ছিলা পরাইয়া ভাঙ্গিতে পারিবেন, আমি তাঁহাকেই এই কন্যারত্ন দান করিব।"

(১৩)

सीताका असामान्य रूप, असाधारण गुण (है); इस रूप-गुणकी बातें जगत्‌में छा गईं। जिस राज्यमें जाओ सीताके रूप-गुणकी बातें (हैं)। राहमें दो मनुष्य बातें करते हैं—सीताके रूप-गुणकी बातें (हैं)। राजदरबारमें, राजा

राजामें, हाटबाटमें, प्रजा प्रजामें, घर घरमें, क्या र
क्या गृहस्थ, क्या भिखारिनी, सभी कहते हैं—वही
रूप-गुणकी बातें ।

इस असाधारण कन्यारत्न मिलनेकी आशा, सब
राजकुमारोंके मनमें जाग उठी । सभी सीताको पानेके
जनकके पास भाट भेजने लगे । किसी किसी दुष्ट र
बलपूर्वक सीतालाभका भय भी दिखाया । राजर्षि
नींद टूटी ।

"ऐसी सोनेकी चाँद लड़की किसको दूंगा ?
इसका यथार्थ आदर कर सकेगा ? कौन इस रत्नका
समझेगा ? सीताको छोड़कर मैं ही किस तरह
सकूँगा ? यही चिन्ता उनके मनमें उठी । परन्तु चिन्ता
क्या होगा ?—"लड़की तो व्याहनी ही होगी
अब किसके पास दें ? कौन उपयुक्त वर (है) ? किसे
से लड़की सुखी होगी ? जिस रत्नके लिये पृथिवी
है, किसका ऐसा बल है जो अपने बलसे (उस) रत्नको
कर सकेगा ? उस बलकी परीक्षा ही किस तरह करें ?'
इसी तरहकी चिन्ता करते करते हरके धनुषकी
उनके मनमें आई । अबतक कोई भी उस धनुषमें
न चढ़ा सका । उन्होंने प्रतिज्ञा की—"जो हरके
चाँप चढ़ाकर तोड़ सकेंगे, मैं उन्हींको यह कन्यारत्न दा
करूँगा ।"

অট্ঠারহবাঁ পাঠ।

পণ = প্রণ
যাইয়া = জাকর
সব চেয়ে = সবসে
রব পড়িয়া গেল = ধূম মচ গঈ
হরধনু = হরকা ধনুষ
ভাঙ্গা = তোড়না

(১৮)

যেমন অপরূপ মেয়ে, পৃথিবীর সার রত্ন সীতা—তেমন তাঁর বিবাহের পণও হইল সব চেয়ে কঠিন কাজ—হরধনু ভাঙ্গা।

জনকরাজার প্রতিজ্ঞার কথা রাজ্যে রাজ্যে ঘোষিত হইল। যাঁরা ভাট পাঠাইয়াছিলেন, তাঁরা নিরাশ হইলেন। বীর বলিয়া যাঁদের গৌরব আছে, তাঁরা আনন্দিত হইলেন।

কার আগে কে ধনুক ধরিবে, কে আগে যাইয়া সীতা লাভ করিবে—এই জন্য সকল রাজ্যেই সাজ সাজ রব পড়িয়া গেল।

(১৮)

জৈসী আশ্চর্য্যময়ী লড়কী, পৃথিবীকী সার রত্ন সীতা (হৈ)—বৈসা হী উসকে বিবাহকা প্রণ ভী হুআ সবসে কঠিন কাম—হরকা ধনুষ তোড়না।

জনকরাজাকে প্রতিজ্ঞাকী বাত রাজ্য রাজ্য মেঁ ঘোষিত হুঈ। জিন্হোঁনে ভাট ভেজে থে বে নিরাশ হুএ। বীর রহনেকে কারণ জিনকা গৌরব হৈ, বে আনন্দিত হুএ।

কিসকে পহিলে কৌন ধনুষ উঠায়গা, কৌন আগে জাকর

সীতা-লাভ করেগা—ইসকে লিয়ে সভী রাজ্যোঁমেঁ তয্যারি ধূম মচ গই।

উন্নীসবাঁ পাঠ।

এ পর্য্যন্ত = অবতক
যত = জিতনে
হাতী = হাথী
সিপাই = সিপাহী
সান্ত্রী = হথিয়ারবন্দ সিপাহী, পহরেদার
লোক-লস্কর = মনুষ্য-ফৌজ
ধনুক = ধনুষ
পিট্টান্ = ভাগনা
কেহবা = কোই ভী
কাজেই = লাচার হো
একে একে = এক এক
জাঁকজমক = শানশৌক্
আসাই = আনা হী
মহাভাবনায় = বড়ী [
এত সাধের = ইতনী
এনে দাও = লা দো
প্রভু = ইশ্বর

---

(১৯)

দলে দলে যত রাজা রাজপুত্র সব আসিল। ঘোড়া, সিপাই-সান্ত্রী, লোক-লস্কর যে কত, তার কার আগে কে ধনুক ধরিবে তা নিয়ে বিবাদ। ধনুক দেখিয়াই পিট্টান্, কেহবা তুলিতে (কেহবা তুলিলেন, কিন্তু ছিলা দিতে কেহই পারি(ত দূরের কথা। কাজেই একে একে সব সীতার আর বিবাহ হইল না। কেহ কেহ শ্রুতকীর্ত্তিকে বিবাহ করিতে চাহিলেন; কি

না হইলে তাঁহাদের বিয়ে কিরূপে হয়? রাজপুত্রদের কেবল ঝাঁকজমক করিয়া আসাই সার হইল।

রাজর্ষি জনক মহাভাবনার মধ্যে পড়িলেন—আমার এত সাধের মেয়ে, তার বিয়ে হইবে না? আমি কেন এমন প্রতিজ্ঞা করিলাম। আমার দোষেই ত এমন হইল।—রাজা নিজকে নিজে কত নিন্দা করেন। যোড়হাতে সজলনয়নে ভগবানকে ডাকেন, আর বলেন, "প্রভু! সীতার বর কোথায়? এনে দাও প্রভু।"

(১৫)

दलके दल जितने राजा, राजपुत्र (थे) सब आये। साथमें हाथी, घोड़ा, सिपाही-पहरेदार, मनुष्य फौज कितनी (थी), उसकी संख्या नहीं (है)। किसके पहिले कौन धनुष उठायगा अब इसीका झगड़ा (है)। कोई राजा धनुष देखकर ही भागे, किसीने उठानेकी चेष्टा की, किसीने उठाया, परन्तु कोई भी चाँप न चढ़ा सका—तोड़ना तो दूरकी बात (है)। लाचार हो एक एक करके सब चले गये। सीताका व्याह नहीं हुआ। किसी किसीने उर्म्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्त्तिसे व्याह करना चाहा, परन्तु सीताका व्याह बिना हुए, उनका व्याह कैसे हो? राजपुत्रोंका केवल शानशौकतसे आना भर ही हुआ।

राजर्षि जनक बड़ी चिन्तामें पड़े—मेरी इतनी प्यारी लड़की, उसका व्याह न होगा? मैंने क्यों ऐसी प्रतिज्ञा की। मेरे दोषसे ही तो ऐसा हुआ।—राजा अपनी आप कितनी निन्दा

করতে থে। হাথ জোড়কর আঁখোঁমেঁ আঁসু ভরে হুএ ইষ্ট পুকারতে ঔর কহতে থে—"প্রভু! সীতাকা বর কহাঁ (হৈ) দো প্রভু।"

বীসবাঁ পাঠ।

ঠাট্টা = ঠট্টা বল = কহো
সই = সখী উহা = বহ
কপালে = ভাগ্যমেঁ অদৃষ্ট = ভাগ্য, কর্ম
জুটিবার = জুটনেকা, মিলনেকা ফিরিয়া গেলেন =
যা হয় = জো হো, জো জী চাহে

(২০)

সীতার মনে কোন চাঞ্চল্য নাই। কত রাজা রাজপুত্র আসিলেন, ধনুকে ছিলা পরাইতে না গেলেন। কাহারও কথাই সীতার মনে উঠিল উঠিলে কি? তবু তাঁহার বিপদ উপস্থিত—সখ তাঁর থাকিবার উপায় নাই। তারা তাঁকে কত ঠাট্টা এক রাজা আসে, আর অমনি "সই, তোর 'বর এ বলিয়া অস্থির করে। যেই চলিয়া যায় অমনি কপালে বিয়ে নাই" বলিয়া দুঃখ করিতে থাকে।

ইহাতে সীতার মনে কোন উদ্বেগ নাই। "ভগবান যাঁকে নির্দ্দেশ করিয়াছেন, তিনি অ রক্ষা হইবে। তাঁর ইচ্ছা না হইলে, তোরা য দিলে ত হইবে না।" সখীরা বলে—"তো

সৃষ্টিছাড়া পণ তাতে যমরাজ ভিন্ন অন্যবর জুটিবার উপায় নাই।"

সীতা বলেন "বাবা আমার ভালর জন্যই পণ করিয়াছেন। তোমরা আমাকে যা হয় বল—বাবার কথা কেন?—মা-বাপ যা করেন, সন্তানের মঙ্গলের জন্যই করেন। তাতে যদি সন্তান দুঃখ পায়, উহা তার অদৃষ্টের ফল।"

(২০)

सीताके मनमें कोई चाञ्चल्य नहीं है। कितने राजा आये, राजकुमार आये, धनुष पर चाँप न चढ़ा सकनेके कारण लौट गये। किसीकी बात भी सीताके मनमें न उठी। उसके नहीं उठनेसे क्या (हुआ)? तब भी उनकी विपद उपस्थित (है)—सखियोंके पास अब उनके रहनेका उपाय नहीं (है)। वे सब उनसे कितना ठट्ठा करती (हैं)। एक एक राजा आता है, इस तरह "सखी! तेरा वर आया" "वर आया" कहकर तङ्ग करती हैं। ज्योंही (वह) चला जाता है त्योंही "सखी, तेरे भाग्यमें विवाह नहीं है" कहकर दुःख करती हैं।

इससे सीताके मनमें कोई उद्वेग नहीं (है)। सीता कहती हैं—"भगवान्‌ने जिसको निर्द्दिष्ट किया है उनके आनेपर अवश्य प्रणकी रक्षा होगी। उनकी इच्छा न होनेपर, तुम सब जिसको चाहो (उसको) देनेसे तो न होगा।" सखी कहती हैं—"तुम्हारे पिताकी जैसी दुनियासे बाहर प्रतिज्ञा है, उससे यमराज भिन्न दूसरा वर मिलनेका उपाय नहीं है।"

सीता कहती थीं—"पिताने मेरे भलेके लिये ही प्रण किया

है। तुम सब मुझे जो चाहो कहो—पिताकी बात (कहती हो)? मा बाप जो करते हैं सन्तानके मंगलके ही करते हैं। उससे यदि सन्तान दुःख पाय (तो) वह उस भाग्यका फल है।"

इक्कीसवाँ पाठ।

প্রকাণ্ড = बहुत बड़ा
বাড়ী = मकान
তোরণ = फाटक
কারুকার্য্যে = कारीगरीके कामसे
খচিত = खचा हुआ
চওড়া = चौड़ा
পাশে = ओरमें
বিকালবেলা—तीसरेपहर
উড়িয়া = उड़कर
বেড়াইতেছে = घूमती है
বাতাস = हवा
চুপি চুপি = चुपचाप
পালাইতেছে = भागती है
ডুবিতেছে = डूबती है
উঠিতেছে = उठती है उतराती है
ঢেউয়ে ঢেউয়ে = तरङ्गोंपर,
গড়া = बनाया हुआ,
তাড়া খাইয়া = धक्का खाकर
রাঙ্গা = रंगीन

(২১)

রাজর্ষি জনকের প্রকাণ্ড বাড়ী। সম্মুখের তোরণটি বে স্বন্দব। নানা কারুকার্য্যে খচিত। তোরণেব বাহিরে চও রাস্তা। রাস্তার দুই পাশে সুন্দর ফুলের বাগান। বিক বেলা বাগানে নানাবিধ ফুল ফুটিতেছে; অলিগণ ফুলের খাইবার জন্য গুন্ গুন্ কবিয়া উড়িয়া বেড়াইতেছে। বাত

ফুলের মধু চুরি কবিয়া, চুপি চুপি পালাইতেছিল, পশ্চিম দিকে রাঙ্গা রবির তাড়া খাইয়া যেন নদীর জলে পড়িয়া গেল। জলের উপর দিয়া দৌড়িতে দৌড়িতে—একবার ডুবিতেছে আবার উঠিতেছে। ঢেউয়ে ঢেউযে এক ববি যেন শত রবি হইয়া তার পিছনে পিছনে ছুটিতেছে।

তোরণটি বেশী উচ্চ নয়। তার সামনে ফুলের বাগান। কাতারে কাতারে ফুলের গাছ। গাছে গাছে ফুল আর ফুলের কলি—কোনটি ফুটিয়াছে, কোনটি ফোটা ফোটা হইয়াছে। এই খানি সীতাব আপন হাতে গড়া ফুলবন। সাঁঝের ধূসর আঁধার আসিবার আগেই রোজ সীতা ফুলবনে দেবীর মত বোন্‌দিগকে সাথে লইয়া গাছে গাছে জল দিতে আসেন। আজও আসিয়াছেন। জল দেওয়া শেষ হইয়াছে। সীতার হাতের জল পাইয়া গাছগুলি যেন আনন্দে হাসিয়া উঠিয়াছে।

(২১)

রাজর্ষি জনককা মকান বহুত বড়া (হৈ)। সামনেকা ফাটক বহুত সুন্দর (হৈ)। বহুতসে কারীগরোঁকে কামসে খচা হুআ (হৈ)। ফাটককে বাহর চৌড়া রাস্তা (হৈ)। রাস্তেকে দোনোঁ তরফ় সুন্দর ফূলকা বাগ় (হৈ)। তীসরে পহরকো বাগমেঁ বহুত তরহকে ফূল খিলতে হৈঁ; ভৌঁরে ফূলকা মধু পীনেকে লিয়ে গুন্ গুন্ করকে উড়তে ফিরতে হৈঁ। হবা ফূলকা মধু চোরী করকে চুপচাপ ভাগতী থী, (পরন্তু) পশ্চিম ওর রংগীন সূর্য্যকা ধক্কা খাকর মানো নদীকে জলমেঁ গির পড়ী।

पानीके ऊपरसे दौड़ती दौड़ती—एकबार डूबती है, फिर उतराती है। ढेङ्ग ढेङ्गपर एक रवि मानों सौ रवि होकर उसके पीछे पीछे दौड़ते हैं।

फाटक बहुत ऊँचा नहीं (है)। उसके सामने ही फूलका बाग़ (है)। क़तारसे फूलके पेड़ (हैं), पेड़ पेड़में फूल और फूलकी कलि—कोई खिली है और कोई खिलने खिलनेपर है। यह सीताका अपने हाथका बनाया हुआ फूलबन है। सन्ध्याका धूसर अँधेरा आनेके पहिलेही रोज़ सीता फूलबनमें देवीकी भाँति बहिनोंको साथ लेकर पेड़ पेड़में जल देने आती हैं। आज भी आई हैं। पानी देना समाप्त हो गया है। सीताके हाथका जल पाकर पेड़ मानों आनन्दसे हँस उठे हैं।

सावित्री।

बाईसवाँ पाठ।

ঘুরে ঘুরে = घूम घूमकर	আড় = आड़, अन्तराल
দেখাতে = दिखाने	পাছে = पीछे
লাগিলেন = लगे	হারাতে হয় = खोना पड़ता है
ফিঙ্গে = एक प्रकारकी चिड़िया	দিকে = तरफ़
ময়ূর = मोर	এক দৃষ্টিতে = टकटकी बाँधकर
নাচছে = नाचता है	চেয়ে আছেন = देख रही हैं
আলো = रोशनी	হাওয়ায় = हवामें
দেখ্‌ছো = देखती हो तो?	পাতা = पत्ता

আজ ও-কি দেখ্‌বেন = আজ বহ ক্যা দেখেঁগী	নড়ে = হিলতা হৈ
	বুক = কলেজা
কেঁপে উঠে = কাঁপ উঠতা হৈ	ছিনিয়ে = ছীনকর
শুক্‌নো = সুখা হুআ	নিতে = লেজানেকী লিয়ে
ঝরে পড়ে = ঝড়কর গিরতা হৈ	আস্‌চে = আতা হৈ

সাবিত্রী।

(২২)

এ দিক ও দিক ঘুরে' ঘুরে' সত্যবান সাবিত্রীকে বনের শোভা দেখা'তে লাগ্‌লেন। ঐ দেখ, ঐ ফিঙ্গে উড়্‌ছে, অশোক ডালে ময়ুর নাচ্‌ছে,—ও সাবিত্রী, দেখ্‌ছ তো?—সাবিত্রী আজ ও কি দেখ্‌বেন! চোখের আড় কর্‌লে পাছে হারাতে হয়, এই ভয়ে তিনি স্বামীর মুখের দিকে একদৃষ্টিতে চেয়ে আছেন। হাওয়ায় গাছের পাতা নড়ে,—সাবিত্রীর বুক কেঁপে উঠে! শুক্‌নো পাতা ঝ'রে পড়ে—সাবিত্রী ভাবেন, ঐ বুঝি কে সত্যবানকে ছিনিয়ে নিতে আস্‌চে!

(২২)

ইধর উধর ঘূম ঘূম কর সত্যবান সাবিত্রীকো বনকী শোভা দিখানে লগে। যহ দেখো, যহ ফিঙ্গে উড়তা হৈ, অশোককী ডালপর মোর নাচতা হৈ—এ সাবিত্রী, দেখতী হো তো?—সাবিত্রী আজ বহ ক্যা দেখেংগী! আঁখকী ওট করনেপর খোনা পড়েগা ইসী ভয়সে বহ স্বামীকে মুঁহকী ওর একদৃষ্টিসে দেখ রহী হৈং। হবাসে পেড়কা পত্তা হিলা,—সাবিত্রীকা

কলেজা কাঁপ উঠা! সূখা পত্তা ঝড়কার গিরনেসে—সা যহ সমঝকার কি কোঈ সত্যবানকো ছীন লেনেকে লিয়ে চিন্তিত হুঈ।

তেঈসবাঁ পাঠ।

হাত = হাথ
আপন = অপনা
চেপে ধরেন = দবা ধরতী হৈ
ভয় ভয় কর্‌চে = ডর মালুম হোতা হৈ
কাঠ = লকড়ী
কেটে = কাটকর
চল = চলো
কাট্‌তে = কাটনেকে লিয়ে
উঠ্‌লেন = উঠে, চঢ়ে
তলায় = নীচে
দাঁড়িয়ে = খড়ী হোকর
পানে = ওর
রইলেন = রহী
হয়েছে = হুআ হৈ
ডেকে ডেকে = পুকার পুকার কর

নেমে এস = উতর আও
ফুরিয়ে গেল—বীত গয়
আঁধার = অঁধেরা
খণ্ডান জায় = কাটী
ব্যথায় = দর্দসে
মাথার = মাথেকো
দারুণ = ভয়ানক,
ছট্‌ফট্ = ছটপট
ঢলে পড়্‌লেন = ঢ
দেহ = শরীর
কালি = কালা
হয়ে গেছে = হো
মুখ দিয়ে = মুঁ
ফেনা উঠ্‌ছে =
আঁখির পাতা

(২৩)

অমনি তিনি দ্বিগুণ জোরে স্বামীর হাত আপন হাতে চেপে ধরেন। সাবিত্রী বল্‌লেন—আমার কেমন ভয় ভয় কর্‌চে, তুমি শীঘ্র কাঠ কেটে ঘরে চল। সত্যবান আর দেরি না ক'রে কাঠ কাট্‌তে গাছের উপর উঠ্‌লেন। গাছের তলায় দাঁড়িয়ে সাবিত্রী স্বামীর মুখের পানে চেয়ে রইলেন। "কাটা ডালের স্তূপ হয়েছে, কাঠের বোঝা ভারি হয়েছে— এখন নেমে এস!" সাবিত্রী গাছের তলা থেকে ডেকে ডেকে বলছেন—নেমে এস, এখন নেমে এস! বেলা যে ফুরিয়ে গেল, বনের পথ আঁধার হ'ল—এখন নেমে এস!

সত্যবান গাছের উপর থেকে এক-পা দু-পা করে নীচে নেমে আস্‌চেন, এমন সময়—বিধির লিপি না খণ্ডান যায়—দারুণ মাথার ব্যথায় ছট্‌ফট্ ক'রে তিনি গাছের তলায় ঢ'লে পড়্‌লেন। সাবিত্রী ছুটে' এসে দেখেন—স্বামীর দেহ কালি হ'য়ে গেছে, মুখ দিয়ে ফেনা উঠ্‌ছে, আঁখির পাতা নড়ে না—হায় হায়, এ কি হল!

(২২)

यह विचार कर उसने दूने ज़ोरसे स्वामीका हाथ अपने हाथमें चाँपकर पकड़ लिया। सावित्रीने कहा—मुझे कैसा भय मालूम होता है, तुम जल्दी लकड़ी काटकर घर चलो। सत्यवान और देर न करके लकड़ी काटनेके लिये पेड़पर चढ़े। पेड़के नीचे खड़ी होकर सावित्री स्वामीके मुँहकी ओर

देखती रही। "काटी हुई डालकी ढेर हुई है. बोझा भारी हुआ है—अब उतर आओ!" पेड़के नीचेसे पुकार पुकारकर कहती है—"उतर आ उतर आओ! समय हो गया, बनकी राह अँ अब उतर आओ!"

सत्यवान पेड़के ऊपरसे एक पैर दो पैर उतरे आते हैं, ऐसेही समय—भाग्यका लिखा हुआ जाता—माथेके भयानक दर्दसे छटपटाकर वह ढलक पड़े। सावित्रीने दौड़कर देखा—स्वामीका हो गया है, मुँहसे फेन निकल रहा है, नहीं हिलती—हाय, हाय, यह क्या हुआ!

चौबीसवाँ पाठ।

এক ধারে = एक ओर	বাদুড় = चम
দেহ = शरीर	ঝুলচে =
কোণের বধূ = दुलहिन	খসে পড়চে
একলা = अकेली	দুপুর = दो
ফেটে = फटकर	কেটে (
কান্না = रोना	সাড়া =
উথ্‌লে = उथलकर	শক্ত =
বুক চেপে = कलेजा दबाकर	হ'য়ে =
শেয়াল = सियार	আগলে
ডাকচে = पुकारता है, बोलता है	

(২৪)

এক ধারে কাঠের বোঝা, এক ধারে স্বামীর দেহ—কোণের বধূ সাবিত্রী এই আঁধার বনে একলা এখন কি কর্‌বেন! বুক ফেটে তাঁর কান্না উথ্‌লে উঠ্‌ল—জোর ক'রে, তিনি বুক চেপে স্বামীর দেহ কোলে তুলে' বনের ভিতর ব'সে রইলেন।

আঁধার পক্ষের আঁধার রাত। ঘুরঘুট্টি আঁধারের মাঝে শেয়াল ডাকৃচে, বাদুড় দুল্‌চে, গাছের পাতা খসে পড়্‌চে—সাবিত্রী স্বামীর দেহ বুকে চেপে স্বামীর মূর্ত্তি ধ্যান কর্‌চেন। দেখ্‌তে দেখ্‌তে দুপুর রাত কেটে গেল, তবু তো তাঁর সাড়া নেই—কাঠের মত শক্ত হ'য়ে সাবিত্রী স্বামীর দেহ আগ্‌লে রইলেন।

(२४)

एक ओर काठका बोझा, एक ओर स्वामीका शरीर—दुलहिन सावित्री इस अँधेरे बनमें अकेली इस समय क्या करेगी! कलेजा फटकर उनको रुलाई आई—ज़ोर करके, कलेजा दबाकर वह स्वामीके शरीरको गोदमें उठाकर बनमें बैठी रहीं।

अँधेरे पक्षकी अँधेरी रात (है)। घनघोर अँधकारमें सियार बोलता है, चमगादड़ डोलता है, पेड़का पत्ता खिसक पड़ता है—सावित्री स्वामीका शरीर कलेजेमें दबाकर स्वामीकी मूर्त्तिका ध्यान करती है। देखते देखते दो पहर रात्रि बीत गई, तब भी तो उनका शब्द नहीं—(सुन पड़ा है)

কাঠকী ভাঁতি কঠোর হোকর সাবিত্রী স্বামীকে শরীরকো লিয়ে রহী।

উমা।

পচ্চীসবাঁ পাঠ।

ক্রমে ক্রমে = ধীরে ধীরে
শিশু = বচ্চা
একটু একটু করিয়া = থোড়া থোড়া করকে
একটুখানি = ছোটা, থোড়া
জ্যোৎস্না-পরিপূর্ণ = জ্যোতি ভরা, চাঁদনী ভরা
সেরূপ = উস তরহ
দিন দিনই = দিনো দিন
বাড়িতে লাগিল = বঢ়নে
লয় = লেনা যা
চাঁদপানা = চাঁদ সরীখা
জোছ্না মাখা = জ্যোতি ম
বিলাইতেই = বাঁটনেকে লি

(২৫)

ক্রমে ক্রমে শিশু কন্যাটী বড় হইয়া উঠিল। প্রতি
চন্দ্র যেমন প্রথম একটুখানি থাকে, আর প্রতিদিনই একটু
করিয়া বড় হইয়া জোৎস্না-পরিপূর্ণ ও মনোহর হইয়া
হিমালয়ের শিশু মেয়েটীও সেরূপ ক্রমে ক্রমে বড় হইয়া উ
দিন দিনই উহার সৌন্দর্য্য বাড়িতে লাগিল।
যে দেখে, সেই আদর করে, যে দেখে, সেই কোলে লয়।
চাঁদপানা মুখ, তেমনি জোছ্নামাখা শরীর; তা আবার
মত কোমল, এমন মেয়ে কি আর হয়! মনে হয় যেন

বীতে আনন্দ বিলাইতেই ভগবান মেয়েটীকে আনন্দধাম থেকে পাঠিয়ে দিয়েছেন !! হিমালয়ের বাড়ীতে রোজ বন্ধু বান্ধবগণ আসিতে লাগিল। তাহারা ত মেয়ের রূপ দেখিয়া অবাক। পর্ব্বতের মেয়ে কিনা, তাই সকলে আদর করিয়া উহাকে "পার্ব্বতী" বলিয়া ডাকিত।

পার্ব্বতীর মা বাপের কথা আর কি বলিব। পার্ব্বতীকে পেয়ে তাঁহারা যেন হাতে চাঁদ পেয়েছেন। মেয়ের দিকে চাহিলে, তাঁহাদের আর ক্ষুধা, তৃষ্ণা থাকে না। এক মিনিট মেয়েটী চোখের আড়াল হইলে মা বাপ যেন অস্থির হইয়া পড়েন।

উমা।

(২৫)

धीरे धीरे बच्चा कन्या बड़ी हो गई। प्रतिपदाका चन्द्र जिस तरह पहले छोटासा रहता है और रोज़ रोज़ थोड़ा थोड़ा बड़ा होकर ज्योति भरा और मनोहर हो जाता है, हिमालयकी बच्ची कन्या भी उसी तरह धीरे धीरे बड़ी हो गई। दिनों दिन उसका सौन्दर्य्य बढ़ने लगा। लड़कीको जो देखता (है), वही प्यार करता (है), जो देखता है, वह गोदमें लेता (है)। जिस तरह चाँदसरीखा मुँह, वैसा ही ज्योतिभरा शरीर (है); वह फिर मखनसा कोमल है। ऐसी लड़की क्या दूसरी होती है। मनमें आता है, मानों पृथिवीमें आनन्द बाँटनेके लिये ही भगवान्‌ने लड़कीको आनन्दधामसे भेज दिया है !! हिमालयके

मकानपर रोज़ बन्धु बान्धवगण आने लगे। वे तो लड़की रूप देखकर अवाक (हो गए)। पर्व्वतकी लड़की है कि इसीसे सभी प्यार करके उसे "पार्वती" कहकर पुकारते हैं।

पार्वतीके माँ बापकी बात और क्या कहूँगा। पा° को पाकर उन्होंने मानों हाथमें चाँद पाया है। लड़कीक ओर देखने पर उन्हें फिर भूख प्यास नहीं रहती है। मिनिट लड़की आँखोंकी ओट होने पर माँ बाप मानों अस्थि हो जाते हैं।

छब्बीसवां पाठ।

বাটী = कटोरी	সাদা সাদা = सफ़ेद सफ़ेद
ঝিনুক = सीपी, चमच	বালিগুলি = बालू
এনে দিলেন = लादिया	রূপার মত = चाँदीके समान
পুতুল খেলার = गुड़िया खेलनेका	ঝিক্‌মিক্ করে = चमकता था, भिलमिलाता था
পুতুল = गुड़िया, पुतली	বালিরাশিতে = बालूकी ढेरमें
সাটীনের = साटनका	পরিবেশন করে = परोसती थी
জামা = कपड़ा, पोषाक	আধ আধ স্বরে = तोतली भाषामें
বেগুনে = बैंगनी	
ঝল্‌মল্ = भिलमिल	বয়স = अवस्था, उम्र
বহিয়া চলিয়াছে = बह चली है	

(২৬)

বাপ আদরকরে মেয়ের জন্য সোণার ডুখের বা

ও হীবার ঝিনুক এনে দিলেন। পার্ব্বতী যখন আধ আধ স্বরে "মা" বলিত, তখন মেনকার আনন্দ দেখে কে। ক্রমে পার্ব্বতীর বয়স ৩।৪ বৎসব হইল। এখন ত পুতুল খেলার সময়। পার্ব্ব-তীর পুতুলের অভাব কি ? কত সোণার পুতুল, রূপার পুতুল, ফটিকের পুতুল, আর তাদের কত রকমেব জামা। সাটিনের জামা, রেশমের জামা ; লাল, নীল, বেগুনে, কত রঙ্গের জামা, আর তার মাঝে হীরা, মাণিক, ঝল্ মল্ করে। পার্ব্বতী খেলার সাথীদেব সঙ্গে পুতুল খেলা কবে। পুতুলের বিয়ে হয়, আর কত আমোদ প্রমোদই বা হয়। রাজবাড়ীর পাশ দিয়াই গঙ্গা নদী বহিয়া চলিয়াছে। উহার তীবে সাদা সাদা বালিগুলি রূপার মত ঝিক্-মিক্ করে। পার্ব্বতী সখিগণ লইয়া সেই বালিরাশিতে খেলা করিতে যায়। সোণার হাঁড়িতে বালি দিয়া ভাত রাঁধে, আর পুতুলেব বিয়ের সময় সকলকে নিমন্ত্রণ করে খাওয়ায়। ববের বাড়ী হইতে কত লোকজন আসে, পার্ব্বতী সোণার থালে বালির ভাত ও পাতার তবকারী পবিবেশন করে।

(২৬)

बापने प्यार करके लड़कीके लिये सोनेकी दूधकी कटोरी और हीरेका चमच ला दिया। पार्वती जब तोतली स्वरमें "माँ" कहती (थी) उस समय मेनकाका आनन्द कौन देखे। धीरे धीरे पार्वतीकी अवस्था तीन चार वर्षकी हुई। अब तो गुड़िया खेलनेका समय (है)। पार्वतीको गुड़ियेका क्या अभाव (है) ? कितनी ही सोनेकी पुतली, चाँदीकी पुतली, स्फटिककी

पुतली और उनकी कितने रंगकी पोषाक
रेशमकी पोषाक,लाल,नीली, बैंगनी f
उसकी बीचमें हीरा, माणिक, झिलमिल
की साथिनोंके साथ गुड़िया खेलती है। गु
है और कितनी ही हँसी खुशी होती हैं। र
गंगानदी वह चली है। उसके किनारे पर
चाँदीकी तरह झिलमिल करती है। पार्वती
उसी बालूकी ढेरमें खेलने जाती है। सोने
डालकर भात सिझाती है और गुड़ियेके
सभोंको निमन्त्रण करके खिलाती है। वरके
मनुष्य आते हैं, पार्वती सोनेकी थालीमें
पत्तेकी तरकारी परोसती है।

सत्ताईसवां पाठ।

जामाई-बाड़ी = जवाँईके घर
कान्ना = रोना
खेलाधूलाय़ = खेल कूदमें
शिखिबार = सीखनेका
गुरुमा = शिक्षिका
फला = युक्त अक्षर
बानान = वर्ण-विचार
शेष = समाप्त
छबिर = तस्वीरकी,
बई = किताब
आनिय़ा दिलेन —
से गुलि = वह सब
हासे = हँसती थी
गिलिते चाय़—निगल

(২৭)

আর মেয়ে পুতুলটীকে জামাই-বাড়ী নিয়ে গেলে, পার্ব্বতী কান্না আরম্ভ করে। সে দিন রাত্রিতে আর ভাত খায় না। এমনি ভাবে খেলাধূলায় পার্ব্বতীর দিন চলিতে লাগিল। এসব দেখিয়া বাপ মায়ের মনে আর আনন্দ ধরে না। ক্রমে পার্ব্বতীর লেখাপড়া শিখিবার সময় হইল। সে রাজকন্যা, তার ত আর স্কুলে গিয়া পড়িতে হইবে না। পর্ব্বতরাজ বাড়ীতেই গুরুমা রাখিয়া দিলেন। পার্ব্বতী সোণার পাতায় হীরার কলম দিয়া 'ক' 'খ' লিখিতে লাগিল। ছয় মাসের মধ্যেই ফলা, বানান, শেষ হইয়া গেল। এখনত ছবির বই পড়িবার সময়। বাপ আদর করিয়া কত সুন্দর সুন্দর ছবির বই আনিয়া দিলেন. পার্ব্বতী সেগুলি দেখে, আর হাসে। কি সুন্দর ছবি! একটা বেঙ কিনা একটা হাতী গিলিতে চায়। বেঙের কি সাহস। পার্ব্বতী ছবি দেখিয়া হাসে, আর মনে মনে ভাবে, বেঙ কি কখনও হাতী গিলিতে পারিবে!

(২৩)

ঔর কন্যা গুড়িয়েকো জবাঁইকে ঘর লে জানেপর পার্ব্বতী রোনা আরম্ভ করতী হৈ। উস দিন রাতকো ফির ভাত নহীঁ খাতী। ইসী ভাবসে খেলকূদমেঁ পার্ব্বতীকা দিন বীতনে লগা। যহ সব দেখকর বাপ মা কে মনমেঁ আনন্দ নহীঁ সমাতা। ক্রমসে পার্ব্বতীকা লিখনা পঢ়না সীখনেকা সময় হুআ। বহ রাজকন্যা (হৈ), উসে তো স্কুল জাকর পঢ়না ন

উন্নীসবাঁ পাঠ।

গানও = গানা ভী
রাঁধিতে = রসোই বনানা
তখনকার = উস সময়কী
ছাড়া = ছোড়কর, অলাবা
শিখিয়াছিল = সীখা থা
বাবুগিরি = বাবুআনী
কাটাইতে = কাটনে
স্বামীকে = পতিকো
ছুটাছুটি = দৌড়-ধূপ
লুকোচুরী = লুক্কাচোরী
বাল্যকাল = লড়কপন
যৌবন = জবানী
চলিয়া গেল—বীত গয়া

(২৯)

পার্ব্বতী যে শুধু লেখাপড়া শিখিয়াছিল, তা নয়। গু. তাকে গানও শিখাইয়া ছিলেন। সন্ধ্যার সময় পার্ব্বতী য গুরুমার নিকট গান করিত, তখন তাহার সুমিষ্ট স্বর শু সকলে মুগ্ধ হইয়া যাইত। দেবতাও এমন সুন্দর গান . পারেন না। গান ছাড়া পার্ব্বতী রাঁধিতেও শিখিয়াছিল। কার রাজকন্যারা কেবল বাবুগিরি করিয়া দিন কাটাইত বিয়ের পর তাহারা হাতে রাঁধিয়া স্বামীকে খাও. পার্ব্বতী যে শুধু পুতুল খেলা করিত, তা নয়। অনেক সখীদের সঙ্গে ছুটাছুটি করিত, লুকোচুরি খেলিত, আরও রকমের খেলা খেলিত। ইহাতে তাহার শরীরে যেমন শ হইয়াছিল, তেমন সৌন্দর্য্যেরও বৃদ্ধি হইয়াছিল। এ . পার্ব্বতীর বাল্যকাল চলিয়া গেল এবং যৌবন আসিয়া পড়িল

(२८)

पार्वतीने केवल लिखना पढ़ना सीखा था, वही नहीं। गुरुआनीने उसको गाना भी सिखाया था। सन्ध्याके समय पार्वती जब गुरुआनीके पास गाती (थी) उस समय उसका मीठा स्वर सुनकर सभी मुग्ध हो जाते थे। देवता भी ऐसा सुन्दर गाना नहीं गा सकते थे। गानेके अलावे पार्वतीने (भोजन) पकाना भी सीखा था। उस समयकी राजकन्याएँ केवल बाबुआनी करके दिन नहीं काटती थीं। विवाहके बाद वे अपने हाथसे पकाकर स्वामीको खिलाती (थीं)। पार्वती केवल गुड़िया खेलती थी सो नहीं। बहुत बार सखियोंके सङ्ग दौड़-धूप करती, लुक्का-चोरी खेलती, और भी नाना प्रकारके खेल खेलती थी। इससे उसके शरीरमें जैसी शक्ति हुई थी, वैसा सौन्दर्य्य भी बढ़ गया था। इसी तरहसे पार्वतीका लड़कपन बीत गया और जवानी आ पहुँची।

तीसवां पाठ।

বাড়িয়া উঠিল = बढ़ उठा	আঁকিয়া রাখিয়াছে = अङ्कित कर रखी है
বিকসিত হইয়া উঠে = खिल उठता है	পায়ের = पैरकी
চেহারা = चेहरा	অঙ্গুলিতে = उँगलीमें
চিত্রকর = चित्रकार, तस्वीर बनानेवाला	হাটিয়া যাইত = हट जाती
	বোধ হইত = मालूम होता था

আল্‌তার রস = **अलतीका रस** হাঁটু = **घुटनी**
বাহির হইতেছে = **निकल रहा** সরু = **पतला**
है শিরিষ = **सिरीस**
মাটীতে = **मिट्टीमें** কুসুম = **फूल**
স্থলপদ্ম = **भूमिकमल**

(৩০)

পার্ব্বতীর শরীর স্বভাবতঃই সুন্দর। এখন যৌবনকাল তাহার শরীরের লাবণ্য যেন আরও বাড়িয়া উঠিল! সূর্য্যে কিরণে পদ্ম যেমন বিকসিত হইয়া উঠে, নবযৌবনের উদ পার্ব্বতীর শরীরও তেমনি অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করিল। তখ তাহার চেহারা দেখিলে মনে হইত যে, কোন চিত্রকর যেন এ খানা ছবি আঁকিয়া রাখিয়াছে। পার্ব্বতীর পায়ের অঙ্গুলিতে নখ আছে তাহা এমন লাল এবং এমনই উজ্জ্বল যে, সে যখ হাটিয়া যাইত, তখন বোধ হইত যেন নখ হইতে আল্‌তার র বাহির হইতেছে। আর মাটিতে উহার এমনই জ্যোতিঃ হ যে, লোকে মনে করিত, মাটিতে বুঝি স্থলপদ্ম ফুটিয়াছে পার্ব্বতীর হাঁটু দুটি কেমন সুশ্রী, উপরে গোল এবং পরে সরু হইয়া আসিয়াছে। উহাতে লাবণ্যই বা কত! কথায় বলে যে শিরীষ ফুলের মত কোমল জিনিষ আর কিছু নাই। কিন্তু পার্ব্বতীর বাহু দুটি শিরিষ কুসুম অপেক্ষাও কোম

(३०)

पार्वतीका शरीर स्वभावतः ही सुन्दर (है)। अब यौ

नका समय (है)—उसके शरीरका लावण्य मानों और भी बढ़ उठा! सूर्यकी किरणसे कमल जैसे खिल उठता है, नये यौवनके उदयसे पार्वतीके शरीरने भी वैसी ही अपूर्व शोभा धारण की। उस समय उसका चेहरा देखनेसे जीमें आता था कि किसी चित्रकारने मानों एक तस्वीर अङ्कित कर रखी है। पार्वतीके पैरकी उँगलीमें जो नख है वह ऐसा लाल और ऐसा ही उज्ज्वल है कि वह जिस समय चलती थी, उस समय मालूम होता था मानों नखसे अल्-तेका रस निकल रहा है। और मिट्टीमें उसकी ऐसी ज्योति होती थी कि मनुष्य समझते थे कि मिट्टीमें मालूम होता है स्थलपद्म खिला है। पार्वतीके घुटने दोनों कैसे सुन्दर हैं। ऊपर गोल और फिर क्रमश: पतले होते आये हैं। उसमें लावण्य भी कितना (है)! लोग बातोंमें कहते हैं कि सिरीस फूलके समान कोमल पदार्थ और कुछ नहीं (है) परन्तु पार्वतीकी दोनों बाहें सिरीस फूलसे भी अधिक कोमल (हैं)।

इकतीसवां पाठ।

গলায় = गलेमें
মুক্তাগুলি = मोतियाँ
তুলনা = तुलना, उपमा
ভ্রূ = भौंह
পেছন দিক = पीछेकी ओर
ছুটিয়া বেড়ান = घूमते फिरते थे
হাটিতে হাটিতে = घूमते घूमते
ক্ষমতা = बल, शक्ति

वाँद देकर कहा—'देव-देव महादेव तुमसे विवाह करे' और तुम स्वामीकी बड़ी ही सोहागिनी होओगी।' म र्षिकी बात झूठी होनेकी नहीं। पर्वतराज भगवान् म देवको जामातारूपमें पानेके विचारसे बड़े प्रसन्न हुए। वि हकी अवस्था हो जानेपर भी पर्वतराजने पार्वतीके f हकी कोई तैयारी न की। वे जानते थे. (कि) महर्षिकी ब ही सच होगी। इससे वे निश्चेष्ट रहे।

बत्तीसवां पाठ।

পূর্ব্বে = पहिले	মাখিলেন = लगाया, मखा
একদা = एक समय	বাঘছাল = बघछल
দূরে থাকুক = दूर रहे	পরিধান = पहिरनेका वस्त्र
বরং = वरन्	পাগল সাজিয়া = पागल सज
ঝাঁপ দিয়া = कूदकर	সেই অবধি = तबसे
রাখিলেন = रखी	পাদদেশ = तराईमें

(৩২)

ভগবান্ মহাদেব পূর্ব্বে দক্ষরাজের কন্যা সতীকে করিযাছিলেন। একদা দক্ষরাজ এক যজ্ঞ আরম্ভ করে তাহাতে সকলেব নিমন্ত্রণ করা হয, কিন্তু দক্ষবাজ নিজকন্যা এবং জামাতা মহাদেবকে নিমন্ত্রণ কবিলেন না। সতী নিমন্ত্রণেই পিতার যজ্ঞে উপস্থিত হইলেন। দক্ষ সতীকে অ র্থনা করা দূরে থাকুক, বরং তাহাব নিকটেই মহাদেবের আবম্ভ করেন। পতিনিন্দা শ্রবণে নিতান্ত দুঃখিত হইয়া

অগ্নিকুণ্ডে ঝাঁপ দিয়া প্রাণত্যাগ করিলেন। সেই অবধি মহাদেব সংসার বাসনা পরিত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসীর মত দেশ বিদেশে ভ্রমণ করিতে থাকেন। তিনি মাথায় জটা রাখিলেন, শরীরে ভস্ম মাখিলেন, আর বাঘছাল পরিধান করিলেন। এইরূপে পাগল সাজিয়া, তিনি নানাস্থানে ঘুরিতে লাগিলেন। প্রিয়তমা পত্নী সতীর বিরহে তিনি বড়ই কাতর হইয়া পড়িলেন। অবশেষে নানাস্থান পর্য্যটন করিয়া, তিনি হিমালয়ের পাদদেশে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। সে স্থানটি অতিশয় নির্জ্জন এবং তপস্যার পক্ষে বেশ উপযুক্ত; সেখানে এক কুটীর বাঁধিয়া তিনি উপাসনা আরম্ভ করিলেন। তাঁহার সঙ্গে অনেকগুলি অনুচর আসিয়াছিল, তাহারাও সেখানে রহিয়া গেল। মহাদেব কি কঠোর তপস্যাই আরম্ভ করিলেন!

(३२)

भगवान् महादेवने पहिले दक्षराजकी कन्या सतीसे विवाह किया था। एक समय दक्षराजने एक यज्ञ आरम्भ किया। उसमें सभोंको निमन्त्रण किया गया, परन्तु दक्षराजने अपनी कन्या सती और जामाता महादेवको निमन्त्रण नहीं किया। सती बिना निमन्त्रणके ही पिताके यज्ञमें उपस्थित हुईं। दक्षने सतीकी अभ्यर्थना करना तो दूर रहा, वरन् उनके पास ही महादेवकी निन्दा आरम्भ की। पति-निन्दा सुननेसे अत्यन्त दुःखित हो, सतीने अग्निकुण्डमें कूदकर प्राणत्याग किया। तबसे महादेव संसारवासना छोड़

কর संन्यासीके समान देशविदेशमें घूमा करते थे। उन्ह
माथेमें जटा रखी, शरीरमें भस्म लगाया और बाघछल प
लिया। इसी तरह पागल सजकर वे नानास्थानमें
लगे। प्रियतमा पत्नी सतीके विरहमें वे बड़े ही कातर
पड़े। अन्तमें बहुतसे स्थानोंमें घूमकर, वे हिमालय
तराईमें आ पहुँचे। वह स्थान बड़ा ही निर्ज्जन और त
स्याके लिये अच्छा उपयुक्त (था); वहाँ एक कुटी बाँध
(बनाकर) उन्होंने उपासना आरम्भ की। उनके साथ
तसे अनुचर आये थे, वे भी वहाँ रह गये। महादेवने कै
कठोर तपस्या आरम्भ की!

तेतीसवाँ पाठ।

আগুণের = अग्निका
জ্বালিলেন = जलाया
জ্বলন্ত = जलती हुई
হুতাশন = अग्नि
তাপেই = गर्मीसे ही
পুড়িয়া যাইত = जल जाता
আনিয়া দিত = ला देती थी

(৩৩)

খোলা জায়গায় বসিয়া, সামনে এক আগুণের কু
জ্বালিলেন। উপরে প্রচণ্ড সূর্য্য, চতুর্দ্দিকে জ্বলন্ত হুতাশন
অন্যলোক হইলে আগুণের তাপেই পুড়িয়া যাইত! এরূপ কঠে
অবস্থায তিনি ধ্যান আরম্ভ করিলেন।

মহাদেব নিজেই ভগবান। তাঁহার ধ্যান কবিয়া কত লো
কৃতার্থ হইয়া যাইতেছে। মহাদেব স্বয়ং মঙ্গলময়, তিনি সকে

মঙ্গল বিধান করেন। তিনি যে কি জন্য ধ্যান করিতে বসিলেন, তাহা তুমি আমি বুঝিতে পারিব না। দেবতারা যে সকল কার্য্য করেন, তাহা কি তুমি আমি বুঝিতে পারি? মানুষের জ্ঞান বুদ্ধি খুব কম। এই জ্ঞান দ্বারা ভগবানের কার্য্য কলাপের কারণ নির্দ্দেশ করা যায় না।

পর্ব্বতরাজ হিমালয় যখন শুনিতে পাইলেন যে, ভগবান মহাদেব নিজরাজ্যে আসিয়া উপস্থিত হইয়াছেন, তখন তাঁহার আর আনন্দের সীমা রহিল না। তিনি পশুপতির নিকট উপস্থিত হইয়া বিনীতবচনে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন। বাড়ীতে ফিরিয়া আসিয়া তিনি পার্ব্বতী ও তাহার জয়া-বিজয়া নামক দুই সখীকে বলিলেন "তোমরা প্রত্যহ যাইয়া দেব-দেব পশুপতির সেবা কর।" পরদিন হইতে পার্ব্বতী পশুপতির সেবায় নিরত হইল। পার্ব্বতী স্ত্রীলোক, যুবতী, এমত অবস্থায় তপস্যাস্থলে গমন কবিলে তপস্যার বিঘ্ন হইতে পারে ইহা বুঝিয়াও মহাদেব পার্ব্বতীকে নিষেধ করিলেন না। কারণ মহাদেব অতি জিতেন্দ্রিয় পুরুষ ছিলেন। মহাপুরুষগণের মন সাধারণের মত চঞ্চল নহে। যে সকল কারণে সাধারণ লোকে চঞ্চল হইয়া উঠে, মহাপুরুষগণ তাহাতে ভ্রুক্ষেপও করেন না। মহাপুরুষ-প্রকৃতির লক্ষণই এই। পার্ব্বতী প্রতিদিন শিবের পূজার জন্য ফুল স্নানের জন্য জল আনিয়া দিত, যজ্ঞের স্থান পরিষ্কার কবিয়া রাখিত।

(২২)

खुली जगहमें बैठकर, सामने एक अग्निका कुण्ड

जलाया। ऊपर प्रचण्ड सूर्य, चारों ओर जलती हुई आ
दूसरा मनुष्य होनेसे अग्निकी गर्मीसे ही जल जाता! ऐ
कठोर अवस्थामें उन्होंने ध्यान आरम्भ किया।

महादेव स्वयं ही भगवान् (हैं), उनका ध्यान करके कि
ही मनुष्य कृतार्थ हो जाते हैं। महादेव स्वयं मङ्गलमय (
वे सभोंका मङ्गल विधान करते हैं। वे किस लिये ध्य
करने बैठे (हैं), वह हम तुम नहीं समझ सकते। देवता
जो सब काम करते हैं, वह क्या तुम हम समझ सकते (हैं
मनुष्यकी ज्ञान बुद्धि बहुत कम (है)। इसी ज्ञान द्वारा ई
रके कार्यकलापका कारण नहीं निर्देश किया जाता।

पर्वतराज हिमालयने जिस समय सुन पाया कि भगव
महादेव अपने राज्यमें आ पहुँचे हैं, उस समय उनके आ
न्दकी और सीमा न रही। उन्होंने पशुपतिके पास जा
विनीत वचनसे उनकी अभ्यर्थना की। मकानपर लौट
उन्होंने पार्वती और उसकी जया-विजया नामकी दोनों स
योंसे कहा "तुम सब रोज़ जाकर देव-देव पशुपतिकी
करो।" दूसरे दिनसे पार्वती पशुपतिकी सेवामें लग
पार्वती स्त्री (है), युवति (है); ऐसी अवस्थामें तपस्याके स्था
जानेसे तपस्यामें विघ्न हो सकता, यह समझकर भी म
देवने पार्वतीको मना नहीं किया; कारण महादेव
जितेन्द्रिय पुरुष थे। महापुरुषगणका चित्त साधारण
ष्योंकी भाँति चंचल नहीं (है)। जिन सब कार

साधारण मनुष्य चंचल हो उठते हैं, महापुरुषगण उनपर भ्रूक्षेप भी नहीं करते। महापुरुष प्रकृतिका लक्षण यही है। पार्वती प्रतिदिन शिवकी पूजाके लिये फूल और स्नानके लिये जल ला देती और यज्ञका स्थान साफ़ कर रखती (थी)।

चौंतीसवां पाठ।

পাত্রী = स्त्री
অনুসন্ধান = खोज
কোথাও = कहीं भी
প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন = प्रलय मचा सकते हैं
আনয়ন করা = लाना
সুতরাং = इसलिये
মিলিয়া = मिलकर
ঠিক = ठीक
পুনরায় = फिर

(৩৪)

সতীর দেহত্যাগের পর হইতেই দেবগণ মহাদেবের জন্য একটা উপযুক্ত পাত্রীর অনুসন্ধান করিতেছেন। সতী যেরূপ গুণবতী ও রূপবতী ছিলেন, ঠিক ঐরূপ একটী কন্যা পাইবার জন্য দেবগণ কত পরিশ্রম করিতেছেন কত দেশ বিদেশ ঘুরিতেছেন কিন্তু কোথাও ঐরূপ একটি কন্যা পাওয় যাইতেছে না। মহাদেব ত স্ত্রীবিয়োগের পর হইতে সংসার বাসনা ত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসী সাজিয়াছেন। তাঁহাকে আবার গার্হস্থ্যধর্ম্মে আনয়ন করা দেবগণের প্রধান উদ্দেশ্য হইলেও, তাঁহারা সাহস করিয়া মহাদেবের নিকট সে কথা বলিতে পারেন না। তাঁহারা জানেন যে মহাদেব ক্রুদ্ধ হইলে সংসারে প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন। সুতরাং তাঁহারা সকলে

মিলিয়া ঠিক করিলেন যে, একটী সুন্দরী কন্যার সহিত মহাদে
বিবাহ সংঘটিত হইলে, পশুপতি নিজেই সন্ন্যাস ত্যাগ করি
পুনবায় গৃহস্থ হইবেন। এমন সময় এক দিন নারদ মুনি আ
সংবাদ দিলেন যে, শিবের উপযুক্ত পাত্রী এত দিনে পাও
গিয়াছে। পর্ব্বতরাজ হিমালয়ের কন্যা পার্ব্বতীর ন্যায় গুণব
ও রূপবতী রমণী স্বর্গে, মর্ত্তে, কোথাও আর নাই। ত
ইহাব সহিতই মহাদেবেব বিবাহ দিতে হইবে। মহর্ষিব
শুনিয়া দেবগণ খুব আনন্দিত হইলেন। কিন্তু তাঁ
মধ্যে কেহই সাহস করিয়া শিবের নিকট বিবাহের প্রস্তাব করি
সম্মত হইলেন না।

(২৪)

सतीके देहत्यागके बादसे ही देवगण महादेवके लिये
उपयुक्त पात्रीकी खोज करते हैं। सती जैसी गुणवती और
वती थीं, ठीक इसी तरहकी एक कन्या पानेके लिये देव
गण कितना परिश्रम करते हैं, कितने देश विदेशमें घू
हैं, परन्तु कहीं भी ऐसी एक कन्या नहीं पाई जाती
महादेव तो स्त्रीवियोगके बादसे संसारवासनाको त्याग क
संन्यासी बने हैं। उनको फिर गार्हस्थ्यधर्ममें लाना देव
ओंका प्रधान उद्देश्य होनेपर भी वे साहस करके महादे
पास यह बात कह नहीं सकते। वे जानते हैं कि महा
क्रुद्ध होनेपर संसारमें प्रलय मचा दे सकते हैं। इस
उन सभोंने मिलकर ठीक किया कि एक सुन्दरी क

साथ महादेवका विवाह होजानेसे पशुपति स्वयं ही संन्यास छोड़कर फिर गृहस्थ होंगे। ऐसे ही समय एक दिन नारद मुनिने आकर समाचार दिया कि शिवको उपयुक्त पात्री इतने दिनोंमें पाई गई है। पर्वतराज हिमालयकी कन्या पार्वतीकी भाँति गुणवती और रूपवती रमणी स्वर्गमें, मर्त्त्यमें कहीं भी और नहीं है। इसलिये इसके साथ ही महादेवका विवाह करना होगा। महर्षि की बात सुनकर देवगण खूब आनन्दित हुए, परन्तु उनमेंसे कोई भी साहस करके शिवके पास विवाहका प्रस्ताव करनेमें सम्मत न हुए।

नोट—"पार्वती" नामकी बड़ी ही मनोहारिणी पुस्तिका भी छपकर तय्यार हो गई है। मूल्य ।)॥